एक बीनणी दो बीन

(अुपन्यास)

लेखक :
श्रीलाल न० जोशी

प्रकाशक :
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

प्रकाशक :
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

प्रकाशकीय

राजस्थानी गद्य लिखारां मे श्री श्रीलाल न० जोशी री ओळखाण करावणी जरूरी लागै कोनी, कारण न्यारी-न्यारी विधावां मे उणां री अनेक पोथ्यां छप चूकी है जिणां रो साहित्य-ससार मे मोकळो आदर हुयो है ।

प्रस्तुत पोथी-एक बीनणी दो बीन–मे जोशीजी आंग्ल महाकवि टैनीसन री अमर कृति 'ईनक आरडन' री कथा नै फैलाव देयर राजस्थानी पाठकां सारू प्रस्तुत करी है जिणसूं मालम पड़ै कै मिनख री प्रकृति मे देस-काळ री सींवां बाधक बण सकै कोनी । जिको चित्रण आज सूं दो सौ बरसां पैलो रो टैनीसन 'ईनक आरडन' में विदेसी धरती रै मिनखां रो कर्‌यो है, बो दो सईका बीत्यां पछै भी भारत रो भोम रै मानवियां रो सो लागै ।

भरोसो है राजस्थानी पाठक इण नै कोड सूं पढसी अर आ पोथी राजस्थानी पाठकां सूं सनेव अर आदर पासी ।

मुरलीधर व्यास
सभापति
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

घर विध री

विद्यार्थी-जीवरण मे अंग्रेज महाकवि लॉर्ड टेनीसन री अमर कृति–ईनक आरडन-पढ़रण रो मौको मिल्यो। 'ईनक आरडन' 911 ओळ्यां री एक लांबी कविता है, जिकी टेनीसन री सरवश्रेस्ठ रचनावां में आंकीजै। इरण कविता री सरळता अर इरण री रोचक कथा रो म्हारै माथै इसो जादूई असर हुयो कै म्हैं पद्यानुवाद कररणो सरू कर दियो अर दो तिहाई भाग रो अनुवाद कर भी लियो। बाकी एक तिहाई खातर अठीनै-बठीनै आसंगो भी लायो, पण काम पार पड़यो कोनी।

फेर विचार आयो कै इनक आरडन री कथा नै जे गद्यबद्ध करनै राजस्थानी पढारां सामी लाईजै, तो घणो ठीक रैसी। इरण निजरियै सू 'अेक बीनणी दो बीन' नांव सूं ईनक आरडन री फैलाव राजस्थानी पढारां आगै मेलरण री चेस्टा करीजी है।

म्हारो सुभाव इरण रचना पासी कदू हुयो, आ लिखरण सूं पैली कवि बाबत राजस्थानी पाठकां नै टूकं में जारणकारी देवरणो चाऊं हूं जद्यी अंग्रेजी पाठकां खातर टेनीसन अरणजाण्यो कोनी।

6 अगस्त सन् 1809 नै अॅल्फ्रेड टेनीसन रो जलम लिंकनशायर रै एक गांव सोमर्सबी में हुयो। 1828 मे महाकवि ट्रिनिटी कालेज कैम्ब्रिज में भरती हुया अठै वां विश्वविद्यालय रै कुलपति सूं 'टिम्बकटू' कविता माथै सोनै रो तुकमो पायो। 1830 में उणां री कवितावां रो पैलो संग्रह छप्यो अर 1832 में दूजो संग्रह, अर दस बरसां पछै तीजो संग्रह। पण उणां री खास रचनावां हाल बाकी ही अर इण खास रचनावां मांय सूं एक ही "ईनक आरडन" जिकी सन् 1864 में छपी। सन् 1850 में महाकवि वर्ड्सवर्थ रो सुरगवास हुयो उणां री जगां लॉर्ड टेनीसन राज-कवि रै पद सूं सुसोभित हुया। 6 अक्टूबर 1892 में लॉर्ड टेनीसन रो सुरगवास हुयो अर वेस्टमिन्स्टर ऐबे मे महाकवि ब्राउनिंग री समाधी रै नडारै इणां नै समाधिस्थ करया।

अंग्रेजी में एक कैवत है—No woman is Chaste—कोई लुगाई सायंती कोनी। जिण देस री इसी भावना है कै बठै सगळी लुगायां आचरण-हीणी है, बठै ईनक आरडन कविता में ऐनी जिसी लुगाई रो चरित्र चित्रै जिकी भारतीय नर नैं न्याळण सारू कुल-वधवा है। इण कविता रो सगळो वातावरण धार्मिक भावनावां सूं इत्तो ओतप्रोत है कै पाठक नैं एकाएक विस्वास करण में कठणाई पड़ै कै ओ चित्राम पाछलै देसा रो है ना भारत रो। 1864 में छप्योड़ी इण कविता रै सबंध में कवि बतावै कै आ कथा सौ बरस पैली री है। इण तरै आज सूं लगभग दो सौ बरस पैलां रो चित्राम इण में आयोड़ो है।

कथा री इण पाठकां नैं थोड़ी मार मारै, पण जे आ बात ध्यान में रैवै कै दो सौ बरसां पैली समदर रै किनारै बस्योड़ै एक गांवड़ियै रो चित्राम इण में कोरयो है, तो पाठकां री सिकायत आपेई मिट जासी, कारण गांवां रो जीवण आपो आप सूं नईं चालै, पर दो गड़बां पैली अठ विग्यान प्रगतिया ई करतो हो, गहरी जीवण किसी खास बदड़ी ही ?

इण कथा रो नायक ईनक आरडन गांव रै एक मांभी रो छावड़ो है अर उण री धरमभीरुता रा जिको चित्राम टेनीसन खांच्यो है, भगवान में उण रो जिको अटूट भरोसो दरसायो है, उणनैं देखतां इयां लागै कै औ आदमी तो भारत रै किणी गांव रो हुवणो चाईजै। पण चूंकि पत्रकायत ई ईनक भारत रो वासी कोनी, तो इण सूं भ्रा मालम पड़ै कै भगवान में भरोसो राखणिया लोग खाली भारत में ई नईं भारत सूं बारै, अंग्रेजां रै मुलक में भी बसै। इणी तरै अंधविस्वासां नैं देखतां फेर पढ़ारां रै मन में सका उठ सकै कै इसा अंधविस्वास अंग्रेजां में संभव कोनी; पण पाठक जे म्हारो नईं, तो टेनीसन रो जरूर भरोसो करै कै बठै भी लोग अंधविस्वासां रा सिकार रैया है। (अर आज भी है।)

इण कथा में जिको एक-दूजै खातर उत्सर्ग री भावना है, प्रतिद्वन्द्वी खातर भी जिको जान लड़ावण री भावना है, वा तो पाठकां रो हिरदो जीतयां बिना रैवै कोनी।

ईनक आरडन री आ विसेसतावां अर राजस्थानी में विदेसी साहित्य-कथा नैं लावण रै ख्याल सूं 'एक बीनणी दो बीन' रो राजस्थानी में जलम हुयो अर आ पोथी आपरै हाथ में आई।

जठै-कठै ई आपनैं पोथी री कोई थळ दाय आवै, आप इण में टेनीसन री चिहताई रो प्रभाव समझोला; पण जे आपनैं पोथी पढ़तां कठै ई नाक में सळ

घालण री नौबत आयगी, तो इण में राजस्थानी लिखार रो ई दोस है, कारण टेनीसन री आ कृति तो आखं जगत में घणो नांव पायोड़ी है अर टेनीसन, जिण रो अंग्रेजी कवियां मे सगळा सूं घणा पढार है, उण री सागोपाग रचनावां मे आ रचना है।

अन्त मे हू राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर सारू आभार दरसावणो म्हारो फरज समझूं जिण री तरफ सूं आ पोथी छपर आपरै हाथ में आई है।

समाप्ति सूं पैली श्रद्धेय गुरुजी स्व० शिव काळी सरकार रो स्मरण जरूर करणो चाऊं जिणा रै श्रीचरणां मे बैठ-बैठ मनै इण ग्रंथ रै अध्ययन रो मोको मिल्यो अर आज हू इण नै विस्तृत रूप में राजस्थानी पाठकां आगै राख सक्यो।

श्रीलाल न० जोशी

अनुक्रम

आदरणीय गुरूजी
स्व० शिवकाळी सरकार
सूं पायोडी
महाकवि टेनीसन री चीज
उणां नें ई भेट

धीलाल न० जोशी

एक बीनणी दो बीन

टावरां री रमत

"ईनक, तनै सरम आवणी चाईजै।"

"कांई बात री ?"

"कांई बात री ? याद कर, अबार ई भूलग्यो ?"

"मनै याद करण री जरूरत कोनी। तूं बैठो-बैठो याद करबो कर।"

"जद आपां घंनी साथै पैनगोत हुग गुफा में आया तो था तैं कही कै अेक दिन मूं बीन बणसी, अर अेक दिन हूं।" कंवर फिलिप आपरै डावैं हाथ सूं ईनक रो जीवणो हाथो हिलायो।

"हाथ लगावण रो काम कोनी, मूंडै सूं बात कर।" कंवर ईनक घंनी नै आपरै और भी नैडी सिरकाय ली।

"अरे ईनक, अकडाई आछी कोनी। जे घणो अकडसी, तो हाथ कांई, थारै जूता पड़सी।" कंवर फिलिप ईनक रै सामो भांवणो कै दो जूतां री धमकी सूं डरियोक नईं।

ईनक घंनी रै गळबाथड़ी घाल्यां बैठो रैयो पर बीं फिलिप नै उथळो नईं दियो। ईनक री लारवाई सूं फिलिप रै काळजै में लाय लागगी ही। बीं आप रो जूतो उतार्यो अर हाथ में लेयर ऊंचो कर्यो।

घंनी रो मूंडो उतरग्यो। ईनक बोल्यो "घंनी, तूं डर ना। बकण दे फिलिप नै।"

"ईनक, तूं मनाढर को बोलै नी ? जे अेक दिरगो, तो तीन दिन पाणी को मांगसी नी।" कंवर फिलिप आपरी छाती नै फुलायर तकड़ो दीसण री कोसीस करी।

"जूतै री बेर थारै बाप रै, बो थारा जूता गामी। हूं तो अेक री ढ्हीन थारी बेटू। म्हारै खेरलियो मई पलनी साथै राम्बो ई कोनी।" कंवर ईनक आपरी निजर सूं फिलिप सामो भाळ्यो, फेर पाछो घंनी री मूंडा पकडर घंनी आपनै मुळकण लागग्यो।

"अरे कंगाल रा पूत, म्हारै बाप रो नांव लेवै सूं । म्हारो बाप फळवाड़ी रो मालक, हजारूं रिपिया महीनै-मासै, तूं ग्रेक बापड़ै मोची रो जायो । थारी-म्हारी हैसियत में धरती-आकास रो आंतरो । थारै जैड़ै टाबर सूं थारै सागै रमूं हूं । जे मूं सामायती करूं, तो काम सूं सूं थनै मत धाप । थांनी म्हारी बीनती है । म्हे दोनूं रमता । मीच कठै ई रो !"

बाप री निन्दा सुणतां ईनक निजर में राढ़ धारली, सुरख्यां सूजाई, अर थांनी सूं थोड़ो मळगो सिरकग्यो । ईनक रा बदळ्या तेवरा देखर फिलिप री गरमी उतरण लागगी । बो जूते वाळै हाथ नै हेटो कर लियो, पण मान रो डर मुळकण लागर कैयो—'कमीण रो जायो ।"

ईनक बोल्यो—"कमीण थारो बाप ! बो कळबड़ी सूं दिन-रात माथो फोड़ै जिको । लोगां में मोटा तोलै, अर थारै सूं थोड़ो हुयोड़ो, रात-दिन भूख हुवै ज्यूं रैवै । अबकै जे म्हारै मरयोड़ै बाप रो नांव लियो, तो म्हारो मुक्को थारै पुटपड़ां सूं बातां करैलो ।"

"अरे नालायक, म्हैं जूतो हेटो कर लियो, जद तूं मुंहां देखाऊण लागग्यो ? दवाणी में नाक डुबोयर मर तूं ईनकड़ा ।" कैयर फिलिप आपो पांवड़ो लारै सिरकग्यो, पण ईनक नै ठा नईं पाली । कारण फिलिप जाणतो कै ईनक सबळो हो ।

फिलिप री बात रो उथळो देवतो ईनक बोल्यो, "स्याळ री मौत आवै जद बो गांव में आया करै । तनै कुमत सूझी है, तूं म्हारै सूं बायेड़ो करै । तूं मनै 'ईनकड़ो' कैवै ! तनै ठा कोनी म्हारो नांव 'ईनक आरडन' है । तूं है फिलिपियो ।"

"अरे मोची रा छोरा, थारी मौत आयगी । म्हारो नाव 'फिलिप रे', अर तूं मनै 'फिलिपियो' कैवै । आज तईं इसे हळकै नांव मनै कैण ई को बतळायो नी । जे अबकै 'फिलिपियो' कैयो, तो पछै देख मजा ।" कैयर फिलिप आपरो जूतो फेर हाथ में ऊंचो उठायो ।

ईनक भी आपरो पग संभाळ्यो, पण अनाथ रै पग में पगरखी कठै ? बो आंपरी गरीबी मार्थ लजखाणो पड़र रैयग्यो ।

ईनक री गरीबी रो फिलिप फायदो उठायो—"पग माय सूं जूती काढण लाग्यो है । थारै बाप ही कदेई जूती पैरी ही ?"

ईनक नै रीस आयगी । बो ग्रैनी रै पसवाड़ै सूं उठ्यो, अर फिलिप रै कमीज री कालर झाली ।

"फिलिप बोल्यो—"हां, हां, फाड़दे कमीज । फेर थारी ठा पड़सी । म्हारै कनै सूं थारी लुगदी नईं बणवाऊं, तो म्हारो नांव फिलिप रे कोनी ।"

फिलिप आ कोरी धमकी देखाळी ही, मन मे तो वो जाणतो हो कै ग्रे बाता बापूजी आगै कैवण री कोनी। ईनक नै भी ठा ही कै सिकायत बापूजी तई पूगै कोनी। पण फेर भी बी कमीज फाड़नो ठीक नई समझ्यो, कारण इण मे सिकायत नई करणै पर भी जाच-पड़ताल हुया भेद खुलण री सभावना लुकयोड़ी ही। इण कारण फिलिप री कालर छोड़र ईनक बीरा दोनू लाबा मचकाया—"नालायक, फेर तूं म्हारै बाप रा नांव लेवैं।"

फिलिप सामो हाथ नई उठायो—"और मचका म्हारा लाधा। करलै, थारै जचै ज्यू करलै। पैली मंनी नै पूछ, कै वा थारी बीनणी है क म्हारी। माडाणी धणी वणै!" कैवतै-कैवतै फिलिप रै सुर में कातरता आयगी अर नैणा मे नमी। पण वी आस्था काठी फाड़ी पर चैरै नै विकराळ वणायर कातरता अर नमी नै लुकावण री कोसीस करी।

फिलिप री इण दसा माथै मंनी रो हियो पसीजग्यो। दोना नै आमा-सामा भूमा देखर मंनी उठी। वा बोली—"अरे, थे म्हारै खातर लड़ो? ईनक, म्हारै खातर ना लड़; फिलिप, म्हारै खातर मा लड़। थे दोनू स्याणा हो। हू थारी दोना री बीनणी हूं।" इया कैयर मंनी दोना रै लाधा माथै आपरा बाजू मेल दिया, अर दोना रै चैरा माथै सूं रीस रवाना हुयगी अर वां आपस में अेक बीजै रो बुक्को लियो।

ईनक बोल्यो—"फिलिप, आज तो मंनी म्हारी बीनणी है, काल थारी बणसी।"

फिलिप इत्तै में राजी हुयर बोल्यो—"मजूर है।" पण फेर बीरै चैरै रा भाव पलटग्या—"देख ईनक, काल फेर तूं काल माथै नई सिरकाय देवै। जद मंनी आपा री दोना री है, ज्यूं कै आ आपरै मूंडै सूं स्वीकारै, फेर अेकलो धणियाप लगावणो खुदगरजी है।"

"थारी बात सोळै आना ठीक है। हू चाऊ कै आपा नै बारी-बारी बीन बणनो चाईजै, पण जद मंनी री सोवणी सूरत देखूं तो म्हारो मन लोभ में पड़ जावै।" कैयर ईनक मंनी रो हाथ झालतो बोल्यो—"मंनी, रसोई झटपट बणा, मनै काम जावणो है।" मंनी बोली, "आज तो थे दोनू आपस मे राड़ मचावण लागग्या, साग-सब्जी तो कोईनाजो कोनी, माड मे बिस्कुट पड्या है. अर काल री डबलरोटी है जिकी बिना मावण खावणी पड़सी। घर मे चीज-वस्त बिसावण रो तो नांव ई लेवै कोनी, अर आपस मे माथा फोड़ै।" मंनी कूडेई-कूडेई पुरसर दोना रै आगे प्लेटा मेल दी। ईनक जीमण लागग्यो, पण फिलिप हाल गुमसुम हो। मंनी बोली—"फिलिप, तू जीमै कोनी? जीम फिलिप, म्हारै हाथ री पुरस्योड़ी रसोई तनै भावै कोनी?"

"अरे कंगाल रा पूत, म्हारै बाप रो नांव लेवै तूं । म्हारो बाप कळचक्की रो मालक, हजारूं रुपिया खरचै-खावै. तूं अेक बापड़ै मांभी रो जायो । थारी-म्हारी हैसियत मे अकास-पताळ रो आंतरो । थारै माथै दया-भाव सूं थारै सागै रमूं हूं । जे तूं नालायकी करै, तो काल सूं तूं अठै मत आए । अैंनी म्हारी बीनणी है । म्हे दोनूं रमसां । नीच कठै ई रो !"

बाप री निन्दा सुण्यां ईनक लिलाड़ में सळ घाल्या, फुरण्यां फूलाई, अर अैंनी सूं थोड़ो आळगो सिरकग्यो । ईनक रा वरण फुरता देखर फिलिप री गरमी उतरण लागगी । वो जूतै आळै हाथ नै हेटो कर लियो, पण आप रो डर लुकावण खातर कैयो—'कमीण रो जायो ।"

ईनक बोल्यो—"कमीण थारो बाप ! वो कळचक्की सूं दिन-रात आपो फोड़ै जिको । तोलण में खोटा तोलै, अर आटै सूं धोळो हुयोड़ो, रात-दिन भूत हुवै ज्यूं रैवै । अबकै जे म्हारै मर्‌योड़ै बाप रो नांव लियो, तो म्हारो मुक्को थारै पुटपड़ा सूं बाता करैलो ।"

"अरे नालायक, म्हैं जूतो हेटो कर लियो, जद तूं मुक्को देखाळण लागग्यो ? ढकणी मे नाक डुबोयर मर तूं ईनकड़ा ।" कैयर फिलिप आधो पांवड़ो लारै सिरकग्यो, पण ईनक नैं ठा नईं घाली । कारण फिलिप जाणतो कै ईनक सबळो हो ।

फिलिप री बात रो उथळो देवतो ईनक बोल्यो, "स्याळ री मौत आवै जद वो गाव में जाया करै । तनै कुमत सूझी है, तूं म्हारै सूं बाथेड़ो करै । तूं मनै 'ईनकड़ो' कैवै ! तनै ठा कोनी म्हारो नांव 'ईनक आरडन' है । तूं है फिलिपियो ।"

"अरे मांभी रा छोरा, थारी मौत आयगी । म्हारो नांव 'फिलिप रै', अर तूं मनै 'फिलिपियो' कैवै । आज तईं इसे हळकै नांव मनै कंण ई को बतळायो नी । जे अबकै 'फिलिपियो' कैयो, तो पछै देख मजा ।" कैयर फिलिप आपरो जूतो फेर हाथ में ऊंचो उठायो ।

ईनक भी आपरो पग संभाळ्यो, पण अनाथ रै पग में पगरखी कठै ? वो आपरी गरीबी माथै लजखाणो पड़र रैग्यो ।

ईनक री गरीबी रो फिलिप फायदो उठायो—"पग मांय सूं जूती काढण लाग्यो है । थारै बाप ही कदेई जूती पैरी ही ?"

ईनक नै रीस आयगी । वो अैंनी रै धमकाड़ै सूं उद्यो, अर फिलिप रै कमीज री कालर भाली ।

फिलिप बोल्यो—"हां, हां, फाड़दे कमीज । फेर थारी ठा पड़ली । म्हारै बापूजी नै मूं थारी सुगरी नईं बतलाऊं, तो म्हारो नांव फिलिप रै कोनी ।"

फिलिप आ कोरी धमकी देखाळी ही, मन में तो वो जाणतो हो कै श्रे वातां वापूजी आगै कैवण री कोनी। ईनक नै भी ठा ही कै सिकायत वापूजी तई पूगे कोनी। पण फेर भी बी कमीज फाड़नो ठीक नई समझ्यो, कारण इण में सिकायत नई करणै पर भी जाच-पड़ताल हुया भेद खुलण री संभावना लुक्योड़ो ही। इण कारण फिलिप री कालर छोड़र ईनक बीरा दोनूं खाधा मचकाया— "नालायक, फेर तूं म्हारै बाप रो नाव लेवै।"

फिलिप सामो हाथ नई उठायो—"श्रौर मचका म्हारा खाधा। करलै, थारै जचै ज्यूं करलै। पैली श्रेनी नै पूछ, कै वा थारी बीनणी हैक म्हारी। माडाणी घणी बणै!" कंवते-कंवते फिलिप रै सुर में कातरता श्रायगी श्रर नैणां में नमी। पण बी श्रांख्या काठी फाड़ी श्रर चैरै नै विकराळ बणायर कातरता श्रर नमी नै लुकावण री कोसीस करी।

फिलिप री इण दसा माथै श्रेनी रो हियो पसीजग्यो। दोना नै श्रामा-सामा श्रूमा देखर श्रेनी उठी। वा बोली—"श्ररे, थे म्हारै खातर लड़ो? ईनक, म्हारै खातर ना लड़; फिलिप, म्हारै खातर ना लड़। थे दोनूं स्याणा हो। हूं थारी दोना री बीनणी हूं।" इयां कंयर श्रेनी दोना रै खाधा माथै श्रापरा बाजू मेल दिया, श्रर दोना रै चैरां माथै सूं रीस रवाना हुयगी श्रर वां श्रापस में श्रेक बीजै रो बुक्को लियो।

ईनक बोल्यो—"फिलिप, श्राज तो श्रेनी म्हारी बीनणी है, काल थारी बणसी।"

फिलिप इतै में राजी हुयर बोल्यो—"मंजूर है।" पण फेर बीरै चैरै रा भाव पलटग्या—"देख ईनक, काल फेर तूं काल माथै नई सिरकाय देवै। जद श्रेनी श्रापा री दोना री है, ज्यूं कै श्रा श्रापरै मूंडै सूं स्वीकारै, फेर श्रेकलो धणियाप लगावणो खुदगरजी है।"

"थारी वात सोळै श्राना ठीक है। हूं चाऊं कै श्रापा नै बारी-बारी बीन बणनो चाईजै, पण जद श्रेनी री सोवणी सूरत देखूं तो म्हारो मन लोभ में पड़ जावै।" कंयर ईनक श्रेनी रो हाथ झालतो बोल्यो—"श्रेनी, रसोई झटपट बणा, मनै काम जावणो है।" श्रेनी बोली, "श्राज तो थे दोनूं श्रापस में राड़ मचावण लागग्या, साग-सब्जी तो कोईनायो कोनी, मांड में बिस्कुट पड़्या है, श्रर काल री डबलरोटी है जिकी विना मालण खावणी पड़सी। पर मैं चीज-वस्त जिमावण रो तो नांव ई लेवै कोनी, श्रर श्रापस में माथा फोड़ै।" श्रेनी कूड़ेई-कूड़ेई पुरसर दोनां रै श्रागै प्लेटां मेल दी। ईनक जीमण लागग्यो, पण फिलिप श्रान गुमसुम हो। श्रेनी बोली—"फिलिप, तूं जीमै कोनी? जीम फिलिप, म्हारै हाथ री पुरस्योड़ी रसोई तनै भावै कोनी?"

फिलिप चुप।

"ठीक है, मा जीम। मराई गो मारै सूं ईनक करी ही, म्हारै सूं रीसाणो क्यूं हुयो?" कैयर अैनी फिलिप री ठोडी भाली, अर बीरै दरद-भर्‌या नैणां रै सामी भांकी।

ईनक बोल्यो—"भाई फिलिप, तनै थारी भाभी जीमावै, अर तूं जीमै कोनी!

जद फिलिप बोल्यो कोनी तो अैनी कंयो—"थे, थारा दोनूं सागै जीमो। बोल जीमसी क नईं? जे तू नईं जीमसी, तो हूं भी जीमूं कोनी। मनै भूखी रासणी चावै तो ना जीम।"

अैनी रै सत्याग्रह आगै फिलिप ढळग्यो, अर बो अैनी सागै जीमण लागग्यो। मन मे राजी भी हुयो कै अैनी आज बीनणी ईनक री हुई तो काई हुयो बीरै सागै तो जीमी कोनी। ईनक माझी रो छोरो है, बीरै सागै जीमण मे अैनी नै पढ़ायत सूग आवती हुवैली। हूं, मालदार, म्हारो बाप कळवड़ी रो मालक।

पण फिलिप पाछो विचार कर्‌यो कै अै बाता तो म्हैं खाली मन नै धारस देवण खातर करी है। असली बात तो आ है कै म्हारो रूप, म्हारो कुळ, म्हारा गाभा, म्हारा पीसा, कोई अठै आडा आवै कोनी। ईनक रै पग मे पगरखी कोनी, पूरिया बोदा-पुराणा, रैवण खातर घर रो टापरियो कोनी, न मा न कोई बाप, पण फेर भी म्हारी बारी कदेई-सीक आवै अर बो अेकलो सात-सात दिना तईं बीन बणे, अर हू ईं रै मूंडै सामो भाकू। ई रो कारण ओ है कै ईनक सबळो है, अर हूं निमळो हूं। हू भी जे ईनक दाईं डील मे लूंठो हुवतो, तो किसो ईनक नैं नैड़ो अड़ण देवतो। इण लारलै विचार रै सागै ई फिलिप री रीस उतरगी।

संमदर रै कनारै अेक छोटो-सोक बन्दरगाह, जिण रै पसवाड़ै अेक छोटो-सोक गाव। उणी गांव रा अै तीनूं टाबर आज सूं मैंकड़ू बरसा पैली समदर रै कनारै रमण नैं आवता। छोळा नैं उठती, आवती अर बिलायीजती देखनैं किलकार्‌या मारता। आली माटी रा घर-घोलिया बणावता जिका छोळ सागै लोर हुजावता। बै घरे जावती बगत भी नित रा घर-घोलिया बणायर जावता, पण दूजै दिन पाछा आवता जित्तै नाव-निशाण ई लाधतो कोनी।

संमदर रै पसवाड़ै अेक सांकड़ी गुफा में अै तीनूं टाबर बीन-बीनणी बण्या करता अर पूरो घरबार माडर बात करै ज्यूं करता।

इण तरै बीन-बीनणी बणता केई बरस बीतग्या। बीनणी अेक, अर बीन दो। कदेई बारी-बारी सू, बिना गडबड़ काम चालतो, तो कदेई हाथा-पाई री नौबत आय जावती, अर केई बरस बीतग्या।

आखर टाबरपणै रो आफरको बीतग्यो, अर जवानी रै सूरज आपरी लाली काढी।

उण माजी नै पीसा पकड़ाय देवतो । माजी दोना रै सामी भांकती—फिलिप अंनी नै कित्तो चावै, कित्ती कदर करै ! अर इण रै सागै माजी नै आपरा वै दिन याद आय जावता जद उण री भी इण तरै, नईं, इण सूं ई बेसी कदर हुया करती, अर वा आंख उठायर केई नै सावळ देखण री किरपा ई नईं करती । पण आज ? मोल्या गयां आज कुण पूछै, अर वा साग-सब्जी वेचर आप रो पेट पाळै ।

फिलिप रो बाप अबै बूढो हुयग्यो, अर वीं कळचक्की रो धंधो फिलिप नै सूंप दियो । फिलिप जिसै मोजी जीव ने कळचक्की में भून बण्योड़ो रैवणो ना तो कबूल हो अर ना आछो लागतो, पण रुजगार चालू तो राखणो ई पड़ै, भलेई काम दाय आवो चावै ना आवो ।

सरू-सरू में फिलिप नै ओ धंधो मोकळो अखर्‌यो, पण अेकाअेक इण में भी रस रो संचार हुयग्यो । अंनी री मा माँदी पड़गी, अर कळचक्की में पीसणो देवण रो काम अबै अंनी रै पांती आयो । फिलिप री चक्की में पीसा लेयर आवतै अेक बार तो अंनी नै लाज आई, पण काईं करती, उण रै सिवाय नैड़-नैड़ास में कोई दूजी चक्की भी तो ही कोनी ।

सिझ्या री टैम : अंनी पींपो लेयर आई । अंनी सरमाई, माथै ऊपर पींपै रै कारण; फिलिप सरमायो, आटै सूं भून हुयोड़ो हुवण रै कारण । पण खैर, फिलिप झट आगनै अंनी रो पींपो उतरायो अर वो अंनी रो हाफती छाती सामो रम-लीन हुयर देखतो रैयो ।

"पींपो तोल" अंनी बोली ।

"तोलणो काईं है ? आटो पीसयोड़ो त्यार पड़्यो है । गऊं ऊंधाय दे, अर आटै सूं थारो पींपो भरलै ।" कैयर फिलिप वीं नै इस्टूल माथै बैठण रो इसारो करयो—"इत्ती काईं उतावळ है, हाल तो साम ई पुग्योड़ी है ।"

"आ बात तो ठीक है ।" इयां कैयर अंनी इस्टूल माथै बैठण लागी, अर फिलिप झट इस्टूल नै आपरै हाथ सूं पूंछर आटै री तै साफ करी ।

कुपाळी बाळपणै री बातां नै पोसार नै होरा रा पैरा इण तरै उतराया जाणै कोई जिनस बगती हुवै । बीच-बीच में जद दूजा ग्राहक आवता तो फिलिप वांनै झट निपटायर पाछो अेंजल री सेवा करतो, पण ग्राहक भी तो इंसान हा, अर इयांनां री बातरा, हेम-बातरा, वे बातें जिनकी हो । फिलिप-अंनी में, जवान हुयां पछै बयला में, हेत प्रकासण रो कोई [illegible] नईं आयो, पण [illegible] [illegible] [illegible] आपरी आंख्यां सूं इत्ती बात भी छानी किया रैती ! इण कारण आटो अेंजल नै [illegible] [illegible] देवण नै आवण [illegible] लाग, फिलिप रै आवतै पर भी,

थकी ही गवां रै बरावर ग्राटै री ऊंचाई राख्यां सूं तोल में कम पड़ै। पीपो काठो भर।"

ग्रैनी भर लियो। फिलिप सेर सवा सेर ग्राटो ऊपर सूं घालनै पीपो ठसाठस, खूंद-खूंदर भर दियो।

ग्रैनी बोली—"फिलिप ग्राटो वेसी है। इयां थारी चक्की कित्ताक दिन चालसी? घर मे घाटो खाया कियां पार पड़सी?"

फिलिप काईं कैंवण लाग्यो, का कोई पीरो लेयर ग्रायग्यो। झट पीपो तोलर फिलिप बींनै रवानै कर्‌यो। फेर कैयो—"ग्रैनी! थारै पीपै मे जे पींव भर ग्राटो वेसी भी ग्राय जावै, तो इत्तै मे म्हारी हथाळ्‌या टिकै कोनी! जे साची पूछै तो मनै ग्राज इत्ती खुसी हुई है कै म्हारो काळजो नव-नव ताळ कूदै है। पर देख ग्रैनी, म्हारी वात सुण, ग्रागै सारू भी·ग्राटो पीसावणो हुवै तो तूं ई माया कर।"

ग्रैनी बोली कोनी।

"क्यूं सुणीजै, ग्रैनी?"

"ग्ररे सुणीजै बावा, सुणीजै। लै बोल, पीसा कित्ता हुया?"

"पीसा? काय रा?"

"पीसाई रा।"

"काईं पीसाई रा?"

"म्हारा गऊं।"

"थारा गऊं तो हाल ग्रणपीसिया ई पड़्या है। मुफत रा पीसा कियां लेऊं, बोल ग्रैनी।" कैयर फिलिप प्रेम री निजर सूं ग्रैनी सामो भाळ्यो।

ग्रैनी पींपो ऊंचण लागी। फिलिप कैयो—"ग्रैनी, रात पड़गी है, ग्रेकली कठै जासी? लै, चाल, हूं पीपो पूंचाय दूं।"

"नई फिलिप, तनै फोड़ा को घालूं नी।" कैयर ग्रैनी पींपो ग्रापेई ऊंच लियो, कारण रात री वेळा हुवता थका भी बींनै फिलिप रै साथै ग्रापरी गळी में जावण बिच्चै ग्रेकलो जावणो बेहतर लाग्यो। गळी रा लोग इसा निमाणा है कै बै संचळा रैवै ई कोनी। विना बात ई बै बातां बणावता रैवै, ग्रिको बात हुयां पछै तो पूछणो ई काईं? थागळो टेकण जित्ती जगां लाध्यां पछै तो बै पग पसारता माळ को लगावै नी।

[illegible]

जद गुरा में घर बगावता, तो ईनक रिनै री मदताई सूं थीगाणे बीत बगार बैठ जावतो, पण अबै ग्रंनी रै घर बनै बर निकळती बेळा भी विचार भाबै कं लोग काई समझसी। पण ईनक रै मन में ग्रंनी खातर प्रेम रो प्रवाह इत्तो तगड़ो हो, कं वो धारणं आपनै काबू मे नई राख सक्यो, घर ग्रेक दिन जद ग्रंनी भीम-जूटर घर घाणं गावडो ग्रावती ही, ईनक उठै जाय पूग्यो। ग्रंनी मांय सूं पीढो लेग्यो घर ईनक नै बैठण खातर कयो। घणा दिनां सूं मिल्यो हो इण कारण ईनक नै डर हो कं ग्रंनी रम मिला-भीळ नई, पण ग्रंनी कयो—"ग्ररे ईनक तूं तो दीसै ई कोनी ! कठेई परदेस रैवण लागग्योक ग्रठै ई है। जबरो निरमोई हुयो।"

ग्रंनी री ग्रपणायत-भरी बात सूं ईनक घणो राजी हुयो। बोल्यो—"ग्रंनी परदेस तो को गयो नी, पण मन में संको ग्रायग्यो।"

ग्रंनी री मा रसोई रा बासण साफ करती ही। बी पूछ्यो—"ग्रंनी, कुण है ?"

ग्रंनी कयो—"मा, तूं जाणै कोनी। ईं रो नाव ईनक है, म्हे टाबरपणै में समदर रै कनारै घणा ई भेळा रम्योड़ा हा। ग्रबै बडो हुयग्यो इण सूं ग्रठै ग्रावतो ग्रो संकै, ग्रर समदर-कनारै हूं ग्राऊं कोनी।"

मा बोली—"ईनक, सकै री काई बात है बेटा, ग्राया कर ग्रठै।"

फेर मा मांय जायर गाभा धोवण लागगी। ग्रावाज ग्राई—"ग्ररे मोगरी कठै गई बेटी ? बाळटी में थोड़ो पाणी तो घाल।"

ग्रंनी बाळटी भरनै पाछी ग्रायगी ग्रर ईनक सूं बोली—"ग्रा ईनक, ग्रापां ढावड़ै में बारै बैठर दो मिट बातां करां। कित्ता महना सूं देख्यो है ग्राज, जाणै बरसां रा बरस बतीत हुयग्या हुवै ज्यूं लखावै।"

ईनक कयो—"तू बारै चाल, हूं ग्राऊं" ग्रर वो ग्रंनी री मा रै हाथ मांय सूं लेयर ग्राप कपड़ा धोवण लागग्यो। माजी खासा पाळ्यो, पण ईनक ध्यान नई दियो। दस-पन्दै मिट में सगळा गाभा धो-धोवायर तणी माथै सुकोय दिया।

मा बोली—"ईनक, थारै हाथ में तो फुरती घणी। म्हैं पचास बरस लेय लिया, पण थारै जिसो चगक-मगक टाबर ग्राज तई देख्यो कोनी। तूं मनै घणो ग्राछो लागै। ग्रठै ग्रावण में संकण री काम कोनी। थारै जचै जद ई ग्रायजाया कर।"

ईनक बारै गयो जित्तै तो म्रैनी दस हेला मार दिया। मा रै मूंडै सूं ईनक री खुलर बडाई सुणर म्रैनी रै हिरदै री कळी-कळी बिगसगी। बी ईनक वास्तै चाय बणाई ग्रर सामनै राखती म्रैनी बोली—"ले चाय पी। (फेर धीरै-सीक) टावरपणै में तो तनै कूड़ेई-कूड़ेई चाय पावती, पण आज साचेई पाऊं।"

मा आपरै प्यालै में मस्त ही, ग्रर म्रैनी री गुपताऊ बात री बीनै ठा नईं पड़ी।

जदपी म्रैनी ईनक रै हिरदै मे रात-दिन बसती पण बो मांभी रो वेटो सगळी बाता सूं दीन-हीन हो। जे कदास भाग जोर देवै, ग्रर म्रैनी जिसी रूपाळी छोरी ईनक सूं ब्याव रो हुकारो भर लेवै, तो कम-सू कम घर रो घर तो चाईजै छोटो-मोटो, कोम्रो-भूंडो, म्राळखो तो हुवणो चाईजै। घर बिना घरम्राळी नै राखै ई कठै ? भाडै रो घर जिको भाडे रो। पारको सो पारको। पारकै मौल सूं आपरी भूंपड़ी ई चोखी।

म्रैनी रै प्यार सूं प्रेरणा लेयनै ईनक ग्रेक वौपारी रै जाज माथै काम करण लागग्यो। ग्रेक गंवार छोरो, पण आपरी दिपटो मे इत्तो सावचान कै साल भर नोकरी करी जिकै मे कदेई ग्रेक मिट भी मौड़ो पूगण रो काम कोनी। ना कदेई हाथ माथै हाथ धर्‌यां बैठो रैयो। पण फेर भी जित्ता पीसा बीरा दूजा सगळिया कमावता, जिका कै दिन भर मे घटा-दो-घटा काम करता, वित्ता ई पीसा ईनक नै मिलता। साल भर में फालतू री ग्रेक कोडी भी खरची कोनी, ग्रर ईनक आपरी ग्रेक घरू नाव खरीद ली।

ईनक मजरी पूरी-सूरी लेवतो, पण दूसरै सेवटिया ज्यूं बो कम पीसा कैयर लारै सूं भगड़ो नईं करतो, इण कारण ईनक री पैठ चोखी जमगी, ग्रर बेधड़क हुयनै लोग उणरी नाव माथै ढूकता। इणरै सिवाय ईनक री काम-कुसळता भी सगळै विख्यात हुयगी। संमदर चावै ग्रामो-घूवगी छोळा भरतो हुवे, पण ईनक रो काळजो तिल भर भी नईं हिलै। वो आपरो काम निडर हुयनै करतो रैवै। तीन मौका तो इसा हुया कै सागर नै आपरै इण हिमताळू बेटै माथै रीस आयगी, ग्रर ईनक सायद ठेट संमदर रै पींदै पूंचग्यो हुवैलो। पण ईनक घबरायो कोनी, ग्रर फेर छोळा सागै रमत करण लागग्यो। इण जळ-परीक्षा सूं ईनक री काम-कुसळता मे जाणै सवा-सवा लाख रा तीन मोती जड़ीजग्या, ग्रर लोगा नै पक्को भरोसो हुयग्यो कै ईनक री नाव में जान-माल रो खतरो कोनी।

आपरी नाव मे ईनक मछल्या पकड़ण सारू जाळ, जेवड़ो, काटो भर छबड़ो तथा थोड़ो घोसण्योड़ो म्राटो भी राखतो। मौको देख-देखर म्राटै री गोळी संमदर में फैंकतो जावतो ग्रर इण तरै दिन भर मे केई छबड़्यां भर लेवतो।

जिको सकस ईनक रो ग्रायक हुयग्यो, बो दूजै ग्रादमी कनै ढूकण री नांव नईं लेवतो, इसी ईनक री सादगी ही ।

पण संमदर में पग धरयां पैली, जळ-देवता नै धोक देयर ईनक ग्रापरो नाव खोलतो । संमदर माथै पूगण ग्राळो सगळां सूं पैलो खेवटियो ईनक ई हुया करतो । सूरज ऊग्यां पैली घर सूं नीसर्‌योड़ो ईनक सूरज बिसूंज्यां पाछो बावड़तो, ग्रर ग्रापरी दिन भर री सफळ जात्रा ग्रर कमाई कारण वरुण देवता नै फेर धोक देवतो ।

इण तरै इक्कीस बरस पूरा करयां पैली ई ईनक रै जीवण री ग्रेक साध पूरीजगी—ग्रंनी खातर घर !

सांकड़ी गळी, जिकी कळचकळी काली चढ़ती ही, बीरै ग्राधीटै ईनक ग्रापरो छोटोमोक, साफ-सुथरो घर चिणायो । जद चिणाई सम्पूरण हुयगी, जोड़्यो, मूंट्या लागगी, तो सोवण रै कमरै मे ग्रेक पिलंग लायर बिछायो ग्रर सजायो । रसोई खातर नवा बासण बिसाया ग्रर फेर ग्रंनी रै घरे गयो ।

"ग्ररे ईनक रीसाणो हुयग्यो काईं ? कदेई ग्रावण रो ई काम कोनी ?" ईनक नै देखतै ई बारणै सूं बारै ग्रायर ग्रंनी बोली ।

रसोई मांय सूं ग्रंनी री मा भी बारै ग्राई । कैयो—"ग्रंनी देवं जिको घोळचो हूं भी देऊं ।"

ग्रंनी री मा घोळचो दियो जित्तै ग्रंनी धमकाळलै कमरै रो बारणो खोल दियो ग्रर मांचो ढाळ दियो ।

ईनक रै मूंडै माथै चमक, होट खुलै नईं, ग्रणदीठ रूप में हिरै, पण फेर भी मालम पड़ै कै ईनक काईं कैवणो चावै, पण बीसूं कंईंजै कोनी ।

ग्रंनी ईनक रो हाथ झालर कैयो "बैठ तो सरी, इत्ता दिनां सूं तो ग्रायो है ग्रर हाल ऊभो-रो-ऊभो ई है । क्यूं ऊभा पगां पाछो जावणो है काईं ?"

ईनक बैठग्यो ।

ग्रंनी मांय गई ग्रर दो कप चाय नै तीन प्यालां में घालर तीनां सागर सिराई ।

"ग्रटै ग्राऊं जणै म्हारो जीव इसो सोरो हुवै कै काईं बताऊं ।" कैयर ईनक ग्रंनी रै ढूळो रूप हेरै चूस मारदी ।

हाथ में उठायोड़ो कप पसवाड़ली तिपाई माथै मेलती म्रँनी बोली—"झूठ, सरासर झूठ। म्रठै म्रावै जद तूं दयां समझै कै थारा हीरा-पन्ना कोई तोड़ लेसी। कबूतर जाळ सूं डरै ज्यूं तूं म्रठै म्रावतो डरै।"

म्रँनी री मा बोली, "म्ररे ईनक, बता तो सरी बेटा, इत्ता दिन म्रायो क्यूं कोनी लाडो ?"

"म्रावण री तो सदेई सोचूं। म्रँनी सूं मिलण री म्रर थांरै दरसण री लालसा तो हरदम रैवै...."

"फेर कूड़ बोलै, फेर कूड़! म्ररे ईनक, थारी कूड़ बोलण री म्रादत हाल गई कोनी।"

'हाल' सबद रै मरम नै ईनक म्रर म्रँनी समझर च्यार म्रांख्यां करनै मुळक्या। म्रँनी री मा नै ठा नईं कै इण सबद रो गुफा म्राळै दिना सूं तालको हो। पण मा इण रो मरम जाणन री चेस्टा भी नईं करी।

फेर मास्टर इस्कूल रै छोरै नै धमकावै ज्यूं म्रँनी धमकावणी म्रवाज में बोली—"तो बता इत्ता दिन म्रायो क्यूं कोनी। ठीक बता।"

"इत्ता दिन कमठाणो चालतो हो। काल सम्पूरण हुयो है।" कंवर ईनक सोरप सूं छाती ऊंची करी।

"तो तूं म्रजकाल कमठाणै लागण लागग्यो! पैली तो म्हैं सुणी तैं घरू नाव लेयली म्रर थारो काम म्राछो चालण लागग्यो। खैर, कोई बात कोनी। काम करणो चाईजै भलेई किसो ई हुवो।" कंवर ईनक रै खातर वीरै चैरै माथै हमदरदी ब्यापगी।

"तूं समझी कोनी।" ईनक कैयो। "नाव सूं पीसा कमायर तो म्हैं घर चिणायो ई है।"

"हैं ईनक," कंवर म्रँनी मांचै सूं उछळी, म्रर बीं उठर ईनक रा दोनूं खांधा झाल लिया। हरख इत्तो हुयो जाणै म्रँनी रो म्रापरो घर चिणीजग्यो हुवै।

मा बोली—"म्रै तो घणा मांगळिक समाचार सुणाया। जीव सोरो हुयग्यो।" फेर चाय रो प्यालो उठावती बोली—"म्ररे, म्रा ठंडी हुवै है नी चाय।"

म्रँनी बोली—"मा, फेर तो ईं खुसी मे म्रेक चाय म्रौर बणा। म्रच्छया देख, चाय नईं, काफी बणा, कड़क।"

मा गई।

दोनूं म्रेक-बीजै रै सामा झाकता रैया म्रर बरावरी रो म्राणद लूटता रैया। छेवट म्रँनी रै गालां माथै लाज री लाली छायगी, म्रर बी नैण नीचा कर लिया।

दोनूं ग्रणबोल बैठा रैया। पण ग्रो ग्रणबोल वातावरण भी हिरदां नैं गुदगुदावण ग्राळो हो। ग्रैनी फेर थोड़ी तिरछी ग्रांख उठाई, पण ईनक हाल सामो भांकतो हो, इण कारण ग्रैनी पाछी ग्रांख हेठी करली।

ईनक कांई कैवण खातर मूंडो खोलण ई लाग्यो क ग्रैनी री मा ग्रायर बोली—"काफी में खांड कम तो को पलावै नी ?"

बात छोड़ री ही, पण ग्रवार ईनक नैं ग्राछी लागी। तो ई बो बिना दरसायां बोल्यो—"कम नईं, पूरी हुवणी चाईजै।"

"तो ठीक है बेटा, ग्रजकाल लोग कमती री फैसन ग्यारी सगावै।" कैयर बा पाछी मांय गई परी।

ईनक कैयो—"ग्रैनी, म्हारो घर देखण नैं तो चाल।"

ईसी ताळ ग्रणबोल रैवण रो ग्रोभो ग्रैनी मार्थं इत्तो पड़्यो जाणैं हाल ई बा सरम री तळाई में डूब्योड़ी हुवै। धीरै मूंडै मूं इत्तो ई नीसर्यो—"चालमूं।"

"कद चालसी ?"

"जद ग्रेकदम त्यार हुजासी।"

"त्यार है, ग्रैनी, ग्रेकदम त्यार है।"

"तूं ग्रवकाळै ग्रासी जद चालमूं। म्हारी मा भी चालसी।"

"हूं तो काल ई ग्रा जाऊं, थारो हुकम चाईजै।"

"काल तो नईं, ग्रागलै हफ्तै।"

"ग्रागलै हफ्तै क्यूं ?"

"काल घर में मजूर लागसी। मरामत ग्रर पोताई करसी।" कैयर ग्रणमाव हरख नैं लुकावण खातर ग्रैनी ग्रापरा दोनूं हाथ छाती ग्राडा देयर क्रॉस बणा लियो।

मा काफी लाई, ग्रर ईनक वारै सागै प्यालो पियो। कांई तो काफी कड़वी ही, कांई ग्रैनी री बातां रै कर में मीठास इधको हुवण कारण काफी ग्रौर भी कड़वी लागी।

ईनक ऊभो हुयो।

"फेर ग्राए ईनक।" ग्रैनी बोली।

"फेर ग्राए ईनक।" ग्रैनी री मा बोली। ईनक गयो।

गळी रै खूणै कनै मुड़्यो जित्तै ग्रैनी बी री पीठ सामो जोवती रैई।

ऊनी सूटर

ग्रैनी ग्रापरै कमरै मे बैठी सूटर बुणती ही, का फिलिप ग्रायर लारै ऊभग्यो। बीरी छँया जद ग्रैनी रै हाथा मार्थ पड़ी तो वा लारै झांकी। ग्रैनी बोली—"ग्ररे फिलिप ! तू तो चोरा रो ई उस्ताद है। ठा ई घाली कोनी कै कणां ग्रायर ऊभग्यो। बैठ, ग्रा मुरसी की वास्तै है ?"

फिलप बठग्यो। बोल्यो—"ग्रैनी, थारी कारीगरी तो म्हैं ग्राज देखी। इसा सूटर बुणना ग्रावै तनै ! ग्रेक तो म्हारै खातर ई बुण सकै।"

"ग्ररे थारै खातर ग्रेक नईं दो। कठैई ऊन ई लावै तू।" कैंवती गई, ग्रर सळायां चलावती गई।

"देख ग्रैनी, मनै तो ऊन री पारख कोनी। ग्रै लै दाम, ग्रर तूं वढिया देखर ऊन लिग्राए।" कैंयर फिलिप दाम काढ़या।

ग्रैनी बोली—"फिलिप दाम रैंवण दे।"

"बस ग्रैनी, नटगी ! 'दाम रैंवण दे' रो मतलब है—इनकार।" फिलिप रो मूंडो उतरग्यो।

"इनकार ?" ग्रैनी इचरज सूं बोली। मनै ठा कोनी कै तनै इनकार ई इनकार क्यूं सूझै है। हूं तो ग्रा चाऊं हू कै.........।"

"काई चावै, बोल ग्रैनी। थारो मैनताणो ? बो भी देवणनै त्यार हू।"

ग्रैनी रा बरण फुरग्या।—"बा रे फिलिप, हू मोल सूटर बुणती फिरू हू। मजूरी लेऊं, ग्रर फेर थारै कनै ?" कैंयर ग्रैनी थोड़ो मूंडो फोर लियो।

"ग्रैनी तू रूठगी ? ग्रा ग्रादत थारै में पैली को ही नी। पैली तो तूं रूठ्योड़ा नै ग्रापस मे राजी करावती।" कैयर फिलिप ग्रैनी रै चैरै सामो भाकयो ग्रर बा मुळकगी।

फिलिप कैयो—"तो ग्रैनी, तूं काई कैवती ही।"

"बा बात गई फिलिप। ग्रबै जे हू कैंय भी दूं, तो ई समझो मठ मरग्यो।" कैंयर ग्रैनी निजर नीची करली।

"पण ग्रैनी, तनै कैंवणी पड़सी।" फिलिप बोल्यो।

"ठैर, थारै सारू चाय बणावूं।" कैयर वा मांय जायर मा नैं कैयो—"कळपड़ी आळो है, फिलिप। थोड़ी चाय बणा।"

ग्रेनी बोली—"फिलिप", फेर चुप रैयगी।

"हां ग्रेनी, बोल ग्रेनी, बोल।"

"जे थारै पूरो आवै तो तूं म्हारै हाथ मांयलो सूटर ई पैर लिये।"

"हैं ग्रेनी?" कंवर फिलिप रो मूंडो रोसणी सूं चमकण लागग्यो।

ग्रेनी नस नीची करनैं बुणाई करती रैई।

"पण म्हारा इसा भाग कठै, कै थारै हाथ रो सूटर पैरूं। अच्छ्या, तूं आ तो बता कै ओ सूटर कींरै सारू बुणै है?"

ग्रेनी कैयो—"ओ सवाल मत पूछ। हाल तो म्हैं पोळायो है। थारो नाप देय दे, अर उण हिसाब सूं त्यार हुजासी।

ग्रेनी नाप लेवण सारू ऊभी हुई। फिलिप बींरै हाथ मांय सूं फीतो लेयर आपेई आपरो माप कर लियो। ग्रेनी चावती कै बा खुद मापर फिलिप नैं थोड़ो मौको देवै, पण फिलिप इण मौकै नैं गमाय दियो।

ग्रेनी री मा नवा कप-प्लेटां में चाय घालर लाई। पण फिलिप आपरै हाथ सूं चाय त्यार करया करतो इण कारण घणी चोखी नईं लागी, फेर भी ग्रेनी रै घर री ही अर ग्रेनी रै कनै बैठर पीवणी ही, इण कारण इसी सवाद लागी कै आगै जाणै इसी कदेई पी ई नईं हुवै।

फिलिप कैयो—"हां, तो ग्रेनी, सूटर कद तईं त्यार हुजासी?"

ग्रेनी—"पैली तूं डिजाइन तो बता, हाल तो खाली पट्टी पोळायोड़ी है।"

फिलिप—"ग्रेनी, काल तो हूं थारै जा रैयो हूं। आठ-दस दिनां सूं पाछो आसूं, जद तनैं डिजाइन देखाळसूं। अर नईं तो तूं थारै जचै जिसो ई कर दिये। थारै हाथ रो सूटर ई म्हारै सारू रौम री बात है। डिजाइन री तो कोई खास बात कोनी।"

ग्रेनी तानो देवती बोली—"हां, खास कोनी। मवार तो खास बात कोनी, फेर बुणी-बुणाई चीज में काण-कसर काढीजै, बा मनैं परसन कोनी।"

फिलिप गयो परो।

••

नवो घर

आपरै बैण माफक ईनक आयो अर भंनी तथा बीरी मा नै आपरो घर देखाळण खातर लेयग्यो । नवै घर मे पग धरती भंनी इण तरै हरखी-सरमी जाणै नवी बीनणी आपरै सासरै में परवेस करती हुवै ।

छोटोसोक घर, डब्बी री जात । थोड़ी-सीक चीजा, पण खिडावोपिड़ावो बिल्कुल नई, सगळी ठोड़-ठिकाणै जचायोड़ी ।

हवादार रसोईघर, पछेती मार्थ बासण, धुओं निकळण खातर चिमनी अर समान राखण खातर अलमारी ।

फेर आगीनै गया तो सोवणघर । आछोसोक पिलंग, गीदो—सुजनी लगायोड़ा । नीचै दरी बिछायोड़ी । हवादार, बड़ो कमरो । भंनी री मा बोली—"मकान बोत बढिया बणवायो है ।"

भंनी भींत मार्थ सजायोड़ी तस्वीरां देखण लागगी । मा रसोईघर में गई परी—"मनै तो रसोईघर घणो चोखो लाग्यो ।" इसी तरै भाई जिको धाकेलो आयग्यो । बा सोवणघर री दरी रसोईघर मे बिछाघर सोयगी ।

"फोटुवां सूं मालम पड़ै जाणै केई जाज रै कपतान रो कमरो है ।" कंवर भंनी कमरै री च्यारू भींतां मार्थ, घूमर, अेक निजर फैंकी ।

"पिलंग मार्थ बैठ भंनी ।" ईनक कंयो ।

"मकान तो म्हारै घणो दाय आयो है ।" भंनी मुणी-मणमुणी करती बोली ।

"पण ऊभी कित्तीक ताळ रैसी ?" कंवर चौनिजरी खातर ईनक सामो झांकयो, पण भंनी नई झांकी ।

"भंनी सुणै कोनी ?"

"कांई सुणू, कांई बंदे बोल ।" भंनी इतरायर बोली ।

"मार्थ ऊपर बैठ जा, ऊभी कित्तीक ताळ रैसी ?"

भंनी मूंडो फोरती बोली—"थारां बैठां-बैठायां कोनी ।"

"म्रा बात ?" ईनक सामनै फुरतो बोल्यो । "म्रापेई नईं बैठमी, तो सोय हाथ झालर बैठाण देसी ।"

"इत्ती हीमत है लोगा री ? हाथ झालसी जद हूं म्रापेई निवट लेगूं । तूं क्यूं फिकर करै ईनक ?" कंवर मेंनी मुळकी ।

"मनैं ठा पड़गी, तूं म्रापेई को बैठैंनी ।" कंवर ईनक ऊपर—नीचै नस हिलाई ।

"म्ररे ईनक तूं तो म्रन्तरजामी बणग्यो दीसै ।" कंवर मेंनी हसी ।

ईनक कैयो—"मनैं डर लागै मेंनी, कै जे हूं तनैं हाथ झालर बैठाणूं तो तूं कोई म्रौर तरैं नईं समझलै ।"

"म्रौर तरैं तो समझ मूं ईं । हाथ झालर बैठावण रो कायदो थोड़ो ई है ।"

"पण मेंनी हूं कायदो म्रण्पोड़ो कोनी । जद नाव केई बार माटी में फंस जावै, तो सैंचर पाणी मे कर लिया करूं । तनैं भी सैंचर बैठाणनी पड़सी ।"

"ठीक है, तूं मनैं लकड़ी री नाव समझै ?"

"नईं मेंनी म्रा बात कोनी, तनैं तो तूं समझूं ज्यूं ईं समझूं हूं ।" कंवर ईनक म्रांख्यां मींचर काळजै री हूक देणाळी । फेर कैयो—मेंनी, देख हूं म्रांख्यां मींचूं जितै, जे तूं स्याणी है तो, पिनग ऊपर बैठ जासी, म्ररै·······।"

"म्ररै मेंनी हूं तो ऊभी रैगूं । क्यूं ? म्रा ईं बात है नी ? हूं तो मैंलो ईं हूं । कंवर मेंनी ईनक रै सामनै म्रांखी कै बोल म्रबै काईं करसी ।"

"मेंनी है जद तो हाथ झालर बैठावणी पड़सी ।" कंवर ईनक मेंनी रा दोनूं हाथ झालर पिनग माथै बैठाण दी । मेंनी नैं ईनक रो स्पर्श सुवायो, पण बा भाव लुकावती बोली—"इया जबरदस्ती करणी ?"

"नईं मेंनी, तनैं ऊभी किया राखूं ?"

"म्रच्छ्या बैठगी, म्रबै बोल काईं कैवणो चावै है ?"

"बताऊं ?"

"हां बता ।"

"हूं ठीक कर लेसी ।"

"ठीक करण री बात कैवै क्यूं ?"

"ठीक करण री तो कोनी ।"

"तो फेर हूं तो मैंथी म्रागी किसो ठीक कर लेगूं ।"

"हूं भी ऊभै-ऊभै थकग्यो ।"

"ईं म [illegible] री काईं बात है ?"

"हूं कैवै [illegible] ?"

"म्हैं किसो तनै ऊभो रैवण री सजा दी ही ।"

"तूं कैवै तो पिलंग ऊपर बैठ जाऊं ।"

"वा रे ईनक ! घर थारो, पिलग थारो, आ कोई मनै पूछण री बात है । तूं बैठसी तो म्हारै पाल्योड़ो थोड़ो ई रैसी ।"

"अैनी, देख तैं रीस करली ।" कैयर दूसरै पासी भांक्यो, तो रसोई रो किवाड़ हिलतो दीस्यो । ईनक पिलंग सूं अेक पांवडो अळगो सिरकग्यो ।

माजी खखारो करनै उठगी । अैनी पिलंग सूं हेटी उतरनै मा कनै आयगी ।

ईनक कैयो—"मनै थांरी खातरी करणी चाईजती ही, पण हाल बिसावण पूरी हुई कोनी, इण कारण मनै माफ करोना । अैनी, अबकाळै तूं आसी जद चूक नईं पड़ैली ।"

"कोई बात कोनी, कोई बात कोनी, मकान बौत आछो बणायो है, घणो दाय आयो है । परमात्मा करै थारो ब्याव बेगो हुवै, अर तूं इण घर में सुख सूं बसै ।" कैयर मा-बेटी बारै निकळगी, अर ईनक थोड़ी दूर पूं'चावणनै आयर पाछो आपरै घरै गयो परो ।

००

हेजल-वन में

सरदी रो मौसम । छुट्टी रो दिन । हेजल री झाड़्यां फळां सूं लदालूंब । इण तरै रा मौसम जवान जोड़ा हाथ सूं कर आवण दै ? हेड़ री हेड़ हेजल जंगळ कानी दुरग्या, हाथां में थेला पकड़्या झाकड़्यां निचोड़्या, फळ तोड़र भेळा करण खातर ।

इण मौकै ईनक नै भी आवण री रुची आई । पण ग्रेकलो ईनक जावै जावणो ग्रणयारत्य । सोच्यो—ग्रैनी नै साथै लेयलूं पण बा हामीक भरै हानै कां ठा । चालर पूछूं तो सरी । पूछण में तो कोई आंट कोनी ।

ग्रैनी रै घरे ग्रायो । ग्रैनी कपड़ा बदळर माथै में कांगसियो फेरती ही ।

"म्हारै आवण री थेनी सूं ठा पड़गी काईं ग्रैनी ?" ईनक पूछ्यो ।

"नईं तो ।" ग्रैनी उथळो दियो । "क्यूं कोई खास बात ?"

"खास बात तो कोनी, पण इयां लाग ई है । हेजल रै जंगळ में फळ पाक्या ग्रै देख, जवान धणी-लुगायां रा टोळा जावै ।" कैयर ईनक रुक्यो ।

"ग्रापां काईं करां ईनक ?" ग्रैनी पूछ्यो ।

"तूं म्हारै सागै हालसी ?" ईनक ग्रनिश्चै रै भाव सूं पूछ्यो ।

"पण तूं तो कैवै नी धणी-लुगायां रा टोळा जावै । फेर ग्रापां रो हालणो कठै तईं ठीक रैसी ?" कैवती-कैवती ग्रैनी रा केस मुळकायर कांगसियो माळ में मेल दियो, ग्रर फराक री कालर सीधी करी ।

ईनक कैयो—"ग्रैनी, तूं तो बात भालै घणी । ग्रो कोई जरूरी थोड़ो ई है कै ग्रै सगळा धणी-लुगाई ई है । केई ग्रापां दई भागै जायर प्रेम-सूत नै ब्याव-सूत में पोरण भाळा हुवैला ।"

ग्रैनी रै गालां माथै ललाई पसरगी—"तो ईनक थारो विचार पक्को है ?"

"पक्कै में कोई कसर है ? चालणो है जद ई तो हूं ग्रायो हूं ।"

"ग्ररे नईं, थारी ग्रक्कल बौत मोटी है । चालण रै विचार री बात को पूछूं नी । हूं पूछूं बा बात ।" कैयर ग्रैनी सामी भांकी, भई 'बा' रो मतलब ग्रापेई समझ जा ।

"अरे घंनी, आ मनै पूछण री बात है ? विचार तो थारो काम देसी। म्हारो विचार हुयां कांई' पार पड़ै ? हूं तो आज ई त्यार हूं। अबार, इण घड़ी।"

घंनी आपरा जूना झड़काया। खूंटी माथै सूं थेलो उतार्‌यो टुरण लागी, इत्तै में मा आयगी। "म्हे हेजल रै जंगळ में जावां। थारै खातर फळ लावण सारू थेलो लेलियो। तूं हालसी कांई' मा ?" घंनी नौरो काढर उथळो लियो पंणी ई बारणै कानी बधगी।

"हूं हालूं कोनी, तूं जा बेटी" अे बोल जद ईनक रै काना पड़्या तो जीव जम्यो।

दोनूं जणा अेकान्त में, झाड़ां रै झूमकां बिचाळै बैठग्या।

ईनक पूछ्‌यो—"घंनी म्हारै सागै आवण में थारो जीव दुख तो को पायो नी ?"

घंनी कंयो—"थारै मन में दुख री भावना उपजी है, इण सूं मालम पड़ै कै थारै मन में दुख उपज्यो है। ठीक है नी ईनक ?"

"तूं आ बता, कै दुख नै नूंतो देयर कोई आपरै सागै लावै-लेजावै ? थारै आयां जे मनै दुख हुवतो, तो हूं तनै लेवण नै थारै घरे क्यूं आवतो ? थारै बैठ्यां आज मनै इसो सुख हुयो है कै जिसो आज लई' कदेई नई' हुयो। इण सुख रै अेक पलक माथै हूं सगळी ऊमर वारण नै त्यार हूं।"

इयां कंयर ईनक घंनी री साथळ रो तकियो बणायनै उण माथै आपरो माथो टेकर सोयग्यो। अर दोनां रा नैण आपस में टकरायां तो घंनी सरमायगी, अर ईनक उण री इण सरमायोड़ी छिब सूं टपकण वाळै रस नै पीवतो रंयो। फर ईनक बोल्यो—"घंनी, तूं नाराज तो को हुई नी ?"

ईनक री ठोडी झालती घंनी बोली—"ईनक, तनै म्हारो नाराजगी रो इसो डर लागै, हूं कदेई थारै माथै नाराज हुई कांई' ?"

माथै हेटै घंनी री साथळ, ठोडी माथै घंनी रो हाथ, आंख्यां आगै घंनी री मनमोवनी सूरत अर काना में उण रा मीठा बोल—ईनक सावेई ग्यान हुयग्यो। उण सूं बेसी सुखी जीव दुनियां में कोई नई' हुयो हुसी। बेसी कांई', कोई उण सूं आधो सुखी भी नई' हुवैलो—आं बातां में ईनक आतमविभोर हो।

वो बैठो हुयो। घंनी रा दोनूं हाथ आपरै हाथां में झालर प्रेम सूं दबाया अर उणी जोस सूं घंनी भी

ढील रो नकीटो

फिलिप रो बाप केई दिनां सूं मांदो। मांदो कांई, मरण मान्या पड़्यो हो। फिलिप कड़तड़ी श्रावणो छोड़ दियो। पगरो घूमणो-फिरणो बंद कर दियो। बाप री हीड़े-चाकरी में रात-दिन एक कर दिया, पण आराम नईं आयो।

आज फिलिप रा मित्र बी उडू-उडू मनावो। बाप मांगे पाणी तो भलाई दारू। मांगे मीठ तो भलाई पीता।

जवान ओदा नै हेजल में जावता देखर फिलिप नै रटी घाई—हूं भी जाऊं, धंनी नै साथै लेयर।

बो धंनी रै घरे गयो पण मालम पड़ी कै बा हेजल में गई है। उणी पगां फिलिप हेजल कानी टुरग्यो। बी सोच लियो कै आज हूं धंनी नै साफ-साफ कैय दयूं कै धंनी, हूं तनै प्यार करूं हूं।

धंनी नै जोवतो-जोवतो बो ठीक-ठिकाणै पूगग्यो। पण अरे, ईनक धर धंनी श्रेक श्रोजै री भुजावां में कमीजियोड़ा श्रासन में चूमो ले रैया है।

फिलिप रो सगळो जोस ठंडो पड़ग्यो। गोडा टूटग्या। माथै पाड़ पड़ग्यो। डील रो सत निकळग्यो। काळजो डूबण लागग्यो। बो श्रेक मिट खातर माथो टेकर जमी माथै ऊभो पसरग्यो। फेर उणी बगत घायल सिकार ज्यूं, बिना खड़को-भड़को करे, सूका पत्ता श्रथवा पगां री श्रवाज कर्यां बिना बठै सूं श्रघर-श्रघर, चोर हुवै ज्यूं सिरकियो। "जे कदास धंनी नै ठा पड़ जावै, हूं दीस जाऊं, तो ईं रो सगळो गुल किरकिरो हुजासी।"

घरे श्रायो। बापरै मांचै कनै बैठग्यो, पण बैठो रैवण री ई सरधा नईं। बाप पाणी माग्यो, पण फिलिप नै ठा तक नईं पड़ी। दूसर माग्यो। फिलिप सूनै दिमाग सूं बाप रै सामो भालयो, पण उण रै हाल ध्यान में नईं श्रायो कै बाप पाणी मांगै है। बेटै नै गुमसुम देखर बाप समझग्यो कै श्राज ईं रो मामो सावळ कोनी। पसवाड़लो सुराई माय सूं जद बाप श्रापेई पाणी पियो श्रर पाछो गिलास मेज माथै मेली, तो गिलास रै खड़कै सूं फिलिप रो ध्यान टूट्यो। बाप पूछ्यो—"श्राज गुमसुम क्यूं है बेटा? तबियत तो ठीक है?"

"हा, ठीक है बापू।" कँवर फिलिप पाछो जागतै सपनै रो सिकार हुयग्यो। रात पड़गी ही। बाप कँयो—"जा, सो जा, अर बो थोड़ा होट हिलावतो बापरै सामनै सुळर सोवण रै कमरै में गयो परो। कमरै री बारी खुली ही। बठीनै सूं हेजल रो जगळ दीसतो हो। ईनक अर ग्रैनी तो कर्णा ई आप-आप रै घरै गया हुसी, पण फिलिप रै नैणा आगै ओजूं वो ई चितराम हो—रूपाळी ग्रैनी ईनक रै गळबाखड़ी घाल्योडी अर ईनक रा होट ग्रैनी रै होटां माथै। देखतो-देखतो थक जावै जद कमरै मे घूमै, अर फेर पाछो बारी री थळी माथै पग, अर गोडै माथै अकूणी देयर ऊभ जावै अर दिमाग नै जोर देवै—"ग्रैनी म्हारै सूं इत्ती हंस-हंसर बाता करती, इत्ती अपणायत राखती, पण माय सूं वा ईनक नै चावती। मनै साचै मन सू प्यार नई करती। म्हारै सागै धोखो कर्यो है? धोखो! नई नई, धोखै जिसी चीज-सार ग्रैनी रो अबोध हिरदो समझै ई कोनी। बा निरछळ छोरी। लुकाव-छिपाव, छळ-कपट बीरै कनै कोनी। म्हारा ई भाग फूट्योडा हा, कै हू मोड़ो पूग्यो। ईनक री तगदीर सिकन्दर ही। बो पैली पूगग्यो, अर आपरो काम बणाय लियो। हूं जे पैली पूगतो, तो म्हारो काम बण जावतो। ग्रैनी पङ्कायत म्हारै सागै हेजल रै बन में चालती अर म्हारै सागै रंगरळी करती। ग्रैनी रो कसूर कोनी। कसूर अथवा ढील म्हारी तरफ सूं हुई।"

फिलिप सोयग्यो, पण नींद उचाट हुवती रैई। हेजल-बन रो द्रिस्य घड़ी-घड़ी बार उण रै नैणां आगै आवै। फेर संमदर री साकडी गुफा मे टाबरपणै आळा दिन याद आवै—अरे ईनक, छुटपण मे थारै कनै बैठो हू तरस्या करतो, अर आज भी तै मनै तरसतो राख दियो। तूं स्वार्थी है ईनक। पण ईनक नै स्वार्थी कियां कैऊं? जे म्हारै औ सोनलियो अवसर हाथ लागतो, तो हू कद चूकतो? सारै रैवै, जिका आपरी ढील रा नकोटा भोगै ई है।

●○

अमोलख वचन

सड़क रो फंटवाड़ आयो तो ईनक अंनी रो हाथ चूमर आपरं घर कानी टुरग्यो अर अंनी दोरं मन सूं न्यारी हुयर आपरं घरे आई। फेर भी आज उण रं चैरं मायं चमक ही। मूंडं मायं विसेस ललाई ही।

मा बोली—"बेटी, म्हारं जचं कं अबं हूं थारो ब्याव करदूं। म्हारो काई भरोसो ! जे आंख मीच लेऊं तो मन में रैय जासी।"

अंनी मा रं सामी सक भरी निजर सूं झांकी जाणं मा बींनं ईनक सागं गळबाखड़ी भर्योड़ी नं देखर ई आ बात कंवती हुवं। अंनी बोली—"हूं काई कंऊं, थारं जचं तो कर दे।"

"म्हारं ध्यान मे फिलिप सूं आछो दूसरो कोई टाबर कोनी, अर थे आपस में अेक-दूजं नं चावो भी हो।" कंयर मा बेटी रं सामनं झाकी, भई आ कळी दई खिल जासी। पण बेटी रं चैरं मायं हरख री हळकी लकीर भी झलकी कोनी।

मा बोली—"बेटी, अबं तूं जवान है, सरमावण री कोई बात कोनी। बोल, तनं फिलिप आछो लागंक नईं ?"

"हां, आछो तो लागं।" कंयर अंनी सोच में डूबगी।

"मनं भी फिलिप आछो लागं। आछो काईं, इत्तो सुवावं कं म्हारी लालसा है कं म्हारो जंवाई फिलिप ई बणनो चाईजं। हाल बींरो ब्याव हुयो कोनी, परमात्मा थारं खातर ई बींनं कंवारो राख्यो है, नातर इसा घर-घराणं रा लायक अर फूटरा टाबर खाली रंवण मं पड़्या कठं है ! अेक दिन फिलिप मनं मिल्यो भी हो। म्हैं थोड़ी बात करी जद मुळकण लागग्यो ; सभाव संकाळू है। पण घर रो घर है, कळचक्री है, बाप रो माल है अर आछी ईजत है। इण सूं बेसी और कांई चाईजं ?" कंयर मा आपरी बेटी नं छाती रं चिपायर माथो चूम लियो।

"पण मा" कंयर अंनी चुप हुयगी।

"क्यूं, तनं फिलिप मे कोई कमर लागं ? उणसूं इक्कीस बीस कोई दूजो थारी निजर मे है ?" कंवती मा अंनी रा गोरा रेसमी गाल हथाळां में झालर बींरो मुंडो आपरं सामनं ऊंचो कर्यो।

"फिलिप तो फिलिप ई है, पण·····" कँवर फेर ग्रैनी ग्रड़गी ।

"इकरण री बात कोनी म्हारी लाडेसर, मनैं ठा है, थारो ग्राप री समाव ब्याव रै मामलै में संकाळू है । थारै सूं हुंकारो भरीजै कोनी । पण जे तूं नकारो नईं करै, तो हूं फिलिप सूं हुंकारो भरलूं ?"

"पण मा, रात हूं ईनक साथैं हेजल-वन में गई ।"

"कांईं हुवै गई तो ? हेजल-वन में गयां कोई फिलिप नाराज थोडो ई हुवै । तनैं देखर बो इसो हरखै कै ग्रापरै गाभा में मावै कोनी । इसै धणी नैं पायां कोई भी छोरी धन-धन हुसकै है ।"

"पण म्हैं ईनक नैं म्हारो ग्रापो सूंप दियो ।"

मा थोड़ी ग्रळगी सिरकी, ग्रैनी रो मूंडो सावळ देखरण खातर, ग्रर बोली– "ग्रापो कियां सूंप दियो ? कांईं सूंप दियो ?"

"म्हां ग्रापस में गळबाखड़ी घालर चूमा लिया ।"

"ग्रा तो साधारण बात है बेटी । इण सूं कोई ईनक सूं थारो ब्याव थोड़ो ई हुयग्यो ! "

"ब्याव तो को हुयो नी, पण म्हैं मन सूं ईनक नैं म्हारो धणी मान लियो, ग्रर ग्रापस में ब्याव रा ग्रेक-दूजै नैं बचन भी देय दिया ।" कँवर ग्रैनी मा रै नैड़ी सिरकर छाती रै चिपगी ।

मा बोली—"तो फेर म्हारै बोलण नैं ठौड़ कोनी । बचना सूं बेसी कीं कोनी । बचन ग्रमोलख हुवै । तूं थारा बचन निभा, तनैं म्हारी ग्रासीस है ।"

ग्रैनी मा नैं बाथां में भालर काठी लिपटती बोली—"मा, तूं किसीक चोखी है, म्हारी ग्राछी मा !"

••

ईनक वीरो प्रतिद्वन्द्वी है। टावरपर्ण मे ईनक वीनैं घणो तरसायो अर सतायो, उण रो बदळो वो आज बळ सूं काढ़ै है। हे परमात्मा, तू सगळा नै आछी बुद्धि दे।

जद ग्रैनी अर ईनक गिरजै रै नैडा पूग्या तो बारै इचरज रो ठिकाणो नई रैयो। लारलै दस बरसां सूं गिरजो अमरामत पड्यो हो। बारली भींता रा जगा-जगा लेवड़ा उतरण लागग्या हा, रंग तो बाकी रैवतो ई किया? प्रबन्धक लोग या कैयर टाळ देवता कै पीसा कोनी। पण गिरजो दमदमाट करै। इसी ठा पड़ै जाणै विश्वकर्मा कोई नवी इमारत ऊमाऊम त्यार करी हुवै। गिरजै रै पगोथिया माथै मुखमल री पट्ट्या बिछायोड़ी। पगोथिया रै दोना कानी गमला री पगत अर पत्ता रा नकली झाड़ बणायोड़ा। ज्यूं ई ग्रैनी पगोथियै माथै पग धर्‍यो कै दोनू बदूकधार्‍या एकै सागै धमाको बोनायो। लारलै लोगा मे खळबळी मचगी, अर केई तैतीसा मनायग्या, पण आगै हा जिकां देख्यो कै फिलिप ग्रैनी अर ईनक नै आदर-सत्कार सूं माय लेयग्यो। गिरजै नै माय सूं इसो सिणगार्‍यो जाणै अमरावती उतरनै धरती माथै आयगी हुवै! गिरजै मे बड़ै जिकै रै ई गळै मे पुस्वा रो हार पैराय देवै। इण सूं च्यारूंमेर पुस्वा री मैक फूटगी अर सगळा लोग इया मैसूस करण लागग्या जाणै सुरग रै बगीचै में उतरग्या हुवै।

पादरी साब आया। ईसामसीह रै कॉस आगै सगळा एक सुर सूं प्रार्थना करी। फेर ग्रैनी अर ईनक आपस मे वफादारी अर साचै प्रेम रा वाचा दिया-लिया। दोना आप-आप री बीट्यां खोली अर आपस मे अदला-बदली करी। गिरजै रो घट्या बाजी, अर बै हरखे-कोडे परणीजग्या।

सगळा लोग पत्थर रा हुयोडा रैयग्या। केया रो ख्याल हो कै अबै फिलिप बीच मे कूदसी। ख्याल साचो निसर्‍यो, पण सौळै आना साचो नईं। फिलिप कूद्यो तो सरी, पण ग्रैनी नै बधाई देवण खातर अर हीरा रो हार भेंट करण खातर। ग्रैनी री छाती गदगद हुयगी—"तूं कित्तो चोखो है फिलिप?" कैयर वो फिलिप रो दियोड़ो हार आपरै गळै मे पैर लियो।

फिलिप सूं और तो की बोलीज्यो कोनी, वो इत्तो ई कैयो—"ग्रैनी, थारो सुख है जिको म्हारो सुख है।"

●●

सुख रा सात बरस

ग्रैनी नैं पायां ईनक घणो ख्याल हुयोक ईनक नैं पायां ग्रैनी घणी न्याल हुई, ओ अन्दाजो लगावणो कठण काम है। हा इत्ती ठा है कै दोनां नैं मणमाप आनन्द हुयो अर वैं सुखी घरबार्‌या दई आपरो जीवण बितावण लागग्या।

ईनक लगन सूं आपरैं काम माथैं जावैं। दिन भर समंदर री छौळां माथै राजस करै। कदेई बांसूं भगड़ै, कदेई बांसूं हेज करैं, हरख सूं गीत गावैं, पण मन में ग्रैनी रो ध्यान रैवैं—सिंझ्या पड़्यां घरे जासूं। ग्रैनी अडीकती हुवैंली।

अर साचेई सिंझ्या हुयां सूं पैंली ई ग्रैनी ईनक रैं मारग माथैं आपरी पलका रा बिछावणा कर देवती। जद अळगैं सूं ई ईनक रो भळको पड़तो, तो बा भागर सामनैं जावती, अर आपस में हाथां री आंगळ्यां गूंथ्योड़ा बै दोनूं जणा बातां करता घरे आवता। ईनक आपरी दिन भर री मैनत-मजूरी री बातां सुणावतो अर ग्रैनी आपरी जबानी डायरी रा पाना सुणावती।

ईनक अदीतवार नैं आपरैं काम री छुट्टी राखै। दोनूं जणा न्हा-धोय, साफ-सुथरा गाभा पैरनैं गिरजै जावैं अर भगवान रैं ध्यान में लवलीण हुवैं। सायद बै आपरी कृतग्यता भी जाहिर करैं कै भगवान बाळपणैं में बिछड़्योड़ै दो हिरदां नैं पाछा आपस में भेळा हुवण रो अवसर दियो। दूसरा सगळा लोग प्रार्थना सूं उठ जावता, पण ग्रैनी-ईनक रो जोड़ो ह्वाल जैंण सू दे बैठो है। बांरो आपसी सनेव देखनैं गांव रा मोकळा धनपती रश्क करण लागग्या कै म्हारो हेज भी ईनक-ग्रैनी जिसो निस्वट अर निरछळ हुवतो।

पण केई लोग बात करता- ग्रैनी ? अरे आ चलती रकम है। ईनक भोळो है। आ पैसो ईनक रो सफायो कर्‌यो चावैं। ईनक रो माल चादर फेर दिनिया बातो हुवती। दीसैं तो इसी सूधी है, जाणैं सूं डं में जीभ ई कोनी, पण हकीकत में, थोरे! भगवान ईंसू बचावैं, इसो छाकटी सूं। धेक लागैं दो-दो घोड़ां री असवारी करैं। जबरी है आ छोरी।

अदीतवार नैं दोनूं जणा थोड़ै सूं बजार में सौदो खरीदण नैं जावैं, अर कदेई खाली हाथ पाछा नईं आवैं। घणोमोल सामान ग्रैनी आगर ई पावैं—कदेई

नवी चाल रा सैण्डल, कदेई रेसमी मोजा, कदेई फेल्ट कैप, कदेई फराक रा टुकड़ा, कदेई घर री सजावट खातर तस्वीरा, कदेई ऊन, कदेई सळाया। ईनक कोड सूं पीसा खरचतो अर उणनैं इतो म्रानन्द हुवतो जित्तो साचै करमकाण्डी नैं होम कर्‌या हुवै।

इण तरै ईनक दटर मैनत करतो, अर दोनूं जणा मजै मे रैवता।

ग्रेक दिन जद बै बजार मे सौदो खरीदता हा, अर ईनक ग्रेक मुखमली फराक मोलावण लाग्यो तो ग्रैनी रोक दियो—"ईनक, म्रापा बौत खरचाळू हा। तूं लावै जिका माय सूं ग्रेक पाई भी बचावा कोनी। म्रापा रा पाड़ोसी म्रापा सूं म्राधो कमावै, पण फेर भी वै पीसा भेळा करै। सगळा पीसा लावै ज्यूं ई उडावै कोनी।"

"पण थारै म्राज काई जचगी, ग्रैनी ?" ईनक म्रापरै जीवणै हाथ रो थेलो डावै मे झालर, जीवणै सूं ग्रैनी री नरम हथाळी अर म्रागळ्या पोलीसीक मसळतो बोल्यो।

ग्रैनी बोली—"ईनक, थारै हाथ सूं म्हारै काळजै मे गुदगुदी पैदा हुवै, अर बजार मे कोई देखसी तो म्रापां कोझा को लागां नी ?"

"पण तूं म्हारी बात क्यूं टाळै ग्रैनी ? म्रापानै परणीज्या नै छव बरसा सूं ऊपर हुयग्या, पण तैं खरचै-बरचै रो कदेई नाव ई लियो कोनी, म्राज तनैं म्रा कजूसी कियां सूझी ?"

"कंजूसी री बात कोनी। बडेरा कैयग्या है—सीरख देखर पग पसारणा। म्रोड़ी बगत खातर भी तो दो पीसा बचणा चाईजै।" कैयर ग्रैनी ईनक रै मगरा मे हाथ लगावती बोली—म्रबै म्रापानै घरे चालणो चाईजै।

दोनूं घर कानी टुरग्या। म्रधारो सरू हुयग्यो, अर ईनक ग्रैनी रै छेड़खानी करण लागग्यो। ग्रैनी बोली—"है तूं हाल टावरपणै म्राळो सागी ईनक। पाच-सात मिंट में म्रापां घरे पूग जासा, जित्तै थारै सूं खटाव राखीजै कोनी ?"

ईनक कैयो—"ग्रैनी, मिनख चावै कित्तोई सच्चरित्र क्यूंनी हुवो, म्रापरी लुगाई म्रागै, जै बो मिनख है, तो बीनैं निरलज हुवणो ई पड़ै। अर म्रा ई बात लुगाई री है। चावै वा किसी ई सती क्यूं नी हुवै, म्रापरै धणी म्रागै तो बीनैं निरलज हुवणो ई पड़ै।"

ग्रैनी म्राख्यां घुळावती बोली—"ईनक तूं ग्रेक लुगाई री बात करै है'क सगळी लुगायां री ?"

ईनक कैयो—"ज्यूं मुट्ठी धान री बानगी सूं बोरी रै धान री ठा पड़ जावै, इणी भांत सगळी लुगायां रै बावन जागण खातर ग्रेक लुगाई मोकळी है।"

ग्रेनी बैंगो—"हूं थारी या बात मानूं कोनी । ग्रेक लुगाई जे करणगा है, तो यूं सगळी लुगायां नै वरकता दिय सेनी ? ग्रेक लुगाई जे करजै हिरदै री है, तो काई हरेक लुगाई बिसी हुवणी जरूरी है ?"

ईनक बंयो—"ग्रैनी तू समर्भ कोनी । म्हारी बातां गभीर ग्यान मार्थ टिक्योड़ी है । बाली बात म्हारै मूंडै सूं कुदरतन ई निकळै कोनी । होठां सूं बारै ग्रायां पैली म्हारा सबद नप-तुलर ग्रावै ।"

ग्रैनी लापरवाई सूं बोली—"ग्रावै नप-तुलर । तैं किसी कालेज में पढ़ाई करी, बिसी पोथ्यां बांची । तूं तो ग्रहळग्राऊ पैसाळा वेरै है ।"

ग्रापरी ग्रणिक्षा कारण ईनक रै मूंडै रो रग तो पड़ीग्ळ सातर भाव वदळायो, पण ग्रैनी नैं बिना ठा पाले ईनक बोल्यो—"ग्रैनी, सगळो ग्यान पोथ्यां भर्योड़ो थोड़ो ई है । ग्रसली ग्यान तो तद हासल हुवै जद मिनख ग्रापरै चवाड़ै में री जिनसां नैं ग्राण्यां खोलर गावळ देवै । ग्याली पोथा पढ़-पढर रिड़त हुयां काई को हुवैनी । पोथा तो पोथा है ।"

ईनक री बात काटती ग्रैनी बोली—"पोथा नैं पोथा कियां कैवै ? पोथ्यां में तो मिनखां री पीढ़्यां रो ग्यान भेळो कर्योड़ो हुवै । जे पोथा थोथा है, तो फेर तू बाइबिल नैं काई कैसी ?"

"तूं हाल समर्भ कोनी ।" ईनक बोल्यो । "बाइबिल नैं तूं पोथी गिणै है ग्रा थारी ग्रणसमझी री सैनाणी है । बाइबिल में तो भगवान रो सनेसो लिख्योड़ो है । संसार रै उपकार साऊ भगवान ग्रापरो सनेसो भेज्यो, जिको बाइबिल में लिख्योड़ो है ।" कैयर ईनक ग्रैनी रो मूडो सावळ देखर उणरा भाव लखण सारू पावड़ो खायो उठायर ग्रेक गज ग्रागै बधग्यो । ग्रैनी साचेई प्रभावित हुई । वा बोली—"पण ईनक, तैं इत्ती बातां कठै सीखली ? हूं तो तनैं हाल, गळती सूं लाकड़ी गुफा रो, जोरा-मर्दी बीन वणनियो ईनक समभती ही ।"

ईनक हंसण लागग्यो । बीं ग्रैनी रो हाथ प्यार सूं दबायो ग्रर चूम लियो । होठ भी नैड़ा करण री चेस्टा करी, पण ग्रैनी ग्रळगी सिरकगी ।

ईनक कैयो—"ग्रैनी, म्हारै करमां में विद्या रो जोग तो नईं हो, कारण मूगतै रा ई म्हारा माईत मरग्या, पण कोई भी चीज सीखण कानी म्हारी रुचि टेठ सूं ई रैई है । तनैं ठा है हूं म्हारो नाव नैं चमचमाट करतो राखूं, इण कारण म्हारी नाव मिलता थका ग्राछा लोग दूजी नाव कबूल करै कोनी, ग्रर ग्राछै लोगां रो घड़ी-पलक रो सतसग ई लाख रुपिया सूं बेसी है । म्हारो ग्यान म्हारै विद्वान सैलाण्यां रै सतसंग रै परभाव सूं ई है, नातर हूं तो पढ़्यो-लिख्यो कोनी ग्रा बात थारी सैकडम साची है ।"

घर नैड़ो आयग्यो। ग्रेंनी कूंची भलाई। ईनक ताळो खोल्यो। ग्रेंनी घर में आयर पिलंग मार्थं बैठर सुसतावण लागगी।

"ग्रैंनी थकगी ?" ईनक पूछ्यो।

"नईं तो।" ग्रेंनी भट बोली। पण बा हांफयोड़ी सांस खावती ही इण सूं साफ ठा पड़ती कै उणनैं थाकेलो आयग्यो हो।

ईनक कैयो—"ग्रैंनी, तूं म्हारै सूं तीन बरस छोटी है, पण बुढापो तनैं म्हारै बिच्चै बैगो आसी, इसी ठा पड़ै।"

ग्रैंनी मुळकी, अर जवानी रै कारण उणारो रातो मूंडो कस्मीरी सेव जिसो रातो हुयग्यो।

ईनक कैयो—"ग्रैंनी, म्हारी हरेक बात नैं तूं मुळकर उडाय देवै। सायद तूं मनैं मूरख समझै। जद इसी बात ही, तो तैं जाणती-बूझती ग्रेक मूरख सूं पानो क्यूं घाल्यो ? देखती आख्यां कूवै में क्यूं पड़ी ?"

ईनक री बातां सूं ग्रैंनी री मुळक जोरदार हंसै में बदळगी, अर बा निरी ताळ तईं हसती रैई। ईनक रै जचगी कै ग्रैंनी बीनैं साचेई मूरख समझै। अर इणी वगत ग्रैंनी कैय दियो—"ईनक, तू मूरख है। तूं समझै तो कोनी, अर मन में सोचै कै थारै जिसो जाणकार कोई है ई कोनी।"

ईनक रो मूंडो फूलग्यो। बो आपरा जूता अर गाभा उतारनैं गळी कानी टाग्यां लटकायर, ग्रैंनी कानी पूठ देयर, बारी में बैठग्यो।

ग्रैंनी हेलो कर्यो—"ईनक, ईनक !"

पण ईनक ग्रणबोल।

ग्रैंनी आपरा कपड़ा ढीला करती-करती ईनक रै लारै आयर ऊभगी। खांधा मार्थं हाथ मेलती—"अरे ईनक, बारी में बैठग्यो। सगळी हवा रोकली। मनैं भी तो थोड़ी हवा लेवण दे।"

ईनक चुप।

"तो तूं कांईं रीसाणो हुयग्यो ?"

ईनक चुप।

"साचेई रीसाणो हुयग्यो ! ईनक, तू थारी लाडली ग्रैंनी सूं अपूठो हुयर बैठग्यो। रूठग्यो ?"

ईनक हाल चुप !

ग्रैंनी ईनक रै मार्थं सूं आपरो गाल अडायर खांधा मार्थं भुकयोड़ी बोली—"ईनक, भगवान ईसू री सौगन, मनैं आज ठा पड़ी है कै तनैं रीसाणो हुवणो आवै।"

ईनक मैंनी रा हाथ आपरै माथा सूं अळगा करतो बोल्यो—"थूं मूडु बोर आज ठा पड़ी है ? अर फेर भगवान री सौगन खावै ? फिलिप माथै हूं रीसां बळ जद तूं किसी थाम्यां मीड्योड़ी रावती ही ?"

मैंनी आपरा हाथ पाछा अगरलीक ईनक रै माथा माथै टेकती बोली-"फिलिप सूं यूं लड़ाई करतो जिकी तो म्हारै खातर करती; पण आज थनै म्हा सूं लड़ाई की रै खातर करै है ?"

ईनक माथो नस सामनै मोड़र बोल्यो —"साव-साव बताऊं ?"

"आ ई कोई पूछण री बात है ? मिनख-लुगाई में भी फेर कोई दूड़ र पड़दो बिचाळै रैया करै ? म्हारै ख्याल सूं तो रैवै कोनी । दो न्यारा-न्यारा सरी अेक आतमा हुयर रैवै, अर बारै इणी भांत रैवण में जीवण री सार्थकता है ।"

मैंनी तो आगै बात चालू राखी चावती, पण ईनक बात काटतो बोल "पूछण री बात तो कोनी, पण पूछण री बात है भी ।"

मैंनी आपरी छाती रो भार ईनक रै मगरां ऊपर राखती लुळगी, अर थोड़ो आगै सिरकग्यो ।

मैंनी बोली—"आगै कठै सिरकै है ? जे तिसळग्यो तो हूं कठै हाथ घालन आपां बाळपणै रा साथी रैयोड़ा हा, इण कारण थारै सूं बात करतां हूं संकूं को जे म्हारी केई बात सूं तनै ठेस पूगी हुवै, तो हू सात बार माफी मांगूं, दस मांगू, सौ बार माफी मांगूं । कैवै तो जमी माथै नाक रगड़ूं ।"

ईनक कैयो—"मैंनी, तैं म्हारो कोई कसूर तो कर्‌यो है कोनी, फेर म काई बात री मागै ? जिका रा मन आपस मे नई रळै, बै भेळा रो देखापो क खातर माफी रो ढोंग रच्या करै । थारी 'माफी' सूं भी मनै हिरदै रो अळग झळकतो लागै ।"

मैंनी काठी लिपटगी—"अरे ईनक, तूं इसी बात कैवै, मनै, थारो मैंनी थारी, अर फकत थारी मैंनी नै ?"

"पण मैंनी इण बात सूं सुखी कोनी कै बा म्हारी बणगी, अेक मूरख लुगाई बणगी । बींरै जिसी लुगाई नै तो अेक समझदार री बऊ बणनो चाईजतो हो । पण.........."

ईनक आगै भी की कैवणो चावतो, पण मैंनो बीरै मूंडै आडो हाथ दे दियो—"ईनक, म्हारो काळजो इत्तो करड़ो कोनी कै इसा बज्जर जेड़ा बोलां र मार बरदास कर सकै । मनै इण बात रो इचरज हुवै कै तूं आज निरदयी हुय इण तरै री मार कियां मारण लागग्यो ।"

"नईं ग्रैनी, थारो-म्हारो ब्याव तो ग्रेक संजोग हो, नातर हिरदै सूं तो तूं फिलिप नै चावती ग्रर उणसूं ई ब्याव करणो चावती ही।"

ग्रैनी ईनक रो हाथ झालर बारी सूं मांयलै कानी लियो ग्रर उणरी बगल में हाथ घालनै पिलंग माथै बैठाण्यो। ग्रैनी कनै बैठगी तो ईनक ग्रळगो सिरकतो बोल्यो—"ग्रैनी ग्राज थारो परस मनै सुवावै कोनी। तूं म्हारै सूं बात भलेई कर, पण ग्रड़ मत। म्हारो माथो ग्रबार ठीक कोनी।"

ग्रैनी बोली—"ईनक, तूं कैवै तो हूं पिलग सूं हेटै बैठ जाऊं, तूं कैवै तो कमरै सूं बारै ऊभ जाऊं। परमात्मा म्हारै सूं इसो कोई काम नईं करावै जिण सूं तूं नाराज हुवै। तूं मनै खाली इत्ती बात बतायदे कै ग्राज म्हारी किसी चूक हुई जिण कारण तूं रीसाणो हुयग्यो।" इयां कैयर ग्रैनी पिलंग सूं हेटै, ईनक रै पगां में बैठगी।

ईनक पिलंग सूं हेटै उतरनै उणरी बगल में दोनूं हाथ घालर ऊंची बैठाणी, *ग्रर ग्राप बराबरी में बैठग्यो।*

ग्रैनी ग्रापरो माथो ईनक री छाती मे घाल दियो। बीरै निरमळ कपोळां माथै ग्रांसुवां री धारां चिलकण लागगी। ईनक ग्रापरा करड़ा हाथ ग्रणरसीक ग्रैनी रै गालां माथै फेरनै ग्रांसू पूछ्या, ग्रर कैयो—"ग्रैनी, थारा ग्रांसू मनै निरकपट लागै ग्रर हूं सोचूं कै म्हैं तनै म्हारी मूरखता रै कारण ई दुख दियो। तैं ठीक कैयो। हूं साचेई मूरख हूं।"

ग्रबै ग्रैनी नै याद ग्रायो कै उण रै 'मूरख' सबद माथै ईनक रीसाणो हुयो हो। वा बोली—"ईनक, तूं रीस ना करै। जे तूं मूरख नईं, तो भोळो पक्कायत है— गळी-गवाड़ री सगळी छोरयां ग्रर जुवत्यां म्हारै ग्रणमाप जोबन ग्रर ग्रजोड़ रूप री ईसको करै, ग्रर तूं मनै बूढी बतावण लागग्यो! ग्रा भोळप री बात तो है ई। है तो मूरखाई री, पण मूरखाई कैयां तूं रीस कर लेवै, इण कारण हूं कैऊं कै भोळप री बात है।"

ईनक कैयो—"देख ग्रैनी, फेर तूं इसी बात करै जिणसूं मालम पड़ै कै तूं मनै नईं, फिलिप नै चावै। तैं मनै ग्रबार फेर गुड़लपेटी बातां में मूरख री पदवी देय दी है। ग्रा बात ठीक है कै थारै डील माथै जोबन ग्रर रूप दीसै, पण थारी सगनी घटती हुवै ज्यूं लखावै, नईं तो बजार तईं घूमर ग्रायां सूं थाकेलो थोड़ो ई ग्रावै।"

ग्रैनी हंसी। जोर सूं हसी। ईनक गूंगो हुवै ज्यूं बीरै सामो जोवतो रैयो।

ईनक कैयो—"बेंईं ग्रादमी री बात माथै हंसण रो मतलब है बीनै मूरख गिणनो।"

मैंनी सरम सूं आंख्यां हेटी करली । ईनक बींरी ठोडी भालर आपरै सामनै मूंडो करतो बोल्यो—"क्यूं, ठीक है, म्हारी बात ?"

मैंनी बोली—"जे कोई दूसरो आदमी हुवतो तो अबार तईं आपेई समझ जावतो, पण तनै तो हूं खुद कैसूं जद ई तूं लारो छोड़सी । आपां……"

ईनक री आंख्यां में इचरज भरीजग्यो । बीं कैयो—"आपां, कांई मैंनी ?"

मैंनी सरम सूं माथो नीचो करती बोली—"आपां……दो सूं…… तीन……।"

"हैं मैंनी, साचेई ? मैंनी साच बता ।" कंवर मैंनी नै आपरी सूंठी भुजावां में घालर उणरा होट चूम लिया ।

"हां, अबै ठा पड़ी । तो मैंनी, तूं 'मा' हुवण आळी है !" कंवर ईनक मैंनी रा गुदगुदा गाभा आपरै हाथां सूं दाब्या ।

ईनक री बात सुणर मैंनी आंख्यां हेटी करली । ईनक फेर बोल्यो—"साची बात में सरम कांई बात री ?"

मनी आंख्यां जमीं सूं उठायर ईनक रै सामी करी, पण लाज रै कारण वा कीं बोल नईं सकी । जद ईनक मैंनी रो मूंडो आपरी हथाळ्यां में भालर बींनै उथळो देवण सारू मजबूर करी तो वा बोली—"अर तूं बाप हुवणआळो कोनी कांई ?"

ज्यूं ज्यूं दिन नैड़ा आवै, मैंनी रो पग भारी पड़तो जावै । जिण काम नै वा फुरक सूं कर लेवती अबै उण में भी मेनत री जरूरत लखावण लागगी । और तो और, उठण-बैठण में भी जमीं माथै हाथ टेकण री जरूरत पड़ण लागगी । ईनक मांय-मांय री जिनसां घर रमाल मैंनी लाभर लावै, पण जीव दोरो अर उणरी दुखण है, इर सूं वा भूख हुवां थकां भी थोड़ी भूखी ई रैवै ।

अेक दिन मैंनी कैयो—"ईनक तूं तो रात पड़्यां घरै आवै, इण तईं हूं घर में अेकली रैऊं, म्हारो सरीर नरम है (कंवर आंख्यां नीची करली) तनै ठा है । म्हारी मा री देखरेख तो है ई, पण थारै बिना मनै घबराट आवड़ै कोनी । तूं जे दिन आथम्यां पैलां-पैल आवड़ आवै तो कांई हरज तो कोनी !"

दूजै दिन भोर में जद ईनक कमरै में बड़ण लाग्यो, तो उणरी सासू बारणै रै कनै ई रोक लियो । मांय नै दाई मरोड़ी ही । घड़ी-बीस मिट में छोटै टाबर री ऊंवा-ऊंवा सुणीजी । ईनक रो काळजो उछळतो हो । उणरी सासू बारै आर मुळकार सुणायो—"छोरी हुई है ।"

छोरी री सोभ्यां आगी ईनक आघर अेक मसेणी लाई । बीं मन में सोच्यो—ईनक, थूं गरीब रो जायो है, पण थारा लरका इसा बरसा के साथ रा रईस आरथी

भी थारै सामा भांकरण लागग्या । ठीक है, ब्याव रो जोस हुया करै । श्रेक बार जोस में होस गायब हुया ई करै है, पण श्रबै गाडी नै सागी रस्तै लावणी पड़सी । मर्न कमाई माय सूं थोड़ी बचत भी करणी चाईजै । श्राज श्रा छोरी जलमी है, काल बड़ी हुसी, ईं नै पढावणी है, परणावणी है श्रर ईं रा सगळा श्रेडा काढणा है । इणी तरै, जद टाबरां री लीक सरू हुई है, तो परवार बधता ई लेखो । दो पीसा बचायोड़ा हुसी तो टाबरा रो पाळण-पोसण मिनखाचारै रो करीज सकसी, नईं तो हूं घर श्रंनी रैंया, ज्यूं ई श्रे रैय जासी । पण नई, म्हारै खरचै मे हू कित्ती ई कटौती करदूं, म्हे भलेई कित्तो ई कसालो भुगतला, टाबरा नै श्रणघड भाटै ज्यू तो राखू कोनी ।

ईनक थोड़ी ताळ विचारा मे गम्योड़ो रैयो । फेर उण री सामू ग्रायर कंयो—"श्रबै श्रंनी सूं मिलीज सकै है ।"

ईनक कोड सूं श्रंनी रै कमरै मे गयो, पण श्रंनी पलका हेटी करली । ईनक पूछ्यो "तबियत तो ठीक है, श्रंनी ?"

"हूं ।" श्रंनी नाक मूं श्रवाज करी ।

●●

सपनो

जापै सूं उठर अँनी घर रो काम-काज करण लागगी। ईनक भी आपरो काम करण लागग्यो।

पैली जद ईनक अर अँनी दो-आ-दो हा, तो ईनक रै गयां पछै घर में अँनी सातर दिन सूटणो श्रोखो हुजावतो। अबै छोकरी री बस्ती हुयगी—कदेई रोवै, कदेई मुळकै। अँनी बीनै सूंगावण मे, न्हावण में, गाभा वदळण में, पोतड़िया धोवण में, लाड करण मे, नाच नचावण में लाग्योड़ी रैवै अर अबै लांबा-लांबा सागण श्राळा दिन सोरा सूटण लागग्या।

पण फेर भी ईनक री गैरहाजरी श्रावै दिन अँनी नै अखरती रैवती—डरावणै सागर सूं जूभण नै गयो है म्हारो ईनक ! पाणी रो किसो पतियारो ! रात पड़्या जद पाछो घरे श्रावै तद जीव-में-जीव श्रावै कै श्राज रो दिन तो भगवान सावळ काढ दियो। म्हारी दुनिया में ईनक ई तो चानणो है। ईं रै बिना घर-बार, छोरी अर म्हारो सरीर अर रूप-जोबन सगळा फूटी कौडी सू ई माड़ा है। हे भगवान ! ईनक रै सरीर नैं खम्या पूगै उण सूं पैली तूं मनैं समाळ लिये।

आपरै धंधै मे ईनक इत्तो रूप्योड़ो रैवतो कै केई बार लगोटग केई दिनां तई' बो पाछो घरे ई नई' बावड़तो। उण,रो दायरो दिनोदिन वधतो गयो अर आंतरी-आनतरी अगावा समान पूंगावण मारू ईनक ढूकतो। इण कारण समदर री गुळी बाम आळी दबड़ो, पोळै घोड़ै आळी मछल्या ढोवण री गाडी, ईनक रो सरदरो अर मारवई गू पाखो अर मान पड़्योड़ो घैरो अळगला लोग भी ओळखण लागग्या। ईनक बजार में आवतो, पना मूं सड़ायूंव हुयोड़ै रूंखां गूं छायोड़ी गळ्यां में आवतो अर आपरो मान वेवतो। इत्तो ई नई', जठै पाड़ा री पंगत खतम हुवती, उण सूं आगै पेरायंत मे श्रेक रईस रै घरे भी पूगतो जिगरै बंगलै रै पाटक मार्थ सिव रै वस्नै री श्रेक मूरत ऊभायोड़ी ही, अर जिण में मोर रै आकार मे मू-रूंख री कटाई कर्योड़ी ही। ईनक हरेक गुरुवार नै इण रईस रै घरे पूगतो। जे ईनक नई' पूगै तो बै भूखा रैय जावै। गुरुवार ईमा री मूठी रो दिन हुवण कारण उण घर रा लोग मास-मिट्टी नई' भगता, हा बै मछल्या भावै गुबाणो

करता। इण कारण ईनक वठै पञ्चायत पूगतो, अर बै ईनक रै छव्वै मांय सू आपरी रुची माफक छाट-छांटर मछल्या लेवण री कोसीस करता, पण ईनक रो माल इत्तो सिरैकार हुवतो कै उणरै छव्वै मे पाछो लेजावण खातर अेक भी मछली नई रैंवती।

इण तरै दिन-रात खोरसै मे जुट्योडो रैयनै ईनक पीसा भेळा करण मे लाग्योड़ो रैवतो। पण छोरी रै हुवणै उपरायत भी अैनी रो सूनापणो मिट्यो कोनी। जद छोरी दो बरसा री हुई, तो घर मे अेक और टाबर आयो–अेनड। जाणै ईनक रो मूंडो तोड़र वेप्यो हुवै। *पण टाबर रो काचो डील हुवण कारण नानड़ियै* रा गाल ईनक दई तावड़ सू बळयोडा नई गुलाबी हा, अर अबै ईनक री गैरहाजरी मे इण छोरै री मौजूदगी जाणै ईनक रो छोटो सरूप बणर अैनी नै धावस देवण जोग बणगी। अैनी रै माथै मे जिका ऊंधा-ऊंधा गोट उठ्या करता हा, बारी मात्रा कम पड़गी।

इण नानडियै रै जलम पछै ईनक आपरै धधै मे पैली विच्चै भी बेसी व्यस्त रैवण लागग्यो। ज्यू रात री वगत में ध्रू तारो समदर मे चालती डूंगी नै मारग देखाळै, उणी तरै टावरा रो सावळ, मिनखाचारै रो पाळण पोसण ईनक रो अेकमात्र उद्देस्य हुयोड़ो हो।

ईनक नै जद मालम पडी कै उणरै साकड़ै बदरगाह सू आठ-दस मील रै आतरै अेक बडो बदरगाह खुल्यो है, तो वो वठै काम करणियां मे सगळा सू आगली पंगत मे ऊभग्यो। जळ-थळ दोनूं मारगां सूं बो वठै जावतो और आपरै बौपार नै फैलावण मे पूरो सचेस्ट रैवतो। उण बदरगाह सू अळगी-अळगी जगावा तई मछल्या पूगावण रो ईनक ठेको लेय लियो अर भरोसो हो कै अबै उण रा आछा *दिन घणा आधा कों रैया नी।*

पण उथळ-पुथळ कुदरत रो नेम है। सगळी जिनसा मे फेर-बदळ आवै, उणी तरै ईनक रै जीवण माथै भी असर पड़्यो। अेक बार वो पाल रो रस्सो सावळ बांधण खातर जद मस्तूल माथै चढतो हो, तो अेकाअेक उणरो पग फिसळग्यो अर हाथ ढीलो पड़ग्यो। उणी वगत वो आयनै हेट पड़्यो अर बेहोस हुयग्यो। जद लोगां सांम्यो अर उठायो, तो ठा पड़ी कै पग रो हाड वड़ग्यो। पाटापोळी कर्‌या अर ईनक नै केई दिना तई खाट माथै रैवणो पड़्यो।

जद ईनक इण तरै नाकामल हुयोडो पड़्यो हो, तो अैनी रै अेक टाबर और हुयो—अेक छोरो, पण वो सतमासियो होक ठा नई उण रै सरीर मे जलम सूं ई चिणपिण रैवतो अर इणी कारण उण रै जलम सूं माईता नै हरख री जगां सोच-फिकर ई हुयो।

ईनक मन में सोचतो कै हूं ग्रैंनो लायक हुवूं, वैंनो हाड नंसै तो पाछो वैंनो धंधै में लागूं, कारण ग्रेक-ग्रेक दिन में मुट्ठी-मुट्ठी रुपियां रो घर में घाटो पड़तो हो। इण दरम्यान ग्रेक सीजै ग्रादमी ईनक रो ठेको बिगाड़ै पड़नै हथिया लियो, ग्रर ईनक रा गैत सिरसा मीठा सपना जाणै सूर्य रै रंग में डुबोईजग्या।

उणी बगत ईनक ग्रेक जागतो सुपनो देख्यो—"उणरी ग्रैंनी, लाडली ग्रैंनी, जिण खातर वो ग्रापरी भुजावां रो तकियो दिया करतो, जिकी ग्रापरै घर में रईस लोगां ज्यूं रैवती, टाबरां नै पाळती, उणरो धणी मरग्यो ग्रर इण तरै कमाई रो साधन बंद हुयग्यो। बजार रा पीसा मायं हुयग्या ग्रर ग्राखर ग्रैंनी नै घर खाली करण खातर लाचार हुवणो पड़्यो। छोटा-छोटा टाबरियां नै भाल-भाल बावळिया ग्रर घर सूं बारै बैठाण दिया। ग्रबै ग्रैंनी दर-दर री ठोकरां खावण लागगी। छोरी ग्रांगळी भाल्यां चालै है। ग्रेक छोरो गधोलै चढ़्योड़ो है, ग्रेक बगल में लटकै है। मौसम ठंडो है, मा-टाबर सरदी सूं कांपै है ग्रर भीख मांगता फिरै है। कोई भीख घालै, कोई दुतकारै, कोई फाट्योड़ै गाभां मांय कर ऊभो-ऊभो ग्रैंनी रै डील नै निरखै है, पण देवण नै रामजी रो नाव। ग्रैंनी नै घरां री लुगायां कनै जैर-बुझायोड़ै तीरां सिरसा तीखा बोल भी सुणना पड़ै, पण बा जाणै फटकार-प्रूफ हुयोड़ी है, उणरै चैरै माथै निरासा या रीस रो लवलेस ई दरसै कोनी।" ईनक रो हाथ छाती सूं हेटै ग्रायो, ग्रर ग्रेकाग्रेक उणरो ध्यान पळट्यो।

जदपी ईनक नै सरब-सगतीवान भगवान में पूरण बिस्वास हो कै सगळा काम उणरी मरजी सूं हुवै, उणरी मनस्या बिना पीपळ रो पान ई हिलै कोनी, सगळा सुख-दुख उण री इंछ्या रै ग्रधीन है, पण जद ईनक इण तरै नाकामल पड़्यो रैयो, ग्रर उणरै हाथ रो धंधो, रोटी रो साधन, खुसग्यो, तो ईनक री भगवान माथली द्रिढ ग्रास्था डगमगावण लागगी। ईनक नै लखायो जाणै उण रा माड़ा दिन नैड़ा ग्रायग्या, ग्रर वी ग्रापरै टाबरां रै ऊजळै भविस्य रा जिका सोनलिया सपना देख्या हा, वै सगळा निरासा रूपी मगरमछणी गिटगी। ग्रबै ईनक सोच्यो—"म्हारो तो इण तरै खाट माथै सिड़ता-सिड़तां सरीर छूट जासी। ग्रैंनी ग्रर टाबरां री सुध-बुध लेवणियो कोई है नईं। ग्रनाथां रा टाबर पळै ज्यूं म्हारा टाबर पळसी। ग्रसहाय विधवा ज्यूं ग्रैंनी नै ग्राखी जूण पूरी करणी पड़सी। हे भगवान ! तूं तो गरीबां रो भाई है। दीनां माथै थारो काळजो पसीजै है, फेर तैं म्हारी ग्रा हालत क्यूं करी ? हे नाथ ! हे म्हारा मालक ! तूं म्हारै माथै भलै ई ग्राफतां रो पाड़ पटक दे, मनै मौत रै सागर में न्हाख दे, हूं डरूं कोनी, मूंडै सूं 'उफ' तक काढूं कोनी, पण हे दयाल, हे किरपासागर, तूं म्हारी इत्ती प्रार्थना कबूल कर कै ग्रैंनी ग्रर उणरै टाबरां रो रूं ई खाडो नईं हुवै।

म्है ग्रैनी ग्रर ईनक खातर माडा दिन हा। ईनक रो रुजगार बद, छोटकियो टाबर ताबलो, उणरी टाव-टेव ! ग्राफत रै इण सागर मे ग्रैनी ग्रर ईनक भकभोरीजग्या, पण ग्ररम पिता ताईं बा ग्रापरी सरधा गमणदी कोनी।

निरासा री डूबती जाज नैं ग्रासा रो पोत मिलग्यो। जिण वौपारी रै ग्रठै ईनक सरू में माभी रो हुन्नर हासल कर्यो हो, बो ईनक री ईमानदारी सू सागीड़ो प्रभावित हो। उणरो ग्रेक जाज चीण जावण माळो हो, ग्रर ग्रेक बिस्वासी मिनख री जरूरत ही। बी ईनक नैं याद कर्यो, ग्रर कैवायो कै जे तू चालै, तो थारै खातर नोकरी त्यार है।

ज्यूं तोफान पछै समदर रो लैरां हसण लाग जावै, भतूळियै पछै लोग सागी चाकै ग्रापरै धधै में जुट जावै, बादळ रै छेडै हुया ग्राभै मे भाण पळपळाटा करण लाग जावै, उणी तरै इण नूतै सू ईनक री ग्रधारी रात रो जाणै ग्रन्त ग्रायग्यो ग्रर उणरै जीवण रो सोनलिया परभात जाणै ग्रडीकै है।

ईनक हुकारो भर लियो, कारण जाज रै मालक ग्रा भी कैवाई कै हाल जाज दुरण में जेज है, महनो, दो महना लाग सकै है। ईनक नैं भरोसो हो कै इत्तै तईं बीरै पग री हड्डी पक्कायत सध जासी।

भगवान माथै ईनक री ग्रास्था पैली बिच्चै बधगी—"परमात्मा म्हारी प्रार्थना सुणली ग्रर कबूल करली, नईं तो इसी ग्राछी ग्रर ऊची नोकरी घर बैठा ग्रावण नैं कठै पडी ही ? म्हारै मन री कमजोरी कारण ई म्हैं ग्रैनी ग्रर टाबरा बाबत ऊंधी सैवडली ही। ग्रेक वार चीण जाऊं परो तो ई माली हालत मे मोकळो फरक पड़ जासी। जे तीन-च्यार चक्कर काढलूं, फेर तो कैवणो ई काई ?" धीरै-धीरै हूं ग्राप ग्रेक जाज रो मालक वण जाऊं ग्रर इण छोटै घर री जगा ग्रेक ग्रालीसयान बगलो चिणवाऊं, टाबरा सारू ऊची जगा में पढण रो परबध कर दूं, घर मे नोकर-चाकर राख लूं। ग्रैनी खाली देख-रेख कर लेवै, ग्रर वासण-भाडै, वूस-वुमारी, भाड़ै-भड़कावै रो काम ग्रैनी नैं नईं करणो पडै। पण जे हू गयो परो, तो लारै सू ग्रैनी री सायता कुण करसी ? टाबरा री निगै कुण राखसी ? ग्रानै कीरै भरोसै छोडर जाऊं ? मुसाफरी करनै ग्राया पछै तो सुख रा साज-बाज जुटण लाग जासी, पण ग्रबार वानै ग्रेकलपा छोडण माळो ई तो ग्रेक सासो है।"

ईनक जावण खातर योजनावा बणावण लाग्यो—"म्हारी नाव रो काईं हुसी ? फालतू पड़ी रैवै ग्रर टूटै-भागै, उण सूं तो बेचणी ई ठीक है। पण बेचूं किया ? म्हारी नाव, हूं तनै बेचू क्यिा ? सागर री उफणती खूंसार छोळां माथै थारै पाण ई हू राजस करतो रैयो। थारै परताप ई कदेई घबरायो कोनी, कारण

मनै टा हो कै थारै में असवार हुया पछै मनै लारो कोनी। म्हारी नाव, ज्यूं अेक घुड़सवार आपरै घुड़ै नै जाणै-पिछाणै, राग ढीला दियां घोड़ो किण चाल चालै, रास सारूं्या किसी चाल पकड़ै, लगाम काटी करयां काई फरक पड़ै अर अेड लगायां किसा कमाल हुवै, उणी तरै, म्हारी नाव, म्हैं तनै मांन-मांन सूं जाणी, अर थारै कारण ई मांझयां में अर पेड़ारै-छेड़ारै गांवां अर बसारै मांयै म्हारी मनराई अर बादरी रो डको पीटीज्यो है। पण अंनी अर टाबरां री लारै सूं आयी किंयां धिकसी ? म्हारी नाव, तनै वेचण रै विचार सूं ई म्हारी छाती फाटै, पण म्हारी गरीबी अर अमीरी री रळी, टाबरां री गुमाली री लालस्या मनैं थारै सूं अळगो हुवण नै मजबूर करै है।"

फेर ईनक सोच्यो—नाव वेचर अंनी खातर चाईजनो समान मोलाय लेसूं अर अंनी अर टाबर आपरो कामड़ो चलावता रैसी।

ईनक रो पग जद साबळ हुयग्यो, अर वो घरे आयो, तो अंनी भागनी सामी आई—"अरे ईनक, कद घर छोड़्यो हो, है, पग रै काई हुयग्यो ? निरी लागै दीसती ही, अबै तो पीड़ कोनी ?" फेर अंनी मांदै नानडियै नै ईनक रै सामो कर दियो। वो हाथ पसार्‌या अर बेटै रो वजन कूंतर बींरा होळै-होळै बुक्का लिया। बींरै हाथां-पगां अर डील री बणावट निरखी, अर बाप लडावै ज्यूं बीनै लडायो।

फेर ईनक आपरो पग टूट्यो उणरी सगळी कथा सुणाई। अंनी री आंख्यां आगै तिरवाळा आवण लागग्या। बीं दो-तीन बार ईनक रै जख्मी हुयो हो जिकै पग नै पपोळ्‌यो,अर ईनक नै आपरै काळजै रै चिपायो। इत्ता दिनां सूं आयो, पण आखर ईनक आय तो गयो, आ सोचर अंनी संतोस रो सांस लियो।

ईनक नै चीण तो जावणो है, पण अंनी जद इत्ता दिनां उण नै नीठ निरावळ पायर न्याल हुई ही, तो उणरै आगै अेकाअेक चीण री जात्रा री बात छेड़ण री ईनक में हीमत नईं ही। रात भर किणी तरै ईनक आपरै मनसोबै नै मसोसर राख्यो, पण अबै दरसाया विना पार किया पड़ती।

दिन ऊग्यो, पण आज अंनी नै ईनक रै चैरै मायै अदीठ भाव दीसता हा। बा काम-काज सारू घर में फिरै, अर घड़ी-घड़ी बार मुड़-मुड़ नै ईनक रै मूंडै सामी जोवै, पण काईं पूछण री हीमत नईं पड़ै।

छेवट ईनक कैयो—"अंनी, अठै आ, म्हारै कनै बैठ।"

अंनी लखमी कै अबै कोठै आळो होटै आवण आळी है। बा ठरू फरू हिरणी ज्यूं आयर ईनक रै कनै बैठगी।

ईनक कैयो—'अंनी, अेक बौत बढिया बात कैऊं, फायदै री बात, सुख री ,, आराम री बात !"

भैंनी बोली—"इत्ती जिनसा ग्रेकै सागै कठै सूं ग्रायगी ? ईनक, तूं जलदी कैयदे म्हारो काळजो कर्यांकलो थारै चेरै रै हावभावा सूं उथळ-पुथळ हुय रैयो है।"

ईनक कैयो—"भैंनी, थारो सभाव घौत डरोक है। तनै सावळ में ई कावळ सूझै। तूं टाबरां री मा हुयगी, पण है हाल तूं टाबर-री-टाबर !" ईनक ग्रा बात भैंनी नैं हंसावण सातर कैई ही, पण वा मुळकी तक कोनी।

ईनक भैंनी रै साम्नै गोडा सूं गोडा भड़ायर बैठग्यो। भैंनी माथो हेटो कर लियो। ईनक ग्रापरी हथाळ्यां में भैंनी रो मूंडो झालर ऊंचो करयो, पण भैंनी रा नैण तो झुकयोड़ा ई रैया।

ईनक कैयो—"ग्रचड़्या भैंनी, जे तूं म्हारी बात सुणनी ई चावै कोनी तो फेर हूं कीं सातर कैंयूं ? मनै बात कैवणी ई कोनी।"

थोडी ताळ तईं दोनूं चुप रैया। छोटा टाबरिया गूंगा हुवै ज्यूं मा-बाप सामो जोवता रैया। फेर भैंनी कैयो—"ईनक, तूं बोल, थारै मन री बात सुणा, रोक ना।"

"हां, भैंनी, म्हारी बात डरावणी कोनी, हरखावणी है साचेई भैंनी !" कैयर ईनक भैंनी रै चेरै पासी झांक्यो।

भैंनी थोड़सीक ग्रांख उघाड़ी, पण ईनक री निजर सूं निजर मिलतां ई, झट ग्रांख पाछी हेटी करली।

ईनक ग्रापरी धोण-जात्रा ग्रर बठै सूं धन लावण री, ग्रर दो-तीन फेरा मे जाज रो मालक हुयनै परवार री माली हालत सुधरण री सोनलिया तसवीर भैंनी रै ग्रागै मांडी।

ब्याव री बीठी वैरयां पछै भैंनी ग्राज तईं कदेई ईनक सूं लड़ी कोनी। लड़ी छोड़, कदेई ग्रवरी ई बोली कोनी। पण ग्राज जद ग्रावै बिजोग री बात सुणी, तो घबराहट सूं उण रो काळजियो कापग्यो। ग्राज भैंनी पैलड़ी बार ईनक सूं लड़ी। पण भैंनी री लड़ाई मे नाराजी, करड़ाई, तीखाई, जिसी कोई चीज बठै ही ? वा बोली—"ईनक, म्हारा जीवण-धन ईनक, म्हारो ग्रर टाबरां रो जीवण थारी टेक माथै टिक्योड़ो है। थारो बिजोग म्हारै सूं ग्रेक पळ-छिन सातर ई सैंईजै कोनी। जे भाग मे लिरयोड़ी है, तो घरे बैठां ई धन मिल जासी, नईं तो भलेई किता ई तड़फा तोड़ो, करमां मे ग्राधी रोटी लिरयोड़ी है, तो मानली देवण सिमरथ कोई कोनी। ग्रापानै तो भगवान दाळ-रोटी ग्रादी तरै देवै। घणो लोभ कांईं काम रो ? संतोस मे सार है। लोभ मिनख रो गळो कटावै। परदेस सूं सारजो कमायर लावै, उण सूं घरे कमायोड़ी ग्राधी सार ग्राछी।"

"पगु ग्रैनी, घै टाबर"

ग्रैनी बात काटर कैयो—"ईनक, टाबरां रै भाग में जे ग्राणी लिखी है, तो ग्रांनै साणती कुण देसी ? ईनक, हूं थारै पगां पडू, थारी दासी हूं, थारी चाकर हूं, थारी मरणोपविशा हूं, मनै थारै चरणां में रैवण दे, थारा चरण म्हारै सूं अळगा ना कर।"

ग्रांख्यां ग्रर नाक पूंछतां-पूंछतां ग्रैनी रो रुमाल तर हुयग्यो। वा ग्रापरी फराक सूं ग्रांख्यां पूंछती बोली—"ईनक, शायद म्हारो कोई कसूर हुयग्यो, इणी कारण मनै सजा देवण नै तू विदेस जावै है। हूं म्हारै कसूर खातर थारै सूं ग्रेक बार नईं, सौ बार, लाख बार, माफी मांगूं, तूं कैवै तो जमीं सूं नाक रगड़लूं, पण म्हारा प्राण-वल्लभ ईनक, म्हारै जीव रा जीव, हिरदै रा हिरदा, तूं मनै ग्रर टाबरां नै छोड़र जा ना। म्हारी ग्रातमा कैवै—थारी इण जात्रा रो फळ ग्राछो को नीसरै नी। ईनक, म्हारी बात मान। म्हारी दसा रो विचार कर, टाबरां कानी ध्यान दे, निरमोई ना वण।"

ईनक कैयो—"ग्रैनी, थारी वातां ग्रकैकारी तो कोनी, थारै ग्रेक-ग्रेक सबद में सार है, पण म्हारै चीण जावण री पक्की जाच्योड़ी है, तूं मनै पाल ना, हूं टो जासूं तो सरी।"

ईनक ग्रापरी नाव वेच दी। पीसा वट्या, वांसूं ग्रैनी खातर दुकानदारी रो समान लायो, फेर कमरै रै ग्रेक खूणै में लकड़ी री पाटकड़्यां समोन्तर खण बणाया ग्रर सगळो समान ठसाटस जचायर इयां धर दियो ज्यूं मटर री फळी में मटर हुवै ग्रथवा ज्यूं वीज रै माय कुदरत रै हाथ सूं पौधो, पेड, फळ-फूल सगळा भर्योड़ा हुवै।

इण तरै वसोली सूं, हथोडी सूं, ईनक दिन भर खटाखट-खटाखट करी जद सगळो समान सावळ जचाईजियो। पण ईनक री ग्रा खटाखट ग्रैनी रै मायं में वटीड़ उपाड़ती ही। वीनै इयां लखायो जाणै ईनक ग्रैनी खातर फासी रो चबूतरो चिणै है। ग्रैनी नै वा खटाखट इसी लागी जाणै ग्रैनी मरगी, ग्रर वींरै लारै सोग मे कोई वाजो वजै है।

ग्रैनी की दुकानदारी जचावण रै विचार सूं ईनक ग्राधी रात सूं परबार भी काम करतो रैयो। छेवट काम पूरो हुयो, ग्रर ईनक नै घापर थाकेलो ग्रायग्यो। विछावणां में पुड़ग्यो ग्रर झट ग्रांख लागगी, जिकी फेर दिन ऊग्यां सूं ई खुली।

••

कमावरा खातर

आज ईनक री बिदाई रो दिन आयग्यो। भ्रंनी रात-भर मन मे आळा फेरी के ईनक री जातरा टळ जावै, पण ईनक धुन रो पक्को, हिमताळू आदमी। आपरै खातर उण रै मन में रत्ती भर भी डर नईं हो; हा जद भ्रंनी रो ध्यान आवतो के लारै सू ईं में फोड़ा नईं पड़ै, तो फेर बिचार में पड़ जावतो। पण वो तो परवार रो दाळद दूर करण मार्थ तुल्योड़ो हो। मन में भ्रंनी री हालत रो बिचार आवतां ई वी भगवान नै याद कर्यो—"हे भगवान ! तूं मिनखां में है अर थारै में मानखो है। जद तूं केई री सायता करै, तो केई-न-केई मे प्रवेश करनै ई करै है, केई-न-केई मिनख रै घट में ई बड़ै है। थारी आस, थारै भरोसै मार्थ ई हू भ्रंनी अर टाबरां नै अठै छोड़र बाऊं हू। इण तरै प्रार्थना करतो ईनक भगवान रै ध्यान मे डंडोत करतो रैयो। हे *भगवान, म्हारै मार्थ भलेई तूं बज्जर पटक दै तो ई हूं घबराऊं कोनी,* पण म्हारी भ्रंनी, म्हारा टाबर, भांरो भोळावण तनै है। तूं सगळी दुनियां रो मालक है, सगळै संसार रो बाप है।"

ईनक कैयो—"भ्रंनी, भगवान री किरपा सूं आ जातरा आपा रा सोयोड़ा भाग जगाणसी, तगदीर खोलसी। अर देख, तूं म्हारै सामी भाक, आंख्यां गळगळी ना कर, म्हारी बात ध्यान सूं सुण। म्हारै खातर चूलै सूं राख हटायोड़ी राखे अर बास्ते जगायोड़ी राखे। अरे, तूं निस्कारो क्यूं न्हाखै ? हूं आसूं, पक्कायत आसूं। अरे गैली, तनै ठा पड़सी जिकै सूं पैली ई आय जासू। वा अे भ्रंनी, थारै सूं तो अे टाबर ई चोखा जिका रोवै तो कोनी। तूं स्याणी-समभणी हुयर इया नैण री जोत घटावै ! तू थारा नैण सावळ राखे। हू पाछो आयर फेर थारा नैण कवळ जियां बिगस्योड़ा देखणा चासू। आ नईं हुवै कै तूं रो-रोयर आंरो नास कर लेवै।"

भ्रंनी जद बोलती तो हवामंडळ में बीण बाजै जिसा मोठा सुर बिखरता। पण आज भ्रंनी री बीण रा तार ढीला हुयोड़ा, ढीला ढबळ, कै भकभोर्या सूं खणखणाट भी नईं नीसरै।

फेर ईनक पालणै नै होळै-सीक हींडो दियो जिण मे निमळो नानड़ियो सोयोड़ो हो। ईनक कैयो—"भ्रंनी, जित्तो ई ओ छोटो अर दूबळो है, बित्तो ई मनै

घणो घालो लागै। हूं आगरा सूं पाछो आसूं जिर्ण अो भी बडो हुवासी। म्हारै सामो भागर थासी, हूं उठायर गोदी लेसूं, मुरका लेसूं, फेर म्हारी साथळ माथै बैठायर बिदेसां री बातां कैसूं। थारै गुण-गुणाट री हुनरबा करसी घर राजी हुसी। बतूं, हुसीक नीं अंनी?"

पण अंनी रै मूंडै में आज जीभ को ही नीं।

ईनक कैयो – "अंनी, हूं जावण सूं पैली थारै सूं अेक चीज चाऊं हूं—तूं अेक बार, साची अेक बार ई, म्हारै सामनै मुळका दे।"

जद इण तरै आंगणां सूं भरपूर मोनलिया रावना लेबना अंनी ईनक नैं देख्यो तो वींनैं आपनैं विस्वास थपण लागग्यो, घर ईनक री बातां साची लखावण लागगी। पण बात करता करता जद ईनक मल्लाहां दईं समंदर री घर भगवान माथै भरोसै री बातां करण लागग्यो, तो अंनी नकरायोड़ी-सीक ईनक रै सामो भाकण लागगी। वींनैं आ ठा नईं पड़ी कै वो काईं कैवै घर काईं नईं, ठीक उणी तरै जियां गांव री अेक छोरी भरणैं सूं पाणी भरण नैं आई। घड़ियो तो भरीजग्यो, पण बा सदेई घड़ियो भरण आळै प्रेमी बाबत सोचै, जिको आज आयो कोनी। घड़ियो भरीजर पाणी बारै बैवण लागग्यो, इण री वींनैं ठा नईं।

छेवट बिछड़ण री बेळा नैड़ी आई देखर अंनी हीमत करी, सरधा बटोरी अर बोली—"ईनक, हूं जाणूं हूं तूं स्याणो है, सगळा तनैं समझदार बताणैं, पण तो ई म्हारी अन्तरात्मा कैवै, म्हारा ईनक, आ नैणां नै थारी इण सोवणी मूरत रा दरसण आज बिछड़ियां पछै फेर हुवण रा कोनी!"

ईनक कैयो—"अंनी, जे तनैं भरोसो नईं है, तो आ बात न्यारी है; म्हारी तो आत्मा कैवै कै हूं थारो मूंडो पक्कायत देखसूं।"

"देख अंनी", ईनक कैयो, "म्हारो जाज अठीनैं सूं मंगळवार नै गुजरसी। तूं पाड़ोस मांय सूं अेक दुरबैणी मांगर लियाजे, जिको तूं मनैं देख सकै। मनैं राजी-राजी, हरखीलै नैं जावता देखर तूं थारो सोच-फिकर त्याग देसी, इसो मनैं भरोसो है।"

पण जद वां छेकड़ी घड़्यां माय सूं भी छेकड़ली घड़ी आई, तो ईनक अंनी नैं टाबरां री भोळावण दी—"अंनी, थानै सोरा राखे। दुकान रो ध्यान राखे। दो पीसा कमावण री चेस्टा करे जिकै सूं घर रो आधो धिकतो रैवै। लै देख, म्हारी सोगन अबै तो मुळक, राजी रैईजे मलो। म्हारो फिकर ना करे। अर जे मन में डर व्याप भी जावै, तो वींनैं भगवान रै हवालै कर देईजे। भोर सगळा थक्ट जावै, पण भगवान तो आफत मांय सूं उबारनै बारै काढै। अर देख, हूं जाऊं हूं, तो

वठै किसो भगवान कोनी ? अठै है, जिको वठै ई है । जे हू अठै सूं जाऊं हू, तो भगवान सूं थोड़ो ई गयो परो । अरे ओ संमदर भी तो भगवान रो है । भगवान रो है संमदर ! भगवान ई उण रो सिरजणहार है ।"

अैनी अणबोल, पण उण रै नैणा सूं चोसरा भरै । मूंडो रोय-रोयर रातो अर आख्या जळजळी करली । ईनक ऊभो हुयो । बिलखती अैनी नैं आपरी लांबी अर जोरावर भुजावा रै घेरै मे बाथली । इचरज सू चमगूंगा हुयोड़ा टाबरां रा बुक्का लिया । सगळा सूं छोटकियो रातभर ताव में दड़ादोट पड्यो हो । अैनी बीनै चचेड़र जगाणन लागी, पण ईनक बीनै पाल दी—"अैनी, ईंनै ना जगाण । इत्तै छोटै टाबर नै कांई याद रैसी ?"

ईनक बीरै पालणै रै नैड़ो गयो । अधर-सीक बुक्को लियो । होटां री अवाज भी नईं करी, बीरै जागण रै डर सूं । पण अैनी मांय सूं अेक कतियो लाई अर छोटोडै छोरै रै लिलाड़ कनै सूं केसा री अेक लट कतरनै ईनक नै सैनाणी खातर देयदी । ईनक कैयो—"हू पाछो आमूं, जद ईंनै कंमूं-देस, हू विदेस गयो जद तूं अणसमझ हो, छोटो हो । हू थारै केसा री लट लेयग्यो, आ देख । अर आपरी लट देयर पछै ओ कित्तो राजी हुसी, अैनी ?"

इसी बात कैई अर ईनक आपरी मुसाफरी रै समान री पोट उठाई, हाथ हिलायो अर आपरै मारग टुरग्यो, जाणै धरमसाळा नै छोडर बटाऊ निरमोई ज्यूं टुर जाया करै ।

अैनी पाड़ोस मांय सूं अेक दुरबीणी मागर लाई, अर ईनक बतायो जिकै दिन अैनी ईनक नै देखण री कोसीस करी । बीनै टा बीनै दुरबीणी सावळ जचावणी नईं आवती ही, अथवा दुरबीणी घणी तेज नईं ही अथवा रोवण रै कारण अैनी री आंख्यां कमजोर पड़गी ही, अथवा बींरो हाथ धूजग्यो हो । चावै कांई हुवो, ईनक जिको दिन अर जिकी वेळा बताई, उण माफक बींरो जाज वठै सूं गुजरग्यो । ईनक घणो ई हाथ हिलायो, पण अैनी, लाचार अैनी, बीनै देख नईं सकी ।

ईनक रै गायब हुवनै जाज री आगरी डुबकी तईं अैनी कोसीस करती रैई, पण ईनक दीस्यो कोनी, अर आ रोवनो-कळापी घरे आयगी, जाणै ईनक नै दफणाय आई हुवै ।

पण अबै घरे आयर जे मूंडो लेयनै पड़ जावै, तो किया पार पड़ै । तारै सूं काम चलावण खातर ईनक दुकानदारी रो परबन्ध करनै गयो हो । पण बोपार रा काम धंधा किसी सीधी-सादी लुगाई सूं कद पार पड़ता ? जद कोई गाहक समान मोलावण नै आवतो, तो अैनी साची दाम बतावती । गाहक आपरी आदत रै कारण दर-मोलाई करता, अर साची दाम सूं घणाछोगी कीमत मांडै जद्या सू अैनी नै

पोसावतो कोनी, कारण बा पैंसो घणो, घर गर्ई थोड़ा दाम नईं बचावती। इण कारण ग्राहक अैनी कनै सूं माल मीठ-निराबळ खरीदता अथवा जद कोई दूजी दुकान खुल्ली नईं लाधती, तो अैनी रै कूकता। इण रो फळ ओ हुयो कै थोड़ा दिनां में बिक्री-बट्टा बंद हुयग्या। आखर किणी तरै घर रो काम चलावण खातर अैनी दुकान रो समान घाटो साय-साय नै बेचणो सरु कर दियो। मन में घणो ई विचार आयो कै ईनक आयोड़ो ओळमो देसी, दुकान नै केई तरै चालू राखूं, पण अैनी री मैनत पार पड़ी कोनी।

घर-खरचो चलावण खातर पीसा चाईजै, पण धन आवण रा कारण जड़ीजग्या, आमदनी रो रस्तो रुकग्यो। अैनी टाबरां रो दूध बंद कर दियो। खाली छोटकियै नै दूध पावती, कारण बो मांदो-तातो हो अर हाल अन खावै जिसो हुयो भी कोनी। आप दो टैम री जागा अेक टैम सूं काम चला लेवती। कदेई-कदेई त निराहार ई टंक टाळ देवती। पण मन में आसा रो दिवलो संजोयोड़ो हो–ईन आसी अर उण रै दरसण सूं ई म्हारा सगळा कस्ट कट जासी।

अैनी चावती कै ईनक आवै जितै वा आपरै तीनूं टाबरां नै जीवता रा लेवै; पण मांदोड़ै टाबर री हालत दिनोदिन बिगड़ती गई। बींरा होड़ा-चाकर करण में अैनी पाछ को राखी नी। मा नै टाबर रो होड़ो जिण तरै करणो चाईजै उण सूं किणी भांत कम ध्यान अैनी नईं दियो, पण फेर भी दुकानदारी रै कारए बीनै कई बार टाबर नै छोड़र बिच मे उठर ग्राहक नै सौदो देवणो पड़तो। आ भ हूसकै कै बीनै देखाळण खातर चोखै डाक्टर नै फीसां देवण जित्ता पीसा रो बींरै कन टोटो हो; अथवा रोगी खातर जिकी-जिकी दवायां री जरूरत पड़ै, वै खरीदण में वा असमर्थ ही। कारण काईं हुयो, आ तो भगवान नै ठा है, पण पूरो ध्यान देवणां थका भी, लाम्बी मांदगी पछै, अेक दिन जद अैनी नै ठा ई नईं पड़ी, इण छोटै टाबर री निरदोस आत्मा निकळगी ज्यूं पींजरै मांय सूं पंछी उड जाया करै।

अनासुरती मौकाश

आराम सूं रैवण आळी अंनी अवै मंगतां जिसो जूण पूरी करण लागगी, आ बात फिलिप सूं किसी छानी ही ? पण लोक-लाज रै कारण वो मन नै मसोसर रैय जावतो । केई वार सोचतो-अबार अंनी रै थ्रोड़ी वगत है, बीनै सायता री जरूरत है, जे हूं बीरी सायता करूं तो कांई आट है ? इसा विचार फिलिप रै मन में उठता; पण फेर सायता देवण रा परणाम कांई-कांई निकळ सकै, आ सोचर वो पग पाछा मेल देवतो । छेवट वी मन नै पक्को कर्‌यो—अरे फिलिप । तूं मिनख नांव धरावै अर अंनी रो हेतूलो, अर अंनी इत्ता रोभा देखै ! अेक पीसो बीरै खातर मौर जित्ती कीमत राखै । आज जे तूं ई बीरै आडो नईं आसी तो थारो पीसो फेर कद काम आसी ?—इण तरै आपरा विचार थिर करनै फिलिप अंनी रै घर कानी टुर्‌यो ।

फिलिप घर मे गयो । वड़ते ई कमरो खाली पड्‌यो हो । उण माय सूं मायलै कमरै में गयो, अर अेक छिन खातर बारणै कनै थम्यो । बारणै कनै ऊभो रैयो । बारणो खड़कायो, पण पाछो उथळो नईं । थोड़ी ताळ अडीक्यो, पण कोई जवाब नईं । तीसर थ्रौर कड़ी खड़काई, पण बारणो खोलण नै कोई को आयो नी ।

जद मोकळी ताळ तईं अडीकण रै उपरायत भी कोई बारणो खोलणनै नईं आयो, तो फिलिप अघर-सीक आपेई बारणो खोल्यो, पण बीरा पग बठै ई रुपग्या । लूखा केस, कागसियो फेर्‌या नै हफ्तो भर हुयग्यो हुसी । गाभलिया मैला-कुचेला अर भर-भर कथा हुयोड़ा । नाड़ नीची अंनी बैठी ही, दुख में तळतळीज्योड़ी अबार छोटोड़ै छोरै नै दफणायर पाधरी आई ही । दोनूं बडोड़ा टाबर कनै बैठा-बैठा रोवै । आपरै दुख में वा इत्ती डुब्योड़ी के अबार चावै कोई माय जावो, वा बीरै सामो तक नईं भाकती । जद बीनै वैम पड्‌यो कै कोई आयो है, तो बी आपरो मूंडो भींत कानी कर लियो, अर वा बसका फाट-फाटर रोवण लागगी ।

अंनी नै इण हालत में देखर फिलिप रै जीव मे कांई बाकी नईं रैयो । वो बोल्यो—"अंन, अंनी, हूं अे....अेक....वात....।"

अंनी इण तरै बैठी रैई जाणै बी फिलिप री वात सुणी ई कानी ।

"हा, फिलिप, तूं ईनक रै गुण सूं वाकब है।" कंयर ग्रैनी थोडी-सीक आपरी नस ग्रोर घुमायी। हाल भी बींरो मुंडो फिलिप रै सामनै तो को हुयो नीं, पण ग्रबै फिलिप नै मूंडै रो पसवाड़ो दीसण लागग्यो। वो बोल्यो—"ग्रैनी, बिदेस-जातरा कोई मामूली बात थोडी ई है, ग्रर ग्राडो ग्रादमी तो बिदेस-जातरा रै नाव सू ई धमक जावै। पण ईनक री छाती देख कै वो टुरग्यो, ग्रर हाल पाछो ग्रायो कोनी।"

"हा, फिलिप।" कंयर ग्रैनी ग्रापरी ग्राख्या पूंछी जिकी घड़ी-घडी बार ग्राली हुवती ही।

"पण ग्रैनी," फिलिप कंयो—"ग्रेक बात सोचण री है, ध्यान देवण री है। ईनक तनै छोडर गयो है, नाना टाबरां नै छोडर गयो है; ये बीनै खारा तो लागता को हा नी। ये प्यारा लागता, इत्ता प्यारा, कै थासूं बेसी प्यारो, ग्रथवा थारै बराबर प्यारो उणरै गातर इण धरती माथै ग्रोर कोई कोनी। पण फेर भी वो छोडर गयो परो। म्हारै ख्याल सूं बींनै कोई बूंबो तो ग्राई कोनी, ग्रेकाग्रेक सईद तो उपड़्यो कोनी। ग्राखर गयो तो सोच-समभर, धार-विचारनै है।"

"हां फिलिप।" कंयर ग्रैनी पाछो थोड़ो मूंडो भीत कानी घुमायो ग्रर ग्रापरी ग्राली ग्रांख्यां पूंछी।

फिलिप कंयो—"ग्रैनी, ग्रा भी हूं जाणूं कै लोग सैल-सपाटा खातर भी बिदेसा जाया करै, पण लुगाई-टाबरा नै सारै छोडर सैल-सपाटा करण ग्राळो ग्रादमी ईनक कोनी।"

"हां, फिलिप।" कंयर ग्रैनी रोवण लागगी।

"ग्ररे ग्रैनी, इयां कांई रोवण लागगी ?"

"फिलिप, ग्रबार म्हारो जीव उठ्योड़ो है। म्हारो छोटो छोरो गुजरग्यो, बींनै दफणायर हूं थारै ग्रागै-ग्रागै ग्राई हूं। म्हारी ग्राख्यां ग्रागै बींरो प्यारो-प्यारो मूंडो घड़र काटै। फिलिप, वो इत्तो मांदो रैयो, पण कदेई रोवण रो काम कोनी।"

"ग्रैनी, मनै माफ करै, हूं तो ग्रनागुरतो ई घर में ग्रायग्यो। जे नानड़ियै री मनै ठा हुवती, तो हूं बतळावण करयां बिना थोड़ो ई रैवतो। थारा टाबर जिसा ई म्हारा टाबर। टाबर तो सगळां नै ग्राछा लागै।"

"फिलिप, जद ईनक गयो, तो मनै नानड़ियै री भोळावण देयर गयो। हूं नाराणजी सा मिद हुई कै बींनै जीवतो को राख सकी नी। जद ईनक ग्रासी, तो हूं बींनै कांई कंयूं।"

फिलिप कंयो—"ग्रैनी, दुख री घड़ी में धीरज धारण करयां ई पार पड़ै। जे ग्रादमी दुख सूं भवरायर रोवणो सरू कर देवै, तो रोज रो कोई छेड़ो ई कोनी,

अरज

अेक दिन आडो घालर फिलिप फेर अॅनी रै घरे आयो। अबकाळै बिना संकै बो मांयलै कमरै मे गयो परो। अॅनी बीनै देखर आपरा गाभा झड़काया अर थोडी सावळ बैठती बोली–"आव फिलिप। बी दिन तूं आयो, पण हूं म्हारै दुख सूं इत्ती मारेल हुयोड़ी ही कै थारी बात तो सुणनी बाकी रैयगो, अर हूं म्हारा ई रोवणा रोवती रैई। हा, आज बता, तूं कांई काम आयो हो बीं दिन ?"

फिलिप कैयो–"अॅनी, हूं थारी किरपा रो वरदान लेवणनै आयो हूं। बस और म्हारी कोई चायना कोनी।"

"पण फिलिप, तैं बी दिन आछी लागण बात आज फेर दुसराय दी। म्हारी, अभागण री किरपा चीज काई है ? बींरो मोल कांई है ? बींसूं कांई वणै-विगडै है ? तूं चावै कांई है, म्हारी समझ में आ को आई नी।" कैयर अॅनी आपरी कुरसी मायलो गीदो फिलिप री कुरसी माथै बिछावण नै हाथ बधायो। फिलिप 'नई-नई'" कैयर अॅनी रो झलायोड़ो गीदो आपरै हेटै बिछाय लियो।

फिलिप पूछयो–"अॅनी आज भी ईनक रा समाचार तो नई आया हुवैला ?"
नाड़ हेटी करती अॅनी बोली–"नई फिलिप।"

"अॅनी," फिलिप कैयो,...."म्हारै विचार सूं ईनक टाबरा रो अर थारो घणो सोच करतो।"

"पण फिलिप, सोच करण री तो ईनक री आदत ई कोनी। बो तो मनै भी सोच करण देवतो कोनी।" कैयर अॅनी आज निरा बरसा सूं फिलिप रै सामनै आंख सूं आंख मिलायर झांकी।

"तूं कैवै जिकी बात तो ठीक है अॅनी, कै बो सोच-फिकर री वाता नई करतो, पण आखर बीं री जातरा रो उद्देस्य काई हो ? ओ ई तो, कै टाबरां नै सावळ पढा-लिखायर मिनखाचारै बणावणा जिण सूं कै वै बींरै बिच्चै अर थारै बिच्चै आछो अर सोरो जीवण बिताय सकै। क्यूं, म्हारो बात कूड़ी है ? जे कठैई फरक लागतो हुवै, तो तूं चुप ना रैवे।" कैयर फिलिप अॅनी रै सामनै झांकियो।

जानवरां ज्यूं ढोल मे पागरयोड़ा, पण अणभण्या देवसी, तो बीरो लाख कोसीसा रै उपरायत भी ग्रै टाबर की सीख नई सकेला। इण खातर, ग्रैनी, म्हारी ग्रेक ग्ररज है, जिकी हूं थारै ग्रागै करण नै ग्रायो हू।"

"फिलिप, तूं मनै लजखाणी ना घाल। हू काई जोगी हू, जिको तूं मनै ग्ररज करै। म्हारी नादारी री हालत मे तूं म्हारै सूं बात कर है, ग्रा ई ग्रेक थारी मेंरबानी है, नई तो दुख री वेळा मे नैड़ो ई कुण ग्रड़ै?" कैयर ग्रैनी जमी कुचरण लागगी।

"ग्रैनी, देख ग्रापां टाबरपणै मे साथै रम्योडा हा, ग्रर ग्रेक-बीजै नै ठेट सूं ई सावळ जाणता ग्राया हा। हू तनै ग्रेक बात कैऊं। देख ग्रैनी, तूं नटे ना। जे नटगी तो तनै ईनक रै प्यार री सौगन है। हू चाऊं कै दोनूं टाबरा नै इस्कूल मे भरती करवाय दूं। ग्रैनी, ग्रा इत्ती-सीक भीख ग्रर ग्रा ई मेंरबानी है जिकी हू थारै सूं चाऊं हू।" कैयर फिलिप ग्रैनी रै सामो भाळयो।

ग्रैनी चुप।

"देख ग्रैनी, ग्रा इसी गैरै सोच मे पडै जिसी तो कोई बात ई कोनी। टाबरां री पढाई सूं ईनक नराज तो पढ्रायत को हुवै नी। उलटो वो तो मोकळो राजी हुसी। ग्रैनी, ग्रेक बात तो ग्रा है कै म्हारै पीसै-टकै री कमी कोनी, जिकी तनै ठा है। थारै टाबरां खातर जे हू दो पीसा लगाय दूं, तो म्हारै की फरक पडै कोनी। इण रै उपरायत ई जे थारै मन मे की विचार ग्रावतो हुवै, तो ईनक रै ग्रायां सूं भले ई तूं मनै, थारै जचै तो पीसा पाछा देय दिए। पण ग्रैनी, तूं मनै ग्रबै टाबरां नै भरती करावण दे।" कैयर फिलिप ग्रैनी रै बेटै वाल्टर माथै हाथ फेरण लागग्यो। वाल्टर री बैन मेरी भी फिलिप रै कनै ग्रायर ग्रूमगी, ग्रर बी लाड सूं मेरी नै ग्रापरै खोळै में बैठाणी।

ग्रैनी हाल उथळो नई दियो।

फिलिप कैयो—"ग्रैनी, देख, ग्रै दिसाक सोवणा टाबर है! हां, तो बोल, तू ग्रबै मनै काई कैवै?"

ग्रैनी ग्रासरा नैण भीत बानी करयां बोली—"हू ग्राज म्हारी गरीबी ग्रर सांकड़ भीड़ रै कारण इसी गूणगी ग्रर पूपड़ लागूं हू, कै थारै ग्रागो गू डो करण री म्हारी छाती को पड़ैनी। ईनक रै बिजोग, ग्रर ऊपर सूं नादारी, म्हारी कमर भांग नाखी। जद तूं घर मे ग्रायो, तो म्हारै दुख रो दरियाव उफणतो ग्रर थी म्हारी सरपा तोड़ दी। फिलिप, ग्रबै थारी बात सुण्यां सू म्हारै सरीर रो रंबो-सैंधो तण ई नीसरग्यो। पण फिलिप, ग्रो मनै घणो ग्रसोसो है कै ईनक जीवै है। जद बो पाछो ग्रासी, तो तू थारै गरवै गो बिच ईस नै नकार दिरै। ईनक

स्याणा टावर

दूजे दिन ग्रंनी रै घर आगै सूं निकळती बगत टावरा नै फिलिप हेलो कर्‌यो। भट वाल्टर बारै आयो। फिलिप कागद मे लपेट्योडो कपड़ां रो अेक बंडळ झलावतो बोल्यो—"थारै अर मेरी सातर है।" ग्रंनी माय सूं आई, उणसूं पैली तो फिलिप गळी ई लाघग्यो। ग्रंनी सारै भाजी, पण फिलिप मुडर देखण री चेस्टा करी कोनी। कपड़ा लेवती ग्रंनी सकी जरूर, पण टावरा नै मनाधा रा हुवै ज्यूं कित्ताक दिन राखती? नवा गाभा पैर्‌या सूं टावरा रै चैरा मार्थं गम्योड़ो नूर पाछो बावड़ग्यो, अर दोनूं रत्ती आळा टावर दीसण लागग्या।

वाल्टर पूछ्यो—"मा फिलिप म्हारै काई' लागै?"

मेरी भी बोली—"मा, फिलिप म्हारै काई' लागै?"

दोनां रै मूंडां सूं सागी सवाल सुणर ग्रंनी पैली तो सरमीजगी, फेर मुळकी, अर बोली—"फिलिप साव कित्ता चोखा आदमो है!"

"हां, मा, चोखा तो है, पण म्हारै काई' लागै?" वाल्टर फेर पूछ्यो।

मेरी बोली—"हूं बताऊं कांई' लागै। आपारै लागै फिलिप चाचाजी।"

वाल्टर कैयो—"लागै चाचाजी, ठा पड़ी, हां मा, तूं बता। आ मेरी तो भट बिचाळै बोलण लाग जावै।"

ग्रंनी कैयो—"बैन री वात ठीक है बेटा! अे थारै चाचाजी लागै।"

वाल्टर नई तो कबूल कर लेवतो पण पैली मेरी बताय दियो, इण सूं वाल्टर रै कबूलण री कम जची। बी कैयो—"मा, तूं तो हरेक बात मे मेरी री हा मे हां रळाय देवै। मनै साच बताव, फिलिप साव म्हारै काई लागै।"

"अच्छ्या, जोजफ साव थारै काई' लागै?" ग्रंनी वाल्टर कनै सूं ई न्याव करावण सातर पूछ्यो।

"जोजफ साव? वै तो चाचाजी लागै।" वाल्टर कैयो।

"तो फिलिप साव भी चाचाजी लागै।" मेरी बोलगी।

"अरे तूं ना बोल म्हारी बडी बैन। थारै जित्ती अक्कल तो म्हारै में ई है।

केई रो मौसाण माथै रासएा म्राळो कोनी । बो थारी पाई-पाई उतार देमी । धन रो करजो पाछो उतारीज सकै; पण फिलिप जिकी दया, जिकी उदारता तैं देखाळी है, बा उतरण री कोनी । जे हूं म्हारी चाम री थारै पगरख्यां बणवाय दूं, तो भी इणरो बदळो नईं उतरै ।"

फिलिप कंयो—"तो ग्रैनी, हूं आ समझलूं कै तैं म्हारी अरज कबूल करली, अर हू टाबरां नैं मदरसै घाल दूं ?"

ग्रैनी अबै आपरो मूंडो भीत कानी सूं घुमायर फिलिप कानी कर्‌यो । नैणां सूं नीर भरतो हो जिण सूं ग्रैनी रा गोरा-गोरा गाल चिपचिपा हुयग्या हा । दोठी सावळ जमती नईं ही, पण तो ई ग्रैनी फिलिप रै सामी झांकी, भूमी हुई अर बोली—"फिलिप, म्हारी ओड़ी बगत में तैं म्हारै टाबरां री बांव झाली है, म्हांनै डूबतां नै उबार्‌या है, तो तनै भगवान बचासी, ठाकुरजी तनै सुखी राखसी ।" फेर ग्रैनी फिलिप रै नेड़ी आई, अर फिलिप रो हाथ आपरै हाथ में झाल्यो अर आपरी क्रितग्यता जतावण खातर दोनां हाथां सूं फिलिप रै हाथ नै प्यार सूं मसळ्यो । ग्रेकाग्रेक ग्रैनी री आंख्यां मीचीजगी, सास ऊंचो चढग्यो अर बा फिलिप रो हाथ छोडर लारलै कानी, छोटै-सीक बगेचै में गई परी ।

ग्रैनी रै स्पर्श सूं फिलिप रै सरीर में हळको-सीक बीजळी रो करंट दोड़ग्यो हुवै ज्यूं लखायो । वीं सोच्यो कै हूं सफळ हुयग्यो, अर म्हारो मनोरथ पूरण हुयग्यो । बीरै डील में चौगणी फुरती आयगी, अर वो भ्रकास में उडतो हुवै ज्यूं आपरै घर कानी टुरग्यो ।

••

फिलिप मेरी सामो बिस्कुट करयो। यीं ग्रांख्यां हेटी करली। वाल्टर कैयो— "चाचाजी, ग्रा नईं लेवै, तो मनै देय दो। नईं लेवै जिकै रा नोरा नईं करणा।"

फिलिप हसण लागग्यो ग्रर बो खुंजै माय सूं दूजो बिस्कुट काढर वाल्टर नै फेर दियो। फेर मेरी नै कैयो-'लेयलै बेटी।' मेरी दबी ग्रांख्यां मा सामी भांकी, ग्रर बठीनै सूं जद हंकारै री सैन मिलगी, तो मेरी बिस्कुट लेयर ग्रापरै हाथ में राख लियो। फिलिप कैयो—"खा ले बेटी, हाथ में बिस्कुट खराब हुजासी।" मेरी बात मानली, ग्रर थोड़ो-थोड़ो बिस्कुट तोडण लागगी।

ग्रैनी माय गई, पाणी री गिलास लाई, फिलिप नै थामी, ग्रर वो पूरी गिलास पीयग्यो। गिलास नै धोयर ग्रैनी ठोड़-ठिकाणै मेलर पाछी ग्रापरी जगां ग्रायर बैठगी।

"थे ग्रा बतावो कै था दोना माय सूं घणो स्याणो कुण है?" फिलिप पूछ्यो जिकै सूं पैली वाल्टर उथळो देय दियो—"हूं।"

इत्तै में तो बारी माय सूं बेई टावर दीस्या जिका बस्ता लेयर पढणनै जावता हा। फिलिप कैयो—"स्याणा तो ग्रै टावर है।"

वाल्टर पूछ्यो, "किया चाचाजी?"

"ग्ररे भई, ग्रै पढणनै इस्कूल जावै।" कैयर फिलिप वाल्टर रा हाट चूम लिया।

"इस्कूल जावै जिका स्याणा हुवै? ....तो मा मनै ई इस्कूल भेज, हूं ई पढण नै जासूं, स्याणो बणसूं।" फेर वाल्टर मेरी नै कैयो—"मेरी, जे स्याणी हुवणी चावै, तो तनै भी इस्कूल जावणो पडसी।"

"हां, मा," मेरी कैयो—"हू ग्राप इस्कूल जासूं।"

••

फिलिप वापू

दोनूं टाबरां नै मदरसै घाल दिया, अर मास्टरां नै चोखी तरै ओळावरा देय दी कै हाल सदा-न्यरा है जिगं थोड़ी हियाळी मूं पढावै। पढ़णनै जावण मूं पैली टाबर पेंलर फिलिप री चड़ी पावै। हसी-तमामा करनै फेर मदरसै जावै। दोपारै री घुट्टी में फेर फिलिप री चड़ी पावै। मन-माफ्ती दोपारो करनै फेर पाछा इसकूल जावै। जद घर री घुट्टी हुवै, तो फेर पाछा कळबड़ी मांचकर पावै। फिलिप काम में लाग्योड़ो हुवै, अर ग्रंनी री राजी-खुसी रा समाचार पूछै।

ग्रंनी मूं मिलरण खातर फिलिप रो मन छटपटावतो, पण ग्रंनी नै लोग हल्की नई बंवण लाग जावै इण डर मूं बो ग्रंनी रै घरे नईं जावतो, अर टाबरां सूं समाचार जाणर ई जीव नै धावस देय लेवतो। कित्ती ई बार वींनै ग्रंनी मूं बातां करण री, बीरै कनै बैठण री, रळी भावती, पण लोक-लाज रै कारण बो मन मायं कबजो राखतो अर घर में बड़णो तो अळगो रैयो, ग्रंनी री गळी में ई पग मेलतो कोनी।

पण ग्रंनी खातर बींरो जीव घड़तो रैवतो। ग्रंनी री सायता करणी चावतो, पण कर नईं सकतो। कठेई ग्रंनी ग्रा नईं सोचै कै फिलिप मनै गरीब जाणर म्हारी सायता करै—इण बात रो बडो ध्यान राखतो। बींनै ठा ही कै ग्रंनी रै घर में रोटी रो जुगाड़ कोनी, पण फेर भी खुल्लै रूप में बो सायता करणी चावतो कोनी। जद टाबर घरे जावता तो वारै सागै दो-दो, तीन-तीन सेर ग्राटै री पोटळी बांध देवतो। मेरी नै कैवतो—"तूं ग्रंनी नै कैय दिए कै नवी फसल रा गऊं ग्राया है, ग्रांरी रोटी घणी सवाद हुवै, इण कारण फिलिप चाचाजी ग्राटो भेज्यो है।" इणी तरै घर री गाय रो कैयर मासरण भेज दिया करतो। "बौत फाइन" कैयर कपड़ो भेज दिया करतो। कदेई गुलाब रा पुसब भेजतो—इण बसंत रा ग्रै पैलड़ा पुसब है। कदेई कैवतो—ग्रै जावती बसंत रा पुसब है। केई बार सुसिया भेजतो—इण जात रा सुसिया कठै-सीकई लाधै।

टाळतां थका भी कदेई-सीक तो फिलिफ ग्रंनी मूं मिलण नै पूग ई जावतो। फिलिप नै भरोसो हो कै ग्रंनी ग्रबै बींसूं घुळ-मिलर बातां करसी, हससी, बोलसी पण ग्रा बात नईं हुई। फिलिप रै उपकार ग्रर सनेव रै बोझ मूं ग्रंनी रो हिरदो

इत्तो गदगद अर दब्योड़ो हो के जद फिलिप मिलण नै आवतो, तो अँनी उण सूं पूरी बात ई नईं कर सकतो । वो जद कोई बात पूछतो, तो 'हां' अथवा 'ना' में उथळो देय देवती अथवा जे सरतो हुवतो तो टिचकारी अथवा नत सूं ई काम काढ़ लेवती ।

अँनी चावै फिलिप सूं बात करो या ना करो, अँनी रै टाबरां खातर इण धरती माथै फिलिप सूं बालो दूजो कोई सकस नईं हो । जद वै आपरै घर में हुवता, तो फिलिप कनै जावण नै तोड़ावण लाग जावता । जद फिलिप कनै जावता, तो जोर सूं हाका करता, दड़बड़-दड़बड़ अड़ोदड़ी ओरै मांय पड़ जावता अर आपरी मीठी बाणी सूं फिलिप रै घर नै आणद सूं भरपूर कर देवता । फिलिप रै घर में वै करता ज्यूं हुवतो, बारी इंछ्या रै खिलाफ अेक पत्तो ई नईं हिलतो । घर-धणी जाणै टाबर ई हा, फिलिप तो वांरो मुनीम हो । फिलिप रै किरपाळू बरताव टाबरां रै हिरदा नै इण भात जीत लिया कै वांनै फिलिप बिना पळ-छिन खातर आवड़नो ओखो हुयग्यो, अर आप रै भरपूर प्रेम रै कारण, कांईं ठा कद सूं, वां 'फिलिप चाचाजी' कैवणो छोड दियो अर 'फिलिप बापजी' अर 'बापजी' तथा 'बापू' कैवणो सरू कर दियो । फिलिप भी इण बात रो पूरो ध्यान राखतो कै उण रै बाप-पणै में किणी भात री कसर अथवा कमी नईं रैवै । टाबरां री छोटी-सूं-छोटी सिकायत माथै भी वो कान देर देवतो, अर वांनै अळगी करण री कोसीस करतो । वो टाबरां सागै टाबर बण जावतो । वांसूं कूड़ेई-कूड़ेई रीसाणो हुवतो, फेर पाछो राजी हुवतो, अर जोर-जोर सूं हसतो तथा हसावतो ।

अवै ईनक नै गयै नै दस, पूरा दस बरस गुजरग्या, पण कोई पुरजोक समाचार आवण रो काम कोनी । टाबरां अवै मा नै पूछणो छोड दियो कै कद आसी, अर वै भा ई समझण लागग्या कै फिलिप ई वां रो बाप है ।

••

टाबरां री रळी

सरदी री रुत । ढळतो दिन । टाबर हेजल रै जंगळ में फळ तोड़ण नै जावै । टाबरां नै जावता देख, मेरी अर वाल्टर भी जावण रो मनसोबो बांधर मा कनै गया । वाल्टर कैयो—"मा, आज तो सगळा टाबर फळ तोड़ण खातर हेजल-रूंखां रै जंगळा मे जावै ।"

ढोलियै री निवार खांचती-खांचती पैनी कैयो—"हूं ।" मेरी कैयो—"आपां ई चालां, मा ।"

पैनी फेर कैयो—"हूं ।"

"तो कपड़ा पैरनै त्यार हु जावां ?" वाल्टर पूछ्यो ।

अबै पैनी रो ध्यान पळट्यो । बा सामनै झांकर बोली—"काईं बात है ?"

वाल्टर कैयो—"हेजल-वन हालां ।"

पैनी—"नईं, बेटा ।"

मेरी—"सगळा जावै, मा ।"

पैनी—"सगळां नै जावण दे । आपां रै सगळां री होड थोड़ी ई है ।"

वाल्टर—"पण मा, चालै तो काईं हुवै ? आपां तो कदेई चालां ई कोनी । दूजा टाबर तो ईं मौसम में छुट्टी आळै हरेक दिन जावै ।"

मेरी—"मा, म्हे तो हाल हेजल-वन देख्यो कोनी । इस्कूल मे म्हारी सहेल्यां कैवती कै बै तो गुणाट्यां रा भोळ भर-भरनै लावै ।"

पैनी बोली कोनी, पण ढोलियो बिचाळै छोड़र बा पवलियै ढोलियै माथै बैठगी ।

"क्यूं चालसो नी मा ?" वाल्टर पूछ्यो ।

पैनी चुप ।

मेरी वाल्टर नै सैन करी—"हा, हा, हालसी, हालो, कपड़ा पैरां ।"

दोनूं आपरा कपड़ा पैर-पैरायर पैनी रै ढोलियै कनै आयर ऊभग्या ।

मेरी—"म्हे त्यार हुग्या । तू थारा गाभा बदळ लै ।"

टाबरां रो इत्तो मन देखर ग्रैनी सूं नटीजयो कोनी । बा कपड़ा पैरण लागगी ।

जद कपड़ा पैरनै त्यार हुयगी तो वाल्टर कैयो–"बापू नै सागै ले लेवां ?"

"क्यूं, फिलिप कांई करसी ?" ग्रैनी पूछ्यो ।

वाल्टर कैयो – "मा, फिलिप बापू म्हांनै चोखा घणा लागै । म्हांसूं तमासा करै । बै सागै हुसी तो घणा मजा आसी ।"

ग्रैनी बोली कोनी ।

मेरी कैयो–"म्है बुलायर लावां ।"

ग्रैनी पाल्या कोनी, अर बै दोनूं सैंपूर चाल सूं हांफता-हांफता फिलिप री चक्की पूग्या, जठै आटै सूं धोळो-धप्प हुयोड़ो, संतमाथी ज्यूं फिलिप आपरै काम में जुट्योड़ो हो ।

आप रै कपड़ां रै आटै री छे लागण री परवा करयां बिना ई वाल्टर फिलिप रै मगरां रै बारकर आपरा हाथ पूग्या जित्तो घेरो घाल दियो ।

"अरे मदार कपड़ा-लत्ता पैरनै कियां आया ? कठैई जावण री त्यारी है कांई ?" कैयर फिलिप आपरा हाथ झड़काया, अर वाल्टर रै गाभां मार्थ लाग्योड़ै आटै नै उतार्‌यो ।

वाल्टर फेर फिलिप रै चिपग्यो, अर कैयो–"हां, चालणो है, झट काम छोडो, कपड़ा पैरो ।"

फिलिप वाल्टर रा गाल हाथां में दबायर, थोड़ो मुळकर फेर चक्की रै काम में लागग्यो ।

मेरी कैयो–"बापू, फुरती करो, आपां नै हेजल-बन में हालणो है ।"

"क्यूं–आज कांई है हेजल-बन में ? फेर कदेई हालसा ।" फिलिप कैयो ।

"नईं, बापू, आज हालणो पड़सी ।" मेरी सामनै ऊभर बोली ।

"पण आज म्हारै काम घणो है । लोगां रो पीसणो आयोड़ो है । टेम मार्थ आटो नईं दीरीजसी तो ओळमो आसी ।" कैयर फिलिप आटो तोलण में लागग्यो ।

वाल्टर कैयो–"हां, बापू, हूं जाणूं । थांनै हालणो नईं हुवै जद थे काम घणो, रो मिस कर लिया करो हो ।"

फिलिप हंसर वाल्टर रै मगरां में अेक देखावटी, कस्योड़ो, पण चोट करण मे पोलो-मोक मुक्को लगायो । वाल्टर हंसर भगरां में खाडो कर लियो ।

मेरी कैयो–"बापू, काम तो थोमस करै है, थे हालो परा तो कांई हुवै ?"

मेरी अबै बड़ी हुवण लागगी । फिलिप नै विचार आयो कै नकारो करयां ई री कंवळी भावनावां नै ठेस पूगसी । इण कारण मेरी नै समझायर कैयो–"देख बेटी,

घो दिन्यां काम की वेगी है, पर थेहन्नं आदमी सूं आटो पीसणो, लकड़ा काटणो, आटो तोलणो, थे सगळा काम आवळा सावै आवै कोनी। पर देख बेटी, जद नोकरां रै भरोसै काम छोड देऊं तो सारै सूं घोळमो ई आवै। नोकर मांग्यां आवै तो फेर ई, मांग्यां री सरम सूं, आपरो काम करता रैवै, पर ज्यूं ई बानै पोल लाधै, वै गड़बड़ गोटाळा कर ई देवै।"

"बापू, मीठ तो म्हां मा नै हामणा आगर त्यार करी, पर जद म. हुकारो भर लियो, तो पछै थे अड़ग्या।" कंवर मेरी आपरी परेशानी देखाळी।

धंनी रो नाव सुणतां ई फिलिप रै हाथ मांयली कुड़छी माटै रै ढोल में ई छूटगी। "तो धंनी भी हामसी ?" बी इचरज भर कोड सूं पूछ्यो।

"हां हामसी बापू, थे फुरती करो।" वाल्टर ताकीद करी।

"हणै म्हारो हालणो ठीक को रैवै नी। सायद धंनी रै म्हारो अबै नईं बणै। थे दोनूं ई धंनी रै साथै जावो परा।" कंवर पाछै उथळो आगर दोनूं टाबरां सामो भाळयो।

"अरे बापू, मा नै पूछर तो म्हे अठै आया ई हा। बा तो कपड़ा पैर्‌योड़ी थानै उडीकै, अर थे टाळमटोल करो! बापू, थे चोखा आदमी कोनी।" कंवर वाल्टर फेर फिलिप सूं लिपटग्यो।

फिलिप आपरो ढोल भड़कायो। दूजा कपड़ा पैर्‌या। नोकर नै भोळावण दी—"हूं बजार जाऊं। पीसणो बराबर करतो रैये। घट्टी खाली नईं रगड़ीजै इण रो ध्यान राखे। पीसा-टक्का गिणर गल्लै में घाल दिये।"

मेरी अर वाल्टर दोनां फिलिप रो अेक-अेक हाथ झाल लियो अर करण लाग्या—"हालो बापू, हालो, हालो बापू, हालो।"

फेर हेजल-वन में

आज कित्ता ई बरसां पछै मैंनो नवा गाभा पैर्‌या हा, इस कारण बीनैं आपनैं अपरोगा-सा लाग्या। बा काच रै सामनैं ऊभी, तो हाल बींरैं चेरैं सूं जवानी रो नूर ढुळतो दीसतो हो; पण ईनक री गैरहाजरी में सजधजर निकळण में बींनैं सरम लखाई। जद वाल्टर भागतो-भागतो आयर बोल्यो —"मा, ताळो ढक, बापू आयग्या", तो मैंनी कैयो —"थे तीनूं आगै चालो, हूं आऊं हूं।"

फळ तोडण खातर थेला अर गेडा लेयर टाबर फिलिप सागै टुरग्या। बै चाळीस-पचास पावडा गया जित्तै मैंनी ताळो ढकर हेजल-वन कानी रवाना हुयगी।

फिलिप लारैं झांक्यो। वाल्टर कैयो—"बा देखो, बा आवै मा, मुखमली फराक अर लाल ओढणा पैर्‌योड़ी। बापू, मा आज कित्ती फूटरी लागै। म्है तो इण कपड़ां में कदेई मा नैं देखी ई कोनी। मा तो बोदा-पुराणा गाभा राखै।"

फिलिप चाल थोडी मधरी करदी। मैंनी तो पग आथा धरती ई ही। बा बांनैं पूगगी।

वाल्टर कैयो—"देख मेरी, हूं म्हारैं फळां मांय सूं तनैं अेक ई नईं देऊंलो। तू थारैं न्यारा तोड़, अर भेळा करै।"

मेरी बोली—"भाई तूं मतै ई मनैं न दिए, पण हूं तोडसूं जिका मांय सूं तूं थारैं जचै जित्ता ले लिये। तूं म्हारो भाई है नी।"

वाल्टर कैयो—"बंन हूं तो तमासा करतो हो। आपां दोनूं रळर ई तोडसां अर सागै ई भेळा करसां अर खासां।"

फिलिप वाल्टर रो हाथ झाल लियो—"देख बेटा, पग रपट जावैला, मोच आवैला, म्हारी आंगळी झाल लै।"

वाल्टर अेक बार तो आंगळी झाल ली, पण फेर पाछी झट देणी छोडदी अर आपरी मरजी सूं आग-आगर पाड़ माथै चढणो सरू कर दियो। मैंनी लारैं सूं हेला करै—"वाल्टर, धीरैं चाल।" वाल्टर लारैं झांकर मुळक दियो—"मई मा, अबै हूं बडो हुयग्यो, तूं डरै जिसी कोई बात कोनी।"

जद पाड़ रो आधींटो आयो, तो अंनी हांफगी अर पूरी कोसीस रै उपरांत भी बींरा पग उठणा बंद हुयग्या । बा बोली—"फिलिप, म्हारै डील मांयकर अेकाअेक सण्णाटो नीसरग्यो अर म्हारी सरधा टूटगी । हूं अठै ई थमी जाऊं ।"

"हां, हां, कोई आट कोनी । जगां चोखी है, आराम कर अंनी !" कैयर फिलिप अंनी रै सागै बठैई ठैरग्यो । छोटा टाबर बठै सूं ढाळ में उतरग्या ।

वाल्टर कैयो—"मेरी, देख, ओ झाड़ किस्तो लड़ालूम हुयोड़ो है । पण म्हारो तो हाथ इत्तो ऊंचो पूगै कोनी, तूं तोड़-तोड़र म्हारै थेलै में घालबो कर ।"

मेरी बोली—"ला सूं, मनै गेडो दे । फळ तोड़ण खातर तो आपां गेडो लाया ई हा । हूं आ डाळी गेडै मे अड़ायर धंधूणी देऊं, फेर तूं देख मजा ।"

मेरी धधूणी लगाई अर धड़ाधड़ फळां री बिरखा हुवणी लगाई । वाल्टर अर मेरी खूब फळ खावै अर थेलां मे भरै । अेक पेड़ सूंत लेवै, तो दूजोड़ै मायं ढूकै, दूजोड़ो साफ कर लेवै तो तीजोड़ै माथै ढूगै ।

वाल्टर अर मेरी जियां और भी घणा ई टाबर फळ तोड़ण खातर अर भेळा करण मे जुट्योड़ा हा । वै आपस में बातां करै, अेक दूसरै नै हेलो करै, झोड़-झगड़ो भी करै, इण तरै टाबरां री बोली सूं सगळो हेजल-बन गूंजण लागग्यो ।

अंनी नै याद आयो कै आज सूं केई बरसां पैली, हेजल-बन रै पाड़ री इणी जगां, बा ईनक रै साथै अठै आराम अर आणंद मे बैठी ही । ईनक रै साथै सुन मूं काट्योड़ा बै पळ याद आवण रै कारण ई अंनी रा पग आगै उठणा बंद हुयग्या हा ।

फिलिप अंनी रै कनै तो बैठग्यो, पण बो आ बात बीसरग्यो कै आठै कनै अंनी बैठी है । बींनै बो दिन याद आयो जद, आज सूं केई बरसां पैली, आई बात री चाकरी रै कारण, हेजल-बन में मोड़ो पूग्यो, अर आगै आयर देखै तो उण री प्रेमसी अंनी ईनक रै साथै गळबाथड़ी घाल्यां इणी जगां बैठी है, अर ईनक रो मूंडो अंनी रा लालचुट होठ चूमण खातर झुक्योड़ो है । फिलिप नै याद आयो कै उणरै काळजै मे किसी करड़ी चोट पूगी ही, अर उण चोट री मार छाती में लियां-लियां बो चोर-ज्यूं किण तरै चुप-चाप बठै सूं खिसक्यो हो । उणी बगत सूं ईनक सागै आवण्यो अर बो ईनक सूं न्यारै रैवण्यो हो ।

अंनी आपरै बिचारां में डूब्योड़ी रैई अर फिलिप आपरी उण काळी घड़ी मे ।

थारो बाप थानैं भेजियो क्यों करावतां । इणं में भी बीनैं संतोष नईं हुयो, जद वो विदेशां कमावरण में गयो. मन में ओ सपनो लेयर कै थारो मानोमान हुयर थानूं घर म्हारै ठाकरां में विनय बणाणूं । फिलिप, जिका निरर्थक अर कूड़ा हुवै मिनख रा सपना । ईनक रा माइत्रा आज थारकी री दया साथै पड़ै ।—मन में इण विचार रै आती ई म्हारै मन में सूनवार मलावण लागगी ।"

पंमी री बात सुणर फिलिप पंमी रै मूंढ़ो निरख्यो अर बोल्यो—"पंमी, हूं तनै ग्रेक बात कैवणी चाऊं । म्हारै दिमाग में आ कद सूं है, पण भी मनैं ठा कोनी । हूं किती बार सोचूं कै तनै कैऊं, पण म्हारै सूं कैईजै कोनी । आज, म्हारै लागै है कै म्हारै मन री बात थारै विचळी आवै । पंमी, जे तूं ठण्डै दिमाग सूं सोचसी, तो थारी समझ में आवैई आय जासी कै जिको शख्स दस बरसां पैली गयो, अर गयां पछै जिकै रो कोई सनेशो या समाचार ई आवरण रो काम कोनी, वो जीवतो हु सकै ? थ्रो भाव ई हूमकै कोनी । हां, तो पंमी, हूं म्हारै मन री बात कैवणी चाऊं । अबै तूं मनैं कैवण दे—

"पंमी, म्हारै कनै रुपिया है, पीसा है, नोकर है, चाकर है । चाछै सूं चाछा गाभा पैरणनैं अर चाछै सूं चाछो भोजन मनै जीमण नैं मिलै । इसी कोई भी जिनस कोनी जिकी ग्रेक चाछै ईमानदार मिनख कनै हुवै, पर म्हारै कनै नईं हुवै । अठीनै तूं थारै कानी देख । ना मिनखाचारै री रोटी, ना गाभा । ईनक गयां पछै तूं जूण-सीक पूरी करै । सगळा लोग घूमण-फिरणनै, सैल-सपाटै में जावै, पण थारै खातर आणी अ चीजां मना है । थारी इसी हालत मनैं अरदास को हुवै नी, पण दुनिया रो डर की लागै । मन मे हुवतां थकां भी हूं थारी सायता, करणी चाऊं ज्यूं, कर को सकूं नी । हूं थारै सूं मिलणो चाऊं, थारो मूंडो देखणो चाऊं, थारै सूं बात करणी चाऊं, पण थारै घरे आ सकूं कोनी । लोग कैवै, लुगायां हुंसियार हुवै, अर मिनख रै मन रा भाव लख जावै । हूं सोचूं, तूं ताड़गी हुवैली कै हूं काईं कैवणो चाऊं । आ ई बात, कै ओ काम हुवै कोनी जित्तै तईं आपां ब्याव नईं कर लेवां ।

"अर पंमी, देख—वाल्टर अर मेरी मनै बापू अर बापजी कैवै । पण जितै तईं आपां में अळगाव रैवै, अर आपां ब्याव रै डोरै में बंधर ग्रेक नईं हु जावां, बांरो मनै बापू कैवणो अर म्हारो बांनै बटा-बेटा कैवणो सरासर फालतू अर निरर्थक है । हूं जाणूं हूं अर समझूं हूं कै वै मनै, बाप नै करै ज्यूं ई प्यार करै, अर अर हूं भी बांनै इसा ई समझूं जाणूं वै म्हारा आप रा हुवै । आज तईं म्हारै मन में कदे ई इसो भेद को आयो नी कै अ म्हारा नईं, पारका है ।

'अेनी, जुदाई अर अनिस्चै रा अे दोरा बरस बीतग्या जिका तो बीतग्या, पण मनै पक्को भरोसो है कै अबै, इण ऊमर मे भी जे तू झटपट म्हारै सू परणीज जावै, तो हाल भी आपां वित्ता ई सुखी अर भागसाळी प्राणी बण सका हां, जित्ता भगवान आपरी दुनियां में बणाया है। आपां सूं बेसी भागसाळी दूजो कुण हू सकै ? जठै मिनख लुगाई नै चावै, अर लुगाई मिनख नै चावै, बठै स्रिस्टी रा सगळा सुख पगां में रुळै।

"तूं पूछ सकै है—'किया ?', तो लै सुण। पैलडी बात तो आ है कै म्हारै कनै लिछमी री मुकळायत है। केई चीज रो तोड़ो कोनी। मन मे उठण आळी इच्छावां नै धन रै अभाव मे मारण री जरूरत कोनी। घर मे मावै ज्यू खावो, मुवावै जिमा, बढिया-सू-बढिया कपड़ा पैरो, अर नोकरा माथै हुकम हलावो।

"दूसरी बात आ, कै हूं पैली सूं परणीज्योडो कोनी। जे अेक लुगाई पैली सूं ई हुवै, तो धन-दौलत हुवतां थकां भी, दूजी लुगाई घर मे आया सूं राड़ ई पल्लै पडै। दो लुगायां नै राजी राखणो किसो सैज काम है ? अर दोनां माय सूं जे अेक विराजी रैवै, तो घर री सायंती भग हू जावै।

"तीसरी बात आ कै जे पैलड़ी लुगाई मर जावै, पण लारै नाना-नाना टाबरिया छोड़ जावै, तो बांनै पाळण-पोसण आळो अर वां सूं छातीकूटो करण आळो भी बडो भारी सांसो है। सौक रै टाबरा नै पाळणो तरवार री धार माथै चालणो है। तूं जाणै, म्हारै ना तो लुगाई, अर ना टाबर।

"चौथी बात आ कै जे अबार धणी बूढो हुवै, तो भी हाड गळै बध जावै, उळटो कमार घालणो पड़ै अर हीड़ा-चाकरी करणा पडै। अेनी, आ बात भी म्हारै मे कोनी। हूं थारै खातर भारसरूप कोनी।

"पांचवी बात आ है कै मनै केई तरै रो सोच फिकर भी कोनी। जे सोच है, तो थारो है, अर थारै टाबरां रो है—तूं सुखी कियां बणै, थारा टाबर सुखी किया बणै, आ ई बात रात-दिन म्हारै माथै मे चक्कर काढै।

"आखरी बात आ है कै ब्याव-सगाई में लोग धोखा भी खाय जावै। आपस मे अेक बीजै नै जाणै कोनी, अर सगपण कर लेवै। सगपण करती वगत तो लोग मूंडै मे मिसरी मेलर बात करै, पण जद काम पक्को हू जावै, तो जैर रा तीर छोडण लाग जावै। अेनी, आपां तो आपस मे अेक-बीजै नै ठेठ सूं ई जाणता आया हां। अेनी, हू तनै आज बताऊं हूं कै तनै ठा है जिकै सूं भी पैरो म्हैं तनै प्यार करणो सरू कर दियो हो।

"अबै ई जे ग्रैनी, तूं म्हारै सूं छांटा लेवै, तो आ फेर म्हारै भाग री बात।" कँवर फिलिप ग्रैनी रै सामो उथळै खातर भांक्यो।

ग्रैनी रै चेरै माथै दीनता छायगी, अर वा मधरी वाणी में मधर-सीक बोली—"फिलिप, थारै गुणां रो वखाण करण मे आ लायण जीभ तो किणी भांत सिमरथ कोनी। सैण रै आगै सैण री बडाई करणी भी नईं चाईजै, पण कदेई इसा मौका भी आवै जद मू डामू ड साची बात कैवणी पडै। फिलिप, हूं तनै मिनख नईं म्हारै घर नै उबारण आळो अेक देवदूत समझूं हूं। थारा उपकार बिसरण जोग कोनी। म्हारै डूबतै घर नै तैं बारै काढ्यो है। थारै जिसा दयालू अर कवळै हिरदै रा मिनख धरती माथै जोयां सूं गिणती रा लाधै। थारी दया भूलीजण जिसी कोनी। आपरै ऊपर कर्योड़ै उपकार नै बिसरणो पाप है, अर हूं पाप री भागी बणी चाऊं कोनी। हू आ चाऊ कै म्हारै सूं बणै जित्तो हूं थारो पाछो बदळो उतारूं।"

"ग्रैनी, नै म्हारी बडाई रा पुळ बांध दिया। हूं तो कीं लायक ई कोनी।" कँवर फिलिप आपरी लुळताई देखाळी।

ग्रैनी कैयो—"फिलिप, अेक सिरैकार बीन मे जिका गुण हुवणा चाईजै, बै सगळा थारै में है, अर थारै सूं ब्याव करणआळी लुगाई राजम करसी। फिलिप, भगवान थारो भलो करै, अर म्हारै बिच्चै थारामोचो जिनस तनै इनाम में बगसै, पण हू अेक बात पूछू —"अेक लुगाई दूसर प्यार कर सकै ? तूं आ सोचै कै म्हें ईनक नै प्यार कर्यो, ज्यूं ई हू तनै प्यार कर सकूंली ?"

फिलिप रो सांस ऊंचो चढग्यो। बीं सास छोडण रै बाद में अेक सांचो सांस लियो, अर फेर गुमगुम हुयग्यो।

ऐनी कैयो—"फिलिप, मनै जवाब तो दे। था इसी बात तै काँई सोचर मूंडै सूं थारै काढी ? थारै सूं मनै इसी आस तो को ही नी। वाह रे फिलिप, भली फूटरी बात करी थैं।"

फिलिप दो-तीन मिट लई गूंगो हुवै ज्यूं ऐनी रै सामो भाकतो रैयो, अर बीनै दया समायो आगै पुरस्योड़ी थाळी कैन ई नीमतो हुवै। फेर धीरै धीरै बो कैयो—"ऐनी, था तो मनै ठा है कै हू ईनक री बरोबरी तो कर सकू नी। ईनक आज सूं सतरै-अठारै बरसां पैली थारै सूं ब्याव कर्यो, अर थारी उमर बाळापणो छोडर जवानी मे नीठ गई हुवैली। थारी बा चित-चोरणी सूरत हाल भी म्हारै हिरदै री परतां मांयं मंड्योडी है। बो थारो रंग, बो रूप, बो जोबन, बा मसखरी, अर बा

लाज—इसा गुरा देवतावां री लुगायां में किसा लावै ! पण ईनक बडभागी हो कै थारै जिसी रूप-किरण बी रै ऊपर निछावर हुयगी । श्रेनी, थारै कारण म्हैं म्हारै बापू नैं भी नाराज करया । बै सदेई केंवता—"तू ब्याव कर लै, ब्याव कर लै ।' पण म्हारै मन मे तनैं टाळर कोई दूजी सफल दाय ई नई आवै । बापू मरग्या, अर म्हारै ब्याव री बैं मन मे ई लेग्या । सस्कार री बात, श्रेनी ! पण म्हारै खातर तो थारो प्रवार रो रूप-जोबन मो मद रै प्यालै रो काम करै । ईनक सूं इत्ता बरसा पछै भी जे मनैं थारो प्यार मिल जासी, तो हू सतोस कर मानसूं । मनैं जित्तो प्यार नईं, बीसूं कम करसी, तो ई कोई घाट कोनी, हू इण नैं जित्तो ई कर मानसू ।"

श्रेनी री प्रास्या डर सूं भरीजगी, अर बा चिरळायी-"म्हारा प्यारा फिलिप, थमजा । थोड़ो सोच-जे कदास ईनक आयग्यो, तो फेर ?—पण ईनक प्रावै कोनी, ईनक प्रावै कोनी । म्हारो मन कैवै कै ईनक प्रावै कोनी, पण तो ई फिलिप, अेक बरस ठैर जा । अेक बरस तो कोई घणो कोनी । बगत जावता काईं बार लागै, काल अेक साल बीत जासी । अर साल भर मे हू तो की स्याणी हूजासूं, प्रवार जिको प्रनिस्चै म्हारै माथै में मरयोड़ो है, कै ईनक आयग्यो तो काईं करसूं, बो प्रनिस्चै मिट जासी, अर फेर कोई तरै री रुकावट नई रैसी । फिलिप, इत्तो तूं म्हारो कैयो मान लै—थोड़ो ठैर, थोड़ सोक थमजा ।"

फिलिप रो गळो रुकग्यो । नैणा मे उदासी छायगी, अर आख्या सरम सूं झुकण लागगी । बी कैयो "श्रेनी, इया तो ईनक अर हू दोनूं ई अेक ई बगत सूं थारा चावण आळा अर प्रेमी हा, पण थारी किरपा ईनक माथै घणी, अर म्हारै माथै थोड़ी ही, इण कारण तैं मनैं छोडर ईनक सूं ब्याव करयो । उण जैर रै गुटकै नैं म्हैं इमरत कर नै पीयो अर हूं थारै ब्याव मे सरीक भी हुयो । ईनक नैं गयै नै दस बरस हुयग्या, पण हू इणी प्रास में हो कै कदे-न-कदे तो श्रेनी म्हारै सामी झांकसी । आज थारै सूं खुलर बात रो मोको मिल्यो जद तैं अेक बरस री मौलत घाल दी । श्रेनी, तनैं ठा है, हू तो जिन्दगी ठैरतो ई आयो हू, म्हारै खातर ठैरणो कोई अनोखी बात कोनी, हू थारै खातर थोड़ो और ठैर जासूं ।"

श्रेनी फेर चिरळायी—"फिलिप, अबै हू बचना मे बधगी । मनैं सिरकण नैं ठौड़ कोनी । प्रनिस्चै रो प्रधारो प्राधो हुयग्यो । अेक साल रो बैण करयो है, उण में फरक नईं पड़ै । अेक साल हुया सू हू तनैं म्हारो बैण पूरो करनैं देखाळसूं । फिलिप, अेक बरस जादा तो कोनी ? जादा कायरो है ? मनैं भी तो अेक साल काढणो है । हू काढसूं ज्यूं थारै सूं निकळै कोनी ?"

फिलिप कैयो—"श्रेनी, अबै अेक बरस हुया सू हू फेर थारै सूं मिलसू ।"

थोड़ी ताळ तईं दोनूं बेन-भीतै रै सामी जोवता रैया । फेर जद लाईटां मांय सूं गुंबज री मायली किरणां भी गमेतावणा करती दीसी, तो फिलिप विचार करयो कै रात सामली मैनी रै हक में ठीक कोनी—हाल तो मांय ऊंधी-सूंधी बातां बणावती सर कर देवै । इण रै सिवाय रात में सरदी भी इसी पड़ण लाग जावै कै बा मैनी रै सिमर्थ सीत सूं सपै कोनी । फिलिप ऊभो हुयो । मैनी भी उठगी । "वाल्टर, वाल्टर, मेरी, ये मेरी" फिलिप हेला कर्‌या, अर टावर भागता बेला फळा सूं धड़ाधड़ कर्‌या ऊपर आयग्या ।

"बापू, देखो," वाल्टर कैयो—"म्हैं तो बेनो काठो भर लियो, अर मेरी तो कीं लाई ई कोनी ।"

"वाल्टर, बदमाशी ना कर" मेरी बेनै वाली भाटकती बोली—"बापू, सगळा फळ तोड़्या तो म्हैं ई है, वाल्टर तो सामी बेला में चाल्या है । कित्तो बदमाश है ओ !"

"बापू" वाल्टर कैयो—"म्हारा गुंजा तो हाल खाली है, वे पांच मिट और ठैरो, तो हूं पचार म्हारा गुंजा भर लाऊं ।"

मैनी बोली--"बस बेटा, इत्ता घणा, सिझ्या पड़ै है । रात री सरदी सूं बचणो चाईजै । चालो, झटपट घरे चालो ।"

"तो मा, अबै फेर आपां अठै पाछा कद आसां ?" वाल्टर मा रो हाथ झालर पूछ्‌यो ।

मेरी बोली--"मा ग्रेवली तो आपांनै लावै कोनी, कदेई बापू नै त्यार कर लेसां अर साथै मा नै भी लेय लेसां अर आपां आय जासां ।"

"हा, बैन," वाल्टर कैयो, "तो फेर आपां तो काल ई आसां ।"

मैनी वाल्टर रो हाथ झाल लियो, अर वै पाछा पाड़ सूं उतरण लागग्या ।

जद मैनी रो घर नैड़ो आयो, तो दोनूं टावर ताळै री कूंची मैनी कनै सूं लेयर आगै गया परा अर मांय जायर फळा री पांती करण में रूधीजग्या ।

जद फिलिप अर मैनी घर रै आगै आया, तो बा पग रोक लिया । फिलिप आपरो हाथ आगै करयो अर मैनी उणसूं हाथ मिलायो । फिलिप धीरै-सीक कैयो—"हेजल-वन मे जिकी बात म्हारै मूंडै सूं निकळगी ही, बा ठीक को ही नी । वा थारी निमळाई री घड़ी ही, अरफ हैं थारी निमळाई रो नाजायज फायदो उठायर तनै बचनां में बांधली । अबै हूं सोचूं कै आ सरासर म्हारी भूल ही । मनै थारै सागै इसो बरताव नईं करणो चाईजै हो । पण कोई बात कोनी । भूल रो सुधार भी तो

करीज सकै है। भूल तो कोई नी कर सकै, पण मिनख बो है, जिको भूल नै सुधार सकै। ग्रैनी, हूं मिनख हूं, इण कारण म्हारी भूल रो सुधार करणो चाऊं। देख, हूं तो थारै प्रेम-बंधण मे सदा-सर्वदा खातर बंध्योड़ो हूं, पण थारै खातर कोई बंधाण कोनी। तूं पैली निरबंध ही, ज्यूं ई है। तूं आजाद है, थारै खातर कोई बंधाण कोनी।''

ग्रैनी री आंख्यां सूं टपाटप आसू झरण लागग्या। बा बोली—''फिलिप, तूं तो मनै बंधाण सूं मुगत राखै, पण थारी दसा रो ध्यान करणो म्हारो भी तो फरज है। अबै हूं निरबंध कोनी। बधाण में आयोड़ी हूं।''

००

अ`क बरस बीतग्यो

ग्रेनी घरे ग्रायर काम-काज मे लागगी । टाबरा री पढ़ाई चालू ही । फिलिप री तरफ सू टाबरा रै मिस अथवा दूजै मिस कोई-न-कोई सायता पूगती रैवती, जिण सू ग्रेनी रो काम चलतो रैवतो । ग्रापरो दुख बिसरण खातर ग्रेनी दिन-भर बिलम लाग्योड़ी रैवती ।

ग्रेक दिन वाल्टर कैयो–"मा, तूं बापू सू न्यारी क्यूं रैवै । ग्रौर तो सगळां रा मा-बाप ग्रेकै घर मे भेळा रैवै, पण तूं ग्रर बापू दोनूं न्यारा-न्यारा रैवो ! हूं ग्रर मेरी थारै कनै नो रैवणो चावा ग्रर बापू कनै भी रैवणो चावा, पण थे तो दोनूं न्यारा-न्यारा रैवो, जद म्हे ग्रबै कीरै सागै रैवा, बापू सागै क थारै सागै ?"

ग्रेनी कैयो–"बेटा, तनै पूरी ग्राजादी है, तूं थारै जचै जिकै रै सागै रह, तनै सुहावै जिकै रै सागै रह ।"

"मा ई तो ग्राफत है, मा ! मनै तूं तो इत्ती सुहावै कै थारै खोळै में सूयां पछै मनै रोटी जीमणी भी याद को ग्रावै नी । पण बापू (फिलिप)? बापू तो म्हांनै इत्ता चोखा लागै, इत्ता चोखा लागै कै तनै काई बतावा । जे तूं रीस नईं करै, तो बापू म्हानै थारै सू ई चोखा लागै । देख, ग्रबकै म्हारै कपड़ा किसाक फूटरा सीड़ाया है !"

मेरी, जिकी कनै ऊभी-ऊभी वाल्टर री बाता सुणती ही, बोली–"मा, मनै बापू सागै तो घणाई चोखा, घणा ई चोखा है, पण सगळां सूं बेसी चोखी तो तूं लागै । थारै सू ग्राछो ग्रौर कोई कोनी ।"

टाबरा री बाता सूं ग्रेनी रा मनोरंजन हुवतो हो, ग्रर ओ'र सराव भी हुवतो हो । बाता सुणता पछै बा गुमसुम हुयर गैरा विचारा मे डूबगी । फिलिप रा सबद याद ग्राया–"हूं तनै याद दराऊं कै तनै टा है जिकै सू ग्रो दैली म्हैं तनै प्यार करणो मना कर दियो हो ।"

ग्रेनी मन मे कैयो–'फिलिप, ज्यूं हूं निरभागण हूं, ग्रर बिणै रा दिन तोड़ूं हूं, इणी भात थारै ई करमा मे लिखो भोगणो ई लिखोड़ो होसी ।' ग्रेनी गोदा मे माथो पकड़्या दुखै हाला बैठी ही ।

इण तरै जद ग्रंनी उधेड़-बुण में लाग्योड़ी ही, उण री मा ग्रायगी । मा बोली–"ग्रंनी, तूं ग्रे इयां गुमसुम रैसी तो थारी खोपड़ी खराब हू जासी ग्रर फेर ग्रा टाबरां नै कुण सामसी ? बूढ़ै-वारै म्हारै गळै बंध जासी । म्हारी ग्रवै सेवा ग्रावण री ग्रर हाजरी भरण री ऊमर थोड़ी ई है । ग्रर हूं ग्रवै कित्ता'क बरसां री ? पाकै पान रो कांई भरोसो, ग्राज झड़ै ग्रर ग्रबार ई झड जावै ।"

"पण मा, हूं कांई करूं ? जद ईनक याद ग्रावै, बींरा नूं ठा भुजदंड याद ग्रावै, बीरी निस्कपट बातां याद ग्रावै, ग्रर बीरो प्रेमपूरण बरताव याद ग्रावै, तो हिरदै मे उथळ-पुथळ मच जावै । हूं जीव नै जमावण री कोसीस करूं, पण ग्रो चित ग्रड़वी घोड़ै दांई लगाम तोड़ावण लाग जावै ।"

मा कैयो–"हूं थारी सगळी बातां मानूं । ईनक रा गुण ग्रापां ई नईं, सगळो गांव गावै, पण मरयोड़ै लारै मरीजै तो कोनी । जीवै जितै नै सरीर राखण खातर सगळा ई काम करणा पड़ै ।"

ग्रंनी–"मा, तूं सोचै है कै ईनक कायम कोनी ?"

मा–"बेटी, जद दस बरस बीतग्या ग्रर हाल बीरा की समाचार ई कोनी, फेर तो हार खायर मानणो पड़ै कै बीरो सरीर ...।"

ग्रंनी–"मा, ईनक म्हारै खातर बिदेस गयो, म्हारै टाबरां खातर गयो । म्हानै सोरा करण खातर गयो, नातर कमाई रो तो ग्रठै ई घाटो को हो नी ।"

इयां कैयर ग्रंनी ग्रापरी ग्रांख्यां पूंछण लागगी । मा ग्रंनी नै ग्रापरी छाती रै लगायर धीरज बधावती बोली–"देख, फिलिप तनै ठेठ सूं चावै ग्रर तूं फिलिप नै जाणै । फिलिप हाल ब्याव भी करयो कोनी, कंवारो है । म्हे सुणी कै बो थारै खातर कंवारो है, ग्रर थारै सूं ब्याव करणो चावै भी है । क्यूं ठीक है या बात ?"

ग्रंनी बोली कोनी ।

"म्हारै ख्याल सूं तो फिलिप सूं ब्याव करण मे ई सार है । ग्राखर ग्रडीकण री भी तो ग्रेक हद हुवै । ग्रावण ग्राळै रो सनेसो ई कोनी, ग्रर तूं दस बरस बीतग्या, हाल बावळी हुयोड़ी बैठी है । ग्रा बात ठीक कोनी । ग्रंनी, थोड़ो समझ सूं काम लै ।" कैयर मा बेटी रै गाल सूं ग्रापरो गाल चिपायो ।

ग्रंनी कैयो–"मा, थारी बात म्हारी समझ में ग्रावै, पण तूं मनै ग्रा बता कै ग्रे बदास ईनक रो सरीर कायम हुवो, ग्रर बो पाछो ग्रायग्यो, ग्रर बो मनै ग्रापरै घर मे नईं, केई दूजै रै घर मे देखी, तो बीरो हालत रो तूं ग्रंदाजो लगा सकै ? जिकै सखस म्हारै खातर घर-बार छोड समदर में माथो दियो, बीनै हूं दगो देऊं, तो ग्रा बात थारै जचै ? बोल म्हारी मा !"

"जणै कोनी।" मा कैयो, पण फेर भी अनिश्चित रै कारण निश्चित नै ठुकरावण में म्यानय कोनी। ईनक अनिश्चित है, फिलिप निश्चित है। समै री साई निश्चित नै भी अनिश्चित कर देवै। पर जोर कांई चलै? वगत देखर चालणो पड़ै।"

इण तरै ईनक री बात मानतो रैवती, पर फिलिप रा बोल कै वो ग्रैनी नै ठा पड़्यां पैली सूं ई वींनै प्यार करतो ग्रायो है, ग्रैनी रै कानां में बराबर गूंजता रैवता।

वाल्टर ग्रर मेरी इस्कूल जावतां बगत फिलिप बनै जावता, पाछा ग्रावती बेळा भी मिलता ग्रर ग्रापस में हसना तथा तमासा करता। वाल्टर केई वार कैवतो-"बापूजी थे ग्राजकळै घरै ग्रावो कोनी, मा सूं रीसाणा हुयोड़ा हो?"

फिलिप हसण लाग जावतो ग्रर लाड में वाल्टर रै मगरां में जोरदार मुक्को जमा देवतो पण उण री चोट हळकी हुवती इण कारण वाल्टर जोर-जोर सूं हंसतो।

ग्राज जद ग्रैनी ग्रापरै टाबरां नै पढाई बाबत बातां पूछती ही—"किलास में कित्ता टाबर है, कित्ता कच्चा है, कित्ता हुंसियार है, इस्यान कद हूसी—" उणी बगत फिलिप ग्रायग्यो। ग्रैनी फिलिप खातर मूढो सिरकावती बोली—"लै बैठ फिलिप।" फिलिप चुपचाप बैठग्यो।

मेरी ग्रर वाल्टर नैं फिलिप पीसा देयर कैयो—"जावो, बजार सूं ग्रेक मजबूत थेलो खरीद लावो, वडो सारो, ग्राज फेर ग्रापां हेजल-वन चालसां, ग्रर बठै सूं फळ घालर थेलो भर लासां।"

दोनूं टाबर बारै गया परा।

ग्रैनी पूछयो—"ग्रठीनै कठै गयो फिलिप?"

फिलिप—"थारै कनै ई ग्रायो।"

ग्रैनी—"कोई खास काम?"

फिलिप—"काम बतावणो बाकी रैयग्यो?"

ग्रैनी—"फिलिप, माफ कर, मनै याद कोनी।"

फिलिप—"ग्रा भूलण री बात है ग्रैनी!"

ग्रैनी—"जद ई तो हूं माफी मांगूं हूं।"

फिलिप—"याद कर ग्रैनी! ग्रापां री बात याद कर।"

ग्रैनी—"पण ग्रापां रो तो साल भर रो वैण हो?"

फिलिप—"तूं ठीक कैवै ग्रैनी!"

ग्रैनी—"तो फेर वैण मायं कायम रैवणो चाईजै। ऊंतवाळ में बावळो नईं बणनो चाईजै।"

फिलिप—"ऊतावळ ? किसो ऊतावळ? कुण करै ऊंतावळ ?"

ऐनी—"तो किसो ग्रेक बरस पूरो हुयग्यो ?"

फिलिप—"तनै सक लागै ऐनी ?"

ऐनी—"मनै तो काल रीसी बात लागै ।"

फिलिप—"लागै है, पण साल तो पूरो हुयग्यो ।"

ऐनी—"साल हुयग्यो ? वडो भारी इचरज है !"

फिलिप—"इचरज री बात कोनी । जे सुधार्‌या फेर पक्गी है, तो पक्कायत साल हुयग्यो । म्राव बारै म्रा, म्हारै सागै हालर देखलै, जे भरोसो नई' हुवै तो ।"

ऐनी बोली—"फिलिप सुधार्‌यां रो कांई देखू' ? घणी ई चीजां देखणी है, किसी देखू' ? तू' म्राप समझदार है कै फैसलो करती वगत मनै कित्ती सोच-बिचार री जरूरत है । पण फिलिप, तू' डर मत, फैसलो तो म्हारै पैली सू' ई करयोड़ो है, फेर भी तू' मनै, फिलिप, तू' मनै....म्रेक मईनै री मोलत म्रौर देय दे ।"

जद ऐनी रै घरै म्रायो हो, तो फिलिप रो मू'डो म्रासा री लाली सू' पळ-पळाट करतो हो, पण मोलत मांगर ऐनी बींरी म्रासावां नै जाणै म्राडै मे धूर दी । बी कैयो—"ऐनी, जियां तू' राजी है, हू तो बियां ई राजी हूं । थारै जचै जित्ती टेम तू' लेय लै । तू' थारी मरजी री राणी है, मनै उजर करण रो कोई हक कोनी । जे मईनै री जगां तू' दो मईना कैवती, तो भी हू तो मजूर कर लेवतो । मंजूर करण सिवाय म्हारै कनै दूजो कोई उपाव भी तो कोनी ।" म्रै सबद कैवती वगत सरावो रै दाई' फिलिप री जबान लड़खडावण लागगी ।

फिलिप री धूजती म्रर गळगळाती बाणी मे इसो दरद हो कै उण नै सुण्यां पत्थर-हिरदो भी पिघळ्यां बिना नई' रैवै । ऐनी जद फिलिप रा धीरज-भर्‌या बोल सुण्या, तो दया रै कारण बींरा नैण जळ सू' छलीजग्या, पण बीं मू'डो फोरनै म्रांस्यां पूं'छनी म्रर फिलिप नै ठा नई' घाली ।

"कोई बात कोनी, ग्रेक मईनो म्रौर सई ।" इयां कैयर फिलिप हाथ मटकाया, पग घींसतो-घीसतो गयो परो ।

ग्रेक मईनो बीतग्यो पण फिलिप पाछो म्रायो कोनी । ग्रेक म्रौर बीतग्यो, तद ऐनी रै बारणै म्रागै म्रायर डेर ऊभग्यो ।

"ग्रेक मईनो हुयग्यो फिलिप ?" ऐनी इचरज सू' पूछ्यो ।

"ग्रेक मई', दो ।" फिलिप मधरै सुर में कैयो ।

"म्हारी सोचन, फिलिप ?"

"तू' कैवै जिकै री, ऐनी !"

"देख फिलिप, म्हारै कैण में तो फरक पड़ै कोनी, पण तूं म्हारी बात ठेठ सूं मानतो ग्रायो है, थोड़ी-सीक ग्रौर मानलै ।"

"बोल, ग्रैनी ।" फिलिप कैयो ।

"फिलिप, थारै घर में हूं कैनी बार पग धरगूं । हूं चागूं कै हरख-कोड सूं आऊं । पण हाल म्हारो मन हरख-कोड री हालत में ग्रायो कोनी । फिलिप, तूं मनै ग्रेक मईनै री मोलत ग्रौर दे सकै कांई ?" कंवर ग्रैनी सरम सूं नैण नीचा कर लिया ।

"थारी जे मरजी ग्रा ई है, तो फेर म्हारी इनकारी रो सवाल ई कोनी । पण ग्रेक बात हूं कैऊं—तूं भलै ई म्हारै घर में चालती हरखा ना, म्हारै घर री ईंट-ईंट, म्हारै बाग रो पत्तो-पत्तो थारै ग्रावण री ग्रडीक में ग्रांख्यां बिछायां ऊभा है । बो सोनलियो सूरज कद ऊगसी जद कै तूं वांरी इंछ्या पूरसी ?"

"फिलिप, तूं स्याणो है, ग्रेक मईनो । बस ग्रबै कदेई मांगूं कोनी, ग्राखरी मांग है—ग्रेक मईनो ।"

"म्हारै घणो ई मटाव है । जित्ता बरस काढ्या है ग्रबै तो बित्ता मईना ई कोनी । काल ग्राय जासी ग्रेक मईनो ।"

जद ग्रेक री जगां दो मईना बीतग्या, तो फेर ग्रेक दिन ग्रैनी रै ग्रांगणै में फिलिप ग्रायर ऊभग्यो । ज्यूं बौरै नै देखर करजायत भेळो-भेळो हुवै ग्रर निजर बचावै, इणी तरै ग्रैनी फिलिप नै देख्यो-ग्रदेख्यो करण री कोसीस करी । फिलिप बिना कैयां ई तिपाई माथै बैठग्यो ।

ग्रैनी सामनै ग्राई, बोली—"फिलिप, तूं ग्रेक कूड़ी लुगाई नै थारी वऊ बणावणी चावै कांई ? हूं थारै ग्रागै कित्ती बार कूडी पड़ी हूं ।"

"कोई बात कोनी" फिलिप कैयो, "ग्रबै तो ग्रळगाव रो समो कटग्यो, ग्रर सुख री बेळा ग्रायगी, ग्रापां नै भगवान रा ग्राभारी हुवणा चाईजै ।"

"फिलिप, तूं म्हारो है, हूं थारी हूं ।"

"ग्रैनी, हूं तो थारो हूं, ठेठ सूं ई थारो हूं, पण तूं हाल भी म्हारी कोनी । कैयर फिलिप रुमाल सूं ग्रापरी ग्रांख्यां पूंछी, ग्रर गळै में खरखराट ग्रायग्यो, इण कारण गळो साफ कर्‌यो ।"

"नईं, फिलिप, तूं ग्रा बात ना कह, थारै मूंडै सूं जद इसी सुणूं, तो म्हारै काळजै रा टुकड़ा-टुकड़ा हुवण लाग जावै । पण तनै ठा है—म्हारै माथै ग्रबै दोलड़ी जिम्मैवारी है—ग्रेक तो ग्रा कै हाल हूं ईनक रो घर संभाळ्यां बैठी हूं, ग्रर दूजी ग्रा कै तनै म्हारै ब्याव करण रो बचन दियोड़ो है । फिलिप, तूं म्हारो है, हूं थारै ग्रागै पल्लो बिछायर भीख मांगूं कै ग्रेक मईनै री मोलत तूं मनै फेर देय दे । ग्रर

जे तूं मन में पायो जावै, तो हू अवार ई थारो कैयो करण नै त्यार हू ।" कैवता-कैवता ग्रेनी रै मूंडै माथै पसीनो आयग्यो ।

फिलिप चुप ।

"फिलिप", ग्रेनी कैयो—"रीस आयगी, म्हारै ढोठपणै माथै ?"

'ग्रेनी", फिलिप कैयो—"थारी वात मायै मनै आज तई तो कदेई रीस आई कोनी, अर हूं सोचूं कै फेर आवै भी कोनी ।"

"तो फेर म्हारी अरदास, फिलिप ?" ग्रेनी पूछ्यो ।

"ग्रेक नई, तूं दो मईना लै, ग्रेनी, तूं सावळ सोच-बिचार नै कदम राखे । हाल भी थारै मायै कोई बधाण कोनी । तूं खुल्ली है ।"

••

पाटा गजट

मंनी रा टाबर फिलिप री कळचक्की जावै । फिलिप बांनै इस्कूल भेजै, बारो खरचो ओडै-अै बातां बन्दरगाह रा सगळा मिनख-लुगाई जाणन लागग्या । फिलिप मंनी रै घरे कदमकाळ ई जावतो, पण आ खबर भी दानै लोगां रै कानां में पुग जावती । बै हेजल-बन में गया इण बात री भी सगळै चरचा हुयगी ही । आ भी लोगां नै ठा ही कै मंनी रै घर रो खरचो फिलिप चलावतो हो । 'मंनी' अर 'फिलिप' गांव रै लोगां री चरचा खातर अेक चोखो विसै हाथ आयोड़ो हो । जद कदेई चोगाळ में च्यार मिनख भेळा हुवता, तो इणी बात री चरचा चालती, अर सगळा जणा आप-आपरी अक्कल सारू विचार परगट करता ।

अेक दिन री बात, जद घणासारा लोग भेळा हुयोड़ा हा, अेक जणो बात छेड़ी—"ईनक लाई किमोक भलो आदमी हो ! आपांरै गांव रो नांव हो । अठैरी-वठैरी जगावां में ओळखीजतो हो ।"

दूसरो बोल्यो—"अरे भाई, पीसो गळो कटावै । ईनक सोच्यो-मतरती बण जाऊं—इणी लोभ में घर सूं निकळग्यो हो, पण घर आळी लुगाई अर टाबर ई हाथ मांय सूं निकळ गया । लोगां कबजो कर लियो ।"

तीजो—"इया कबजो कर लियो जिको कोई तमासो है ? लुगाई रो मन हुयां बिना मिनख री बापड़ै री औकात ई कांई है ?"

चोथो—"थारी बात मना साची है । जे लुगाई रो मन नईं हुवै, तो मिनख अनै ई किसो ई माथो पटकर रैय जावो, बा थीरै आळ में फसै ई कोनी । पण जे लुगाई आप मर्ई-बीनी हुवै, तो फेर कांई कैवणु-सुणन री बात कोनी ।"

पैलो—"भई, मंनी बापड़ी लुगाई तो चोखी ई है । कदेई मांड ऊंची नजर बापणी देखी कोनी ।"

दूजो—"बस, बस रैवण दे भाया, म्हारै कनै सूं कांई पोथी बचवावै है ?"

तीजो—"हां भायला, थारै सूं कांई छानों है ।"

दूजो—"म्हारै सूं कोई बा छानी न कोई फिलिप छानो । पण भाया रो कांई लियो ? फ्नै ई बच्चां नै और राखो करण दो । भाया रै घर सूं कांई जावै ?"

तई ईनक नईं भासी, फिलिप नै भांसापट्टी में राखसी, अर जद वो आय जासी, तो फिलिप नैं घर रो मारग बताय देसी।"

चौथो—"इत्ता बरस बीतग्या अबै ईनक रै आवण री आस राखणी तो मूरखता है। म्हारै ख्याल सूं तो दोनां री पटड़ी हाल बैठी कोनी, नातर भाज तई में कदेई रो ब्याव हू जावतो।"

पैलो—"अरे भाया, ब्याव में वो मजो थोड़ो ई है जिको प्रेम करण में हुवै। ब्याव तो म्हारो हुयोड़ो है, पण देखूं कै ब्याव काईं छातीकूटो मोल लेय लियो। टाबरां री मा हुयगी, काढूं तो ई कठै काढूं ?"

तीजो—"आ ई बात है। फिलिप आप बडो रंगबाज आदमी है। वो बागां रो भंवरो है, आछा-आछा पुसब देखर मन-रळी पूरै। औस्था आयगी, पण अंनी रो जोबन हाल ताजो है। जित्तै तई आ ताजगी रैसी, फिलिप अंनी रो लारो छोडै कोनी।"

चौथो—"इत्ता-इत्ता बरसां तई कोई फालतू लगवाड़ रो कायदो थोड़ो ई हुया करै। म्हारै बिचार सूं तो आनै पाच बरसां पैली ई ब्याव कर लेवणो चाईजतो हो, पण परमात्मा आंनै इत्ती अक्कल ई दीवी कोनी ज्यूं मालम पड़ै।"

दूजो—"म्हारै ख्याल सूं तो आंरो ब्याव दस बरसा पैली हू जावणो चाईजतो हो, पण हाल ई अं तो पोलपट्टी में ई काम चलाय रैया है। अजीब खोपड़्या है आंरी भी! अजीब काईं गैली खोपड़्यां है। घर री अक्कल नईं हुवै, तो फेर दुखां रा किसा टोटा ?"

पैलो—"तूं मूरख है। दस बरसां पैली कोई हुया करै ? इयां काईं ईनक रै जावतै ई ब्याव कर लेवतो काईं अंनी ?"

तीजो—"मनै तो केई बार बिचार आवै कै आ बात काईं है। रात री इग्यारै-बारै सोचता-सोचतां बज जावै, पण अंनी-फिलिप री आडी रो हल हाल समझ मे आयो कोनी।"

दूजो—"फिलिप अंनी सूं प्रेम तो करै, पण अंनी तो लखणां री लाडो है नी। फिलिप नै अंनी रै आचरण में डबको लागै है। वो पूरी तपास कर्‌यां पछै ब्याव भलै ई करो, इयां तो अंनी रै चक्कर में चढण आळो कोनी।"

तीजो—"चक्कर में तो है ई।"

इण तरै री बातां चौखळै मे हुवती ई रैवती। केई तो इसा हा कै फिलिप अथवा अंनी या उण रै टाबरां नै देखर झट चुप हू जावता अथवा दबी जबान मे बोलता या बात फोर देवता, पण केई किरपालू सज्जन इसा भी हा कै अंनी या फिलिप अथवा टाबरां नै देखर बांरै कान में बात पूंचावण री भी चेस्टा करता।

आ टीका-टीपणी सुणर अँनी तो नाड़ हेठी कर्‌यां सडक दंणी आगं निक्ळ जावती। फिलिप उदारता सूं हंसर दांत काढ देवतो। वाल्टर नैं लोगा माथै रीस आवती, अर मेरी री तो केई वार आंख्यां भरीज जावती।

अँनी अर फिलिप तया टावर तो इण चरचा सूं तंग आया ई, पण नित-हमेस मागी दळियो वळना-दळतां दळारा नैं आप नैं अळखत लागण लागगी, अर बै चावता कै जे व्याव कर-कराय लेवै, तो रोजीनै रै गांगीरथ सूं पिंडो छूटै।

जद फिलिप अँनी रै घरे आवतो, तो वाल्टर बौमू घणो राजी रैवतो, जीमण खातर फिलिप रा नौरा करतो, आपरै हाय सूं मूंडो ढाळतो अथवा पाणी या चाय री गिलास लावतो। जदपी वाल्टर आपरी मा रै सामो कदेई प्रस्ताव तो राख्यो कोनी, पण उण रै नैणा सूं इसी झळक मिलती ही कै फिलिप अँनी रो जे व्याव हू जावै, तो वो राजी है।

पण मेरी वाल्टर सूं दो पांवड़ा आगै रैई। वा बोली"–मा, थापू म्हारो कित्तो लाड राखै। आ तो मनै ठा है कै बै म्हारै चाचा लागै, पण हू देखूं कै गळी-गुवाड़ में दूजै टावरां रो लाड वारा वापू राखै, जिकै सू फिलिप चाचाजी म्हांरो लाड कित्तो ई बेसी राखै। म्हांरै बिना बै जीमै कोनी, म्हांरै बिना बांनै आवडै कोनी। अर सगळां सूं अचरज री बात तो आ है कै म्हे तो रैवां इसै आछै कपड़ा मे, अर तूं रैवै इसी कोभी ! म्हारो जीव इण बात सूं घापर दोरो है।" कंवती-कंवती मेरी रोवण लागगी।

अँनी उण नैं छाती रै लगाई अर बोली—"तो हू नांईं करूं बेटी, म्हारा भाग इसा ई है। करमा मे जे सुख लिख्योड़ो हुवतो, तो थारा आपरा बापूजी, म्हारै पालतां-पालता, आपा नै छोडर क्यूं तो जावता, अर क्यूं इण तरै आपा अनाथ बणता ?"

"पण मा, अबै बरस कित्ता बीतग्या ? मनै तो याद ई कोनी कै वापू कद गया। मनै बांरो चैरो ई याद कोनी। अर फिलिप बापजी किसाक चोखा है। तनै चोखा को लागै नी ?" मेरी पूछ्यो।

"चोखा तो लागै।" अँनी कंयो। "फिलिप तो सगळां नैं आछो लागै। बो दूणा रो घर है।"

"तो फेर मा, आ काईं बात है ?" मेरी पूछ्यो।

"तूं कांई कैवणो चावै बेटी ? तूं बड़ी-सारी है, समझणी है। थारै मन री बात नै खुलासा करनै कह।"

ईनक कठै रैयग्यो ?

पण ईनक कठै रैयग्यो ? अंनी मूं सावळ मिलर, टाबरा रा लाड-कोड करनै "बडभागण" नाव रै जळ-जाज मे राजी-खुसी टुर्‌यो हो । आ बात तो ठीक है कै जातरा सरू हुवती वेळा, जद जळ-पोत विस्के रो खाडी मे हो, तो जळ-देवता मिनख री सगती तोलण खातर आयग्या । आज रा सगळा मुसाफर घबरायग्या, *पण जाज-चलारां हीमत अर चतराई सूं काम लियो । मार्थसूणी लैरां सूं* "बड-भागण" मोरचो लेवती रैई । पण मिनख री सगती कुदरत रै आगै काईं मोल राखै ? पाणी मे उफाण माथै उफाण अर हबोळं माथै हबोळो उठण लाग्यो, अर सगळा जणा बचण री आस छोड दी, कारण इण हलचल सू जाज कागद री डूंगी ज्यूं अथिर हालत मे पड़ग्यो अर मुसाफर मिट-सिकड गिणता हा कै अबै जाज डूब्यो, अबै जाज डूब्यो । इण तरै रै डरावणै तोफान मे डूंगी लेयर उतरणो तो चलायर मौत रै मूंडै मे जावणो हो, इण कारण सगळा जणा सकट-काळ मे भेळा हुयोड़ा आप-आप रै इस्टदेव रो सिंवरण करण लाग्या ।

कुदरत रो कोप हळको हुयो, अर जाज रै डगमगाट मे कमी आयगी । "बड-*भागण*" आफत माय सूं साबत निकळगी, अर मुसाफरा रै जीव मे जीव आयो ।

अबै जाज ठंडै-ऊनै भाग मे आयग्यो जठै मौसम सुवावणो अर समदर सुसील हो । लारलै खतरै रै कारण समदर री आ सायती मुसाफरा नै बडै भाग री सैनाणी लखाई ।

आगै गया सूं पैली ई पोत-चलारा आपरी कमर कसली, कारण आगै "तोफान डमरूमध्य" मायकर गुजरणो हो । जिसा गुण विसा नांव । तोफानां री मुकळायत रै कारण ई इण डमरूमध्य रो नांव इसो धरीज्यो हो । आज तो लोग ईनै 'आस-बधावणो, अथवा 'केप ऑफ गुड होप' कैवै है । हा, तो जद "*बडभागण*" इण डमरूमध्य मांयकर निकळण लागी, तो अेक बार बोरै नाव री पारख करण खातर जळ-देवता फेर कमरबंधो कस लियो । लोगा नै "बडभागण" नांव कूड़ो लागण लाग्यो, अर वां सोच्यो के वै सगळा निरभागी है । पाणी रा फटीड़ खाय-खायर "बडभागण" अधमरी हुयगी । मुसाफरां फेर इस्टदेवां रो सिंवरण कर्‌यो, पण आज

मिवरण भवयारय सवावण लागग्यो, फेर भी हाल तगदीर मिकंदर हो, अर समदर मिसामी लेयर मवरो पड़ग्यो ।

इण तरै कदेई मौसम माड़ो अर कदेई मौसम माड़ो, पण मुकाबलो करता-करतां ईंवट गेर्लं मे पुसब बिद्धग्या, अर 'बडभागण' लारलै विसं नें मूतर, सोनलिया टापुग्रां रै पसवाड़ै कर हसती-मुळकती आपरै थान-मुकाम पूंगगी, अर बठै जायर सुख रो सांस लियो ।

जाज चीण देस रै कनारै भाय लाग्यो, अर ईनक भी आपरो काम जी तोड़नै करणो सरू कर्यो । मारग री अवळी वेळा में जे ईनक जिसा हिमताळू चलार नईं हुवता, तो जाज ठिकाणै लागणो मुसकल हो । जाज रै कैंपटन इण अरथ रो अेक कागद जाज-मालक नै लिख भेज्यो, जिण में ईनक री चतराई अर हीमित री मोकळी बड़ाई करी ही । कप्तान आपरी मरजी मूं ई ईनक री तिनखा बधायर पैली बिच्चै दूणी करदी । इण मूं ईनक रो उत्साह बध्यो, अर बो आपरो काम और भी साव-धानी मूं करण रो ध्यान राखतो ।

दिपटी मूं फुरसत मिल्या ईनक बजार में जायनै भांत-भांत री जिनसां रा भाव-ताव भी मालम कर लेवतो । बठै रमतिया रो बजार घणो जोरदार हो । ईनक बठै माल री खरीद-फरोख्त भी करण लागग्यो । जद जाज पाछो टुरण लाग्यो, तो बीं घणासारा रमतिया मोल लेय लिया । मन में विचार कर्यो—कित्तो फरक है अठै अर बठै रै भाव में । अठै जिको रमतियो अेक पीसै मे आवै, म्हारै अठै उणी रा दो आना लागै, तीन आना लागै ! आठ गुणो फरक, बारै गुणो फरक ! इण तरै जे हूं दो-तीन चक्कर काढ लेमूं, फेर तो दळदर दूर है । पछै म्हारै गांव में ई दुकान कर लेमूं । बौपार बध जासी अर गरीबी मांय मूं निकळर घर ऊंचो उठ जासी। अैनी मिनखाचारै रैवण लाग जासी । टाबरां री सावळ पढाई रो परबंध हू जासी । म्हारी तो कोई बात कोनी । हू तो जे अवार रैऊं ज्यूं ई चलवो करूं, तो भी कोई बात कोनी ।

बिकरी-बट्टै रो समान टाळर बीं सोनै रै भोळ री अेक मूरत भी टाबरां रै रमण खातर सागै लीवी । जद टाबर भागता-भागता, 'बापू-बापू' कैवता सामनै आसी, तो हू भट आ मूरत बारै आगै कर देमूं—ईनक मन में सोच्यो, अर तद टाबर कित्ता राजी हुसी ।

अबै "बडभागण" री घर कानली जातरा सरू हुई । रोभा तो पैलड़ी जातरा में थोड़ा नईं देख्या हा, पण अबकाळै पैली बिच्चै ई इधकाई रैई । मारग में समंदरी भंवर धायग्या अर वांरै मांय बाज फसग्यो, पण हूंसियार चलारां बीनै भंवर मूं बारै काढ लियो । आज रै आगनै भाग मार्थं अेक लुगाई री सोनै तईं री मूरत कोरयोरी

हो। लैरां मावै भर इण मूरत सूं टकरावै भर पाछी बिलीण हू जावै। मूरत जाणै बराबर लैरां रो गरब गळतो देख रैई है भर सामी भावती परचड लैरां कानी भेक-टक निजर सूं जोय रैई है।

इण तरै मोकळी ताळ तईं लैरां सूं सथाम करयां पछै फेर 'बडभागण' नै सायन्ती सूं सांस लेवण नै मिल्यो। पण इसी ठा पडी कै 'बडभागण' रै नसीब मे टिकाऊ सायन्ती लिख्योड़ी नईं ही। भागै जावतै ई भांधी सरू हुयगी—कदेई उतराद सूं दिखणाद, तो कदेई दिखणाद सूं उतराद। इणी तरै उगूण सूं भाथूण, भर भाथूण सूं उगूण। पळ-पळ देड़ै भांधी रो रुख पळटै, भर चलारा रै नाक मे दम भायग्यो। इण रै सागै-सागै लैरां भी भापरो जग सरू कर दियो भर वै 'बडभागण' री छाती में थपेड़ा मारण लागगी। 'बडभागण' काळजो मोटो राख्यो, भथाग जरणा राखी, भर भापरो छे नईं दियो; पण भगवान नै उण रो छे लेवणो हो। उणी बगत मौत स्यारसो डरावणो रूप धारण करनै तोफान फूंफायो, भर चानणी चटूड रात नै घोर भमारवी ज्यूं बणायदी। चलारा भापरी जाण में कीं पाछ नईं राखी, पण भबै तो हाथ नै हाथ मूझणो ई बद हुयग्यो, गेलो दीखणो तो छेड़ै रयो। जाज गेलै सूं भटकग्यो, पण चलारां नै भधारै रै कारण ना तो ठा पडी, भर ना वै तोफान रै कारण जाज मार्थे कीं कबजो राख सक्या। भधारै मे सगळा हाय-चोय करण लागग्या। कप्तान जाज री चाल नै भेकदम रोकण री कोसीस करी। पण जाज तो तोफान रै भधीण हो, कप्तान रै हाथ री बात नईं रैई। लैरां टकरावण री भावाज भाई। कप्तान सगळा रै सावधान हुयता थका भी फेर सावधानी सारू घंटी बजवाई। भा घटी सतरै भथवा मौत री ही। देखतां-देखतां जाज जायर चट्टान सूं टकरायग्यो। टक्कर इत्ती लूंठी लागी कै जाज रा फूंतरा-फूंतरा बिखरग्या। भोय-हाय-होय, भोय-हाय री करळाट उठी, भर सगळा मुसाफर पाणी रै पेट में गया। पण बा मांय सूं भी जीवतो रैयग्यो ईनक, भर दो जणा दूजा। वारै हाथ कोई टूटा-भागा लट्ठा भथवा पाटिया भायग्या हा, भर वै वांरै सायेरै भाधीक रात तईं बैवता रैया। भा तीनां रै सरीरां री सगती तो सोळै भाना टूटगी ही, पण प्राण बाला लागै, इणी कारण भै लकडी रै संबळ सूं भटक्योड़ा रैया। बीनै ढील नईं दी। काळी रात री छेड़ो भायो, भर तड़को हुयो जित्तै बै तीनूं भेक टापू रै कनारै लायर न्हाखीजग्या। बा माय सूं भेक रो नाव हो हंटर, जिकै री भूमर ईनक रै लगे-टगे ई ही। तीसरोड़ो तो हाल छोरो-सीक ई हो। कद में तो पूरो वध कर लियो हो, पण हाल होठां माथै मूंछ ई पूरी फूटी नईं ही।

जद दिन री दो बजगी, तो ईनक थोड़ो हाथ हिलायो, भर पसवाड़ो फोर्यो। बैठण नै खसै तो सगळो डील भकड़ीज्योड़ो हुवण रै कारण बैठ्यो ई हुयीजै कोनी।

देवट तीन-च्यार बार हाथ-पग ऊंचा-नीचा पटकर बी कोसीस करी, अर ऊभो हुयग्यो । प्राण बचग्या इण री हरख तो हो पण अबै कोई जगळी जिनावर भख लेसी, इण डर सूं ईनक विचार में पड़ग्यो । चालगनै लग्यं, तो पग रो सत निसर्योड़ो । पीड्यां नै थोड़ी दाबी-मसळी, अर धीनोनी चाल में आगै गयो । ईनक रै हरख रो पार नई रैयो, जद बौ हंटर नै तावड़ै में गैरा सांस खांवतै देख्यो । नैड़ो गयो, जायर चवेड़ियो, छाती अर मगरां रै हाथ फेर्यो, हाथ-पग चीथ्या तद हंटर आंख खोली । ईनक हटर री छाती मार्थ पड़र बींमूं लिपटग्यो, अर दोनां री आख्यां में पाणी आयग्यो । ईनक भट आंम्यां पूंछर कैयो—"अरे हंटर, अेक अर अेक इग्यारै हुवै । डर मत, अबै आपानै जिकी हालत में भगवान लायर धर दिया, उण रो मुकाबलो करण खातर त्यार हू जावणो चाईजै । दोनूं जणा उठग्या, अर आगै गया । तीजोड़ो बदनसीब भी आयग्यो । बींरो हालत खराब ही । कोसीस रै अुपरायंत भी बो भटर्दणो फिरण-घिरण जिसो नई हुयो ।

इण टापू मार्थ आ तो आफत ई ही कै आं तीनां नै टाळर चौथै मिनख—जार्ये रो मूंडो बठै देखण नै नई मिलै । पण खावण-पीवण नै अठै तोड़ो नई हो । भांत-भांत रा कंवळा-कवळा मीठा-मीठा इत्ता फळ हा कै दिरखत मार सूं लड़ालूम हुयोड़ा । तीनूं जणां फळां नै सकते-संकते, डरते-डरते चाखर देख्या । इमरत री जान ! बै हरग्या कै अठै इसा फळ केई जादूगर या भूत-पलीत री करामात तो नईं है. पण जद तीन-च्यार दिना में भी कोई डर-डाकर ध्यान में नईं आयो, तो बै निधड़क हुयग्या । माग सूं अेक जळ-सोत भी हो जिण रो पाणी जाणै मिसरी में घुळर आवतो हुवै । घर-बार तो छूटग्या, आखी दुनियां सूं अळगा भी हुयग्या, पण भूख रै बिसै को मरै नी, इत्तो तो नेचो हुयग्यो ।

अबै लारै रैयो जगळी जिनावरां रो डर । जगळी जिनावर बठै हिमर्क जात रा तो कोई हा ई कोनी । हा जिका सुसियै, हिरणियै जिसा कवळेटिया जिनावर हा । बै इत्ता निधड़क बिचर्योडा हा कै डर-सार समभै ई नई । जे कोई बांरो सिकार करणो चावै तो वै प्राण बचावण खातर भागणो जाणै ई नई । इसा निरदोस अर भोळा जिनावरां रो सिकार करण री गवाई आतमा नईं दी । दो-च्यार बार तो ईनक अर हंटर बां जिनावरां रो सिकार कर्यो, फेर बानै आपनै गिल्याण आयगी—अरे, आं जिनावरां रो तो ओ टापू । आंरै घर में सरणार्थी बणर आया म्हे अर मिजमानां नै ई मारां । आ कित्ती बडी कितघणता है । बा सिकार करणो बंद कर दियो ।

ईनक आपरै आसरै खातर जगां जोयी, अर आम्बर पाड़ रै हेटली अेक गुफा मार्थ, जिकी रो मूंडो मंमदर कानी हो, ताड़ रा पत्ता छायर अेक झूंपड़ी त्यार करी, जिकी आधी झूंपड़ी अर आधी गुफा हुवै ज्यूं ही ।

इण तरै इण इन्दरलोक रै बगीचै मे, जठै रसाल सूं अधिको काईं नईं हो, तीनूं जणा बसग्या। इसी बठै हवा कै मिनख मस्ती मूं भूलण लाग जावै। सैंवती-सैंवती गरमी बठै बारै ई मास रैवै, पण फेर भी वै तीनूं, इसै देव-दुरळभ वातावरण में भी अमूभ्योड़ा हा, जेळ में हा, अर बठै सूं छूटको पावण खातर तो वारी आतमा फडफडावती ही। इण रो अेक कारण हो। छोरो हेनरी तो आयां पछै कदेई सावळ रैयो कोनी। बो हरदम भूंपड़ी रै मांय ई पड्यो-पड्यो ओय-हाय करतो रैवतो। बैद-डाकधर बठै हा कोनी. इलाज करावै तो भी कींरो करावै ?

परवार में जे अेक जणो मांदो-तातो हुवै, तो नातै सारू सगळा री सुख-सुविधा में फरक पड़ै। इणी तरै जे अेक जणो अपरोगो अथवा मुतलबियो हुवै, तो बो परवार रूपी इमरत में जैर जिसो काम करै, अर सगळै सुख नै दुख में बदळ देवै। पण तीनूं साथी दुख रा सतायोड़ा आफत रा मार्‌या। मांदै री देखरेख करणो सगळिया रो फरज है। दोनूं जणा हेनरी खातर सोनै सूं पाणी लावता, तोड़र बीरै मन-भावता फळ लावता, उठायर बीनै छैयां-तावडै सुवाणता। पण इसा होड़ा रै उपरांत भी हेनरी री मादगी में सुधार नईं आयो। उलटी बीरी हालत दिनोदिन बिगड़ती गयी। तीन बरसा तईं बो लास रूप मे जीवतो रैयो। अेक दिन तंग आयर कैयो—"ईनक चाचा, म्हारै दुख सूं थे दोनूं बींधीजग्या। हू सावळ तो हू सकूं कोनी। अेक अरज करणी चाऊं जे कबूल करो, तो।"

ईनक कैयो—"हेनरी, म्हे सदेई तनै म्हारो टाबर समझ्यो है, तो ई तूं सकै? बोल, तूं काईं चावै है?"

हेनरी रै साव सूक्योड़ै सरीर मे जाणै पाणी कठै सूं आयो? बीरी आख्यां सूं टळै-टळै बिरखा बरसण लागगी। ईनक आपरै खरदरै हाथ सूं हेनरी रा आसू अर गाल पूछ्या।

हेनरी कैयो—"काका, जिकी जरणा सूं था म्हारा सेवा खाया है, बा म्हारै बाप रै खातर ई ओखी ही। लाबी मादगी सूं भला-भला रो धीरज अर ग्यान हीडा करने-करते उथपर उत्तर देय देवै, पण था कदेई नाक मे सळ ई थाल्यो कोनी। म्हारै कनै और तो कांई कोनी, हू तो उण मोटै धणी नै आ ई अरदास करूं कै बो आपनै इण कैद माय सूं काढै जिण सूं आप पाछा घरे जायर आपरै बाला रा मूंडा देख सको।"

हेनरी रै गाला मार्थ हाथ फेरता ईनक कैयो—"भगवान थारी अरज कबूल करै। पण म्हारो छूटको हुयां तूं पछै किसो अठै लारै रैसी?"

"नईं, काका! म्हारै सूं अबै मांदगी री बेवना झलै कोनी। हू चाऊं, हू थानै, काका, हूं थानै अरज करूं, भगवान खातर थे मनै संमदर मे न्हांख दो।"

बात पूरी हुवां-हुवां ईनक हेनरी रै मूं'डै आडो हाथ देय दियो—"ओ हेनरी ! हूं तो मनैं बचाणो चिलायो हो, पण थाक तो मूं' मरण कोठाणै री बात करग्यो । भगवान माथै भरोसो राखणो ।"

हेनरी री दसा बिगड़ती गयी, अर गांव वाळां री जीवन-मोत मुजरा बैं मुगती पायी ।

हेनरी जीवो जितै ईनक अर हटर नै बीरा हीड़ा-चाकरी करणा पड़ता, अर वै घायला भी हुयग्या हा । अड़ी बां करमाणो कोनी, पण हेनरी री मोत मूं' बांनै इण गही बैं अबै किसो घाटो पड़ग्यो । हेनरी मतो कदेई मूं'गड़ी मुनी को रैयी नीं । ईनक अथवा हटर, दोनां मांय मूं' अे कोई अेकलो बारै मूं' आवतो, तो मुख दुख री बात करण खातर हेनरी अरटपोर हाजर लाधतो । अबै जद ईनक बारै गयोड़ो हुवै, तो हटर अेकळरायण अनुभवै, अर हटर गयोड़ो हुवै तो ईनक रो सूनी झूं'पड़ी में जीव अमूझै ।

इण हालत मे भी ईनक, सरतै सांवर, मल्ल रैवण री कोसीस करतो, अठी हटर केई बार मूं'डो टेरनै बैठ जाया करतो । अेक दिन हटर कैयो—"ईनक, म्हारी जिंदगाणी इण टापू माथै ई लगावणी हैक अटै मूं' छूटण रो भी कोई मारग काढणो है ?"

ईनक कैयो—"बीरा, म्हारी अकल माथै तो पत्थर पड़ग्या । मनै तो कोई उपाय सूझै कोनी, थारी समझ में जे कोई जुगत आवै है, तो तूं बताय ।"

"मनै अबै", हटर कैयो, "परमूं' म्हैं अेक बडो सारो रूंख अडामूळ मूं गयोड़ो देखियो । जे आपां उण रूंख रै तणै रो मांयलो भाग काढर बीनै थोथो कर लेवां, तो फेर बीरै सायरै आपां अठै मूं' निकळण री चेस्टा कर सकां हां ।"

ईनक कैयो—"काम तो कठण है, पण कोसीस करण मे कोई घाट कोनी ।"

हटर तणो बाळण में लागग्यो । इण काम में बीं आपरै सरीर री भी सुध-बुध नईं राखी । नतीजो ओ हुयो कै तावड़ै अर बास्ते री तपत रै कारण बीनैं दाऊजळो हुयग्यो, अर बो अचाणचक ईनक नै निराठ अेकलो छोडर बडै घर गयो परो ।

आपरा दो मित्तर उठग्या, अर बो रैयग्यो, इण में ईनक नै भगवान रै घर री अेक सेंन लागी । मनै वीं बचायो है, तो बो मनै अबारसी भी सरी । मनै घबरावणो नईं, पण उण रो भरोसो राखर अडीकणो चाईजै ।

भगवान कोई चीज नईं देवै, तो ना देवो, मिनख निरवाळो हुयर बैठ जावै—आ चीज आपां रै करमा में लिखियोड़ी कोनी । जलम-कंगाल कदेई पीसै खातर माथो पटकर बोके कोनी । पण अेकर-सीक काई पदारथ इधकार में आय जावै, अर फेर

मुग जावै, तद ग्यानी सूं ग्यानी लोकां रो ग्यान भी धरे नईं रैवै, अर वै अग्यानी समभीजण वाळां जिसो ई आचरण करण लाग जावै ।

ईनक जे सरू में इण टापू मायं अेकलो ई आयो हुवतो, तो अेकलो आवण रो इतो दुख नईं हुवतो जित्तो दो जणां रो साथो हुयर फेर छूटण सूं हुयो । खावो, पीवो, मौज करो, पण बोल-बतळावण खातर मिनख रो जायो आख देखणनै ई कोनी । किसीक है थारी माया-आ सोचर ईनक धकराया करतो । टापू रा मीठा फळ अबै वीनै बाड़ा लागण लागग्या । टापू रै सोतै अर मीठै जळ री धारा रो पाणी खारो लागण लागग्यो । दिन-रात मिलायर चौईस घटां रा हुया करै, अर बठै भी इता ई बड़ा हा, पण ईनक नै पाड़ जित्ता दिन, अर अथाग काळै सागर जित्ती लांबी चवडो रातां लागण लागगी । पाड कियां टूटै, अर समदर किया खूटै—आ ई निरासा वीरै मायं दिन-रात छायोड़ी रैवती ।

इण सूनवाड़ मे ईनक रै कनै काम काज तो काईं हो कोनी । भूख-तिस लागती, तो वो फळ खावतो, पाणी पी लेवतो, नईं तो आखै दिन आपरी भूंपडी रै कनै बैठ्यो-बैठ्यो कुदरत रै फूटरै नजारै नै देख-देखर इण तरै सिर धुण्या करतो ज्यूं बूढो आदमी आपरी जवान मदमाती धण नै देख-देखर माथै मे तड़ीड़ लिया करै ।

ईनक री नजर जठीनै जमगी, बठीनै जमगी । कदेई वो गिगनार जेड़ा आभो-छूवणा पाड़ां सामो भाकतो अर ताकतो—तळै सूं लेयर चोटी तईं कुदरत-मा आपरै लाडेसर पाड खातर जाणै मूंगै रंग रो झगलो पैरायो है ।

इण तरै पाड़ री तळेटी सूं चोटी, अर चोटी सूं तळेटी देखता-देखता जद निजर थाकेल हूजावती, तो ईनक आपरी रुख हरे-भरे मैदानां कानी करतो । जित्ती दूर तईं निजर पूगै, मैदान, मैदान, मैदान ई मैदान ! ईनक भगवान रै न्याव मायं पसतावो करया करतो-वाह रे भगवान ! इसा सरग-लोक जिसा मैदान, अर आंनै भोगण वाळो कोई नईं । इसा-इसा इमरत फळ, अर चाखण वाळै रो नांव ई नईं ! अजब लीला है थारी !

मैदानां सूं ईनक री निजर टेढी-मेडी घाट्यां कानी जावती, जिसकी मैदाना सूं टुरनै ठेठ पाड़ां मायं चढ्योड़ी इयां लागती जाणै पिरथी सूं सरगलोक आवण खातर न्यारा-न्यारा मारग हुवै । ईनक मन मे कळपतो—अबै अंनी अर म्हारा टाबर जीवता थोड़ा ई रैया हुसी । भूख अर गरीबी रै कारण वै सरीर छोडर सरग सिधारग्या हुसी । जे आं रस्ता रै सायैरै-सायैरै हूं सरग पूग जाऊं, तो बठै मनै मिल तो जावै । इणी भावना में प्रवाहित हुय नै ईनक कदेई-कदेई घाटी रै मारग दुर भी जावतो, पण फेर जद सचेतन हुवतो, तो आपरी भूंपड़ी में आयर सूय जावतो ।

माथै घूमै । कानां रा पड़दा फाड़ती चरचराट सुणर ईनक काना में आंगळ्यां घाल लेवतो ।

पण आ इसी जगा ही कै जठै और कोई मीठी धुन री राग-रागण्यां तो सुणन खातर मिलती कोनी । जे सागर कानी निजर करै, तो कोई दो कोस रै आंतरै सूं परवताकार छोळां आवती दीसै-एक रै लारै दूजी, दूजी लारै तीजी, तीजी लारै चौथी, अर इणी तरै । लैरां कनारै आयर मैंड़ली चट्टाण सूं तळाछ खायर टकरावै, तो ईनक नै लखावै जाणै वै कैवै—अवै तू पड़्यो माथो फोड, कांई आणो-जाणो कोनी । म्हानै देख, माथो फोडता-फोड़ता हजारूं वरस वीतग्या, पण कुण सुणै ?

कदेई-कदेई जद वायरियो बाजै तो सूं-सूं री अवाज निकळै । पत्ता आप-सपरी में रगड़ खावै । ईनक नै इया लखावै कै पत्ता आपस में ईनक री मूरखाई री मजाक उडावण खातर जोर-जोर सूं हंसै है—किसोक मूरख आदमी है, लखपती हुवण रै सपनां मे आप तो अठै आयर खोड मे पडग्यो, अर लुगाई-टाबरा नै अनाथ कर दिया ।

कदेई बो उण टापू री जळ-धार नै भी देख्या करतो जिकी कै उतावळ सूं सागर में रळ जावती । धारा री इण उतावळ नै देखर बो अंनी नै याद करयां बिना नईं रैय सकतो । सोचतो—जे हूं धरे पूगूं, अर अंनी मनै देखै, तो वा इण धारा रै वेग सूं म्हारै सामी भाजी आवै, अर म्हारी भुजावा में लुक जावै । पण जद अंनी सूं मिलण री असंभवता माथै ध्यान जावतो, तो हिरदै री गुदगुदी ठडी पड़ जावती अर सगळो डील ढीलो पड़ जावतो ।

आफव तो आ ही कै बठै कोई काम भी जे करै, तो कांई करै, कींरै खातर करै ? ईनक इसो आदमी जिको रात-दिन खोरसो करतो भी धापतो अर थकतो कोनी, अबै अठै आपरा दिन कियां खूटावै ? घणीसीक बार बो आपरी गुफा में ई बैठ्यो रैया करतो जिणरो मूंडो सागर कानी हो । इण गुफा मे बो बरावर किता ई घंटा तई बैठ्यो रैवतो । बिना कठीनै निजर जमाए बो सागर कानी मूंडो करयां बैठ्यो रैवतो । बीरा हाथ-पग कांई भी हिलता नईं, भाठै री मूरत ज्यूं ईनक बैठ्यो रैवतो । इण कारण बठै रा मोरळा जिनावर ईनक नै कोई निरजीव पदारथ ई गिणता । भौर तो भौर, दूध-गिलारी जिसा डरोक जीव-जन्त भी ईनक नै निरजीव जाणर नणरै माथै चढण लागग्या । अर ईनक बानै अळगा नईं करतो, इण कारण जीव-जन्त उणरै माथै मोकळी ताळ बैठ्या रैवता ।

इण गुफा मे बैठ्यो-बैठ्यो ईनक संमदर कानी ताकतो रैवतो, इण अडीक में कै अबै ई कोई पाल दीसै, अबै ई कोई जाज निजर आवै । देखतो रैयो, आख्यां

फाड़तो रैयो, नस ऊंची करतो रैयो, पण पाल रा दरसण कठै ? तो फेर दिन किशां गूटतो ?

भोर में उगण दिन भ्रूगंतै भाण रो किरण-जाळ ताड़ रै पत्तां मांय सूं भ्रगणित तीरां ज्यूं ईनकरी झूंपड़ी में बिखर नै बींनै चैतन्न करनांवतो। उण री झूंपड़ी में भ्राया पछै सूरज री किरणां सागर-जळ सूं रमणनै आवती, भर बांनै देखतां ई जळ आपरो रात भ्राळो काळो चोळो उतारनै चमचमाट करतो भ्रावरण धारण कर लेवतो। देखता-देखता भ्रूगण भ्राळो माण ठीक सिर माथै चढ़ जावतो भ्रर उण रै तेज रै कारण सगळी रोई हरख सूं नाचती। सूरज माथै ऊपर घणो टिकतो कोनी, ज्यूं जगती थिर नईं रैया करै। भ्राथूण कानी सूरज इत्तो बेगो पूग जावतो ज्यूं जवानी ढळतां झट बूढ़ापो घेरा घालण लाग जावै। बिमूंजनैं सूरज री किरणां सूं फेर पाणी माथै ललाई झळकती। इयां लखावतो जाणैं किरणां नैं बर्दर करण खातर सागर-जळ मुळकै है।

सूरज भ्रायो, भ्रर गयो परो; पण ईनक हाल बैठ्यो है जाणै कोई जोगी समाधी में लवलीण हुवै। तद काईं इचरज जे पंख-पखेरू भ्रायर ईनक रै माथै भ्रवबा खंधोलै विराजर घड़ी-भ्रधघड़ी बिसाईं लेय लेवता।

किरणां रै विजोग सूं सागर रै मन में भ्रन्धारो भरीज जावतो भ्रर सगळो टापू रात री गोदी में सोय जावतो। ज्यूं लुगाई मर जावै, पण बींरो टाबर सैनाणी सरूप लारै रैय जाया करै, इणी भांत सागर नै कळमळ करतो देखर भ्रेक-भ्रेक किरण भ्रापरै टाबर रै सरूप में सागर खातर भ्रेक-भ्रेक तारो छोड़गी जिण सूं भ्रापरा भ्रसल टाबर देखर सागर भ्रापरो जीव जजूंबा सकै।

भ्रेक-भ्रेक धण री भ्रेक—भ्रेक भ्रोलाद सूं भी सागर नैं संतोस नईं हुवतो, भ्रर बो किरणां रै विजोग मे पछाड़ा खाय-खायर ऊंधो पड़तो, भ्रर सागर रै पछाड़ां टाळर भ्रौर कोई भी भ्रवाज उण टापू माथै नईं सुणीजती।

ईनक निरी वार बैठ्यो-बैठ्यो रात नैं तारा गिणतो रैवतो, भ्रर इण तरै रात सूं दिन, भ्रर दिन सूं रात रो क्रम चालू हो। फेर उणी तरै ताड़ रै पत्तां मांय सूं, रात नैं दगो देयर गयोड़ी किरणां निरलज्ज हुयनै भ्रावती भ्रर सागर सूं रमती। ईनक नै सागर बड़भागी लागतो, भ्रर बीनैं भ्राप री भ्रेनी भ्रर टाबर याद भ्राय जावता। बरसां रा बरस बीतग्या, पण कोई नाव, निजर में भ्राई कोनी, जिकी को ई भ्राई भी।

इण तरै मूर्तिमान हुयोड़ै ईनक री निजरां कोई वार टापू भ्रर सागर री सीमां [illegible] जावती, भ्रर किसी ई धुंधळी-धुंधळी तस्वीरां उण रै नैणां में भूलण लाग [illegible]ी। बै ई चीजां दीसती, जिकी बींरी देख्योड़ी ही। वाल्टर भ्रर मेरी री बरसाट [illegible] बाणी कदेई काना मे गूंजती, तो कदेई भ्रेनी रा संगीत जेड़ा गुर भणकार

करता लखावता । कदेई ईनक रै सामनै आपरै छोटे-सैक घर रो नकसो आवतो—किते कोड सूं किते चाव सूं बणायो हो घर ! घर रा कमरा, पिलग, बासण-भांडा, सगळा सामनै नाचण लाग जावता । आपरी गळी याद आवती, जिको पाड़ री चढ़ाई माथै ही । इण रै सागै फिलिप री चक्की रो भी ध्यान आय जावतो । फेर आपरै गांव री गळ्यां रो चित्राम नैणांगे मंड जावतो—दोनां कानी, आपस में अेक-दूजै सूं गुंथीज्योड़ा रूंख किसाक आछा लागता ! फेर बा जगां याद आवती जठै सदा-बहार पेड़ मोर रै आकार में कट्योड़ो हो । बो *अेकायत रो भवन भी याद* आवतो जठै बो सुकरवार नै मछल्यां नवड़ावतो ।

जद इण तरै याद करण नै बैठतो, तो ईनक नै आपरो घोडो भी याद आय जावतो जिण माथै समान लाद-लादनै बो अळगी-अळगी जगावां सूं बिणज कर्‌या करतो । घोड़ै सिरसी प्यारी बीनै आपरी नाव लाग्या करती ही, पण आवती वेळा बीनै वेचदी ही, बा नाव भी ईनक नै याद आवणी । नववर मास रा भोर अर भाभरका भी याद आवता जिका ओस अर कोहरै रै कारण धूंधळा-धूंधळा लागता । सागै ई हळकी-हळकी फंवार याद आवती, अर सिडतै पत्ता री बास चेतै आवती । गैर-गंभीर सागर री मधरी अवाज याद आवती, सागर रो सीसै जिसो रंग भी याद आवतो ।

अेक दिन अेकाअेक जाणै बीरै कानां मे गिरजाघर री घट्यां रो मीठो-मीठो टणटणाट सुणीज्यो । अवाज इत्ती प्यारी लागी, कै हरख सूं बीरो हियो उछळण लागग्यो । बीनै इयां लखायो जाणै आ अवाज बीरै गांव सूं ई आवती ही । अर जद बीं इण सोवणै-सूगलै टापू नै, जठै बो कैदी ज्यूं पड़्‌यो हो, फेर आख पसारनै देख्यो, तो बीरो जीव उचटग्यो । अठै री सूनवाड़ अर अेकायत बीनै इत्ती खळी, कै बीरै मरण मे काईं बाकी नई रैयो । बस आसा री किरण ही तो उणरी आ धारणा कै परमात्मा सगळै बिराजमान है, कण-कण में है, हू अेकलो कोनी म्हारै कनै और भलेई कोई ना हुवो, म्हारो भगवान तो है । बीसूं परवार तो कोई चीज, कोई जगां है ई कोनी । फेर हूं सोच क्यूं करूं ?—इयां सोचर ईनक आपरै उखड़्‌योड़ै जीव नै पाछो जमावण री कोसीस करतो ।

जद मिनख दोघड़चिन्त्या मे हुवै, तो आछै सूं आछा भोग-पदारथ भी रुचै कोनी । जे देख्यो जावै तो ईनक इण टापू रो राजा ई नई बादस्या हो, पण बादस्याई करै कीरै ऊपर ? दिन-रात छुटकारै रै फिकर मे घुळ-घुळर ईनक रै म.थै अोस्यां सूं आगूंच रजत-जयंती मनायली । जिका केस हाल काळा भवर रैवणा चाईजता हा, वै किड़कावरा हुयर चादी ज्यूं चमकण लागग्या । पण हाल छूटको

करता लखावता । कदेई ईनक रै सामनै ग्रापरै छोटे-सैक घर रो नकसो ग्रावतो—कित्तै कोड सूं कित्तै चाव सूं बणायो हो घर ! घर रा कमरा, पिलग, बासण-भाडा, सगळा सामनै नाचण लाग जावता । ग्रापरी गळी याद ग्रावती, जिको पाड़ री चढ़ाई वाली ही । इण रै सागै फिलिप री चक्की रो भी ध्यान ग्राय जावतो । फेर ग्रापरै गाव री गळ्यां रो चित्राम नैणांगै मंड जावतो—दोनां कानी, ग्राप्स मे ग्रेक-दूजै सूं गुंथीज्योड़ा रूंख किसाक ग्राछा लागता ! फेर वा जगां याद ग्रावती जठै सदा-बहार पेड़ मोर रै ग्राकार मे कटयोड़ो हो । वो ग्रेकायत रो भवन भी याद ग्रावतो जठै वो सुकरवार नैं मछल्या नवड़ावतो ।

जद इण तरै याद करण मैं बैठतो, तो ईनक नैं ग्रापरो घोडो भी याद ग्राय जावतो जिण साथै समान लाद-लादनै वो ग्रळगी-ग्रळगी जगावा सूं बिणज कर्‌या करतो । घोड़ै सिरसी प्यारी बीनै ग्रापरी नाव लाग्या करती ही, पण ग्रावती वेळा बीनै बेचदी ही, बा नाव भी ईनक नैं याद ग्रायगी । नवबर मास रा भोर ग्रर भाभरका भी याद ग्रावता जिका ग्रोस ग्रर कोहरै रै कारण धूं धळा-धूं धळा लागता । साथै ई हळको-हळको फंवार याद ग्रावती, ग्रर सिडतै पत्तां री बास चेतै ग्रावती । गैर-गभीर सागर री मधरी ग्रवाज याद ग्रावती, सागर रो सीसै जिसो रग भी याद ग्रावतो ।

ग्रेक दिन ग्रेकायेक जाणैं बीरै काना मे गिरजाघर री घट्‌या रो मीठो-मीठो टणटणाट सुणीज्यो । ग्रवाज इत्ती प्यारी लागी, कै हरख सूं बीरो हियो उछळण लागग्यो । बीनै इया लखायो जाणैं ग्रा ग्रवाज बीरै गाव सूं ई ग्रावती ही । ग्रर जद बीं इण सोवणै-सूगलै टापू नैं, जठै बो कैदी ज्यूं पड्‌यो हो, फेर ग्राख पसारनै देख्यो, तो बीरो जीव उचटग्यो । ग्रठै री सूनवाड़ ग्रर ग्रेकायत बीनै इत्ती खळी, कै बीरै मरण में काईं बाकी नईं रैयो । बस ग्रासा री किरण ही तो उणरी ग्रा धारणा कै परमात्मा सगळै बिराजमान है, कण-कण में है, हूं ग्रेकलो कोनी म्हारै कनै ग्रौर भलेई कोई ना हुवो, म्हारो भगवान तो है । बींसूं परबार तो कोई चीज, कोई जगा है ई कोनी । फेर हूं सोच क्यूं करूं ?—इया सोचर ईनक ग्रापरै उखड़्योड़ै जीव नैं पाछो जमावण री कोसीस करतो ।

जद मिनख दोघड़चिन्त्या मे हुवै, तो भाखै सूं ग्राछा भोग-पदारथ भी रुचै कोनी । जे देख्यो जावै तो ईनक इण टापू रो राजा ई नईं बादस्या हो, पण बादस्याई करै कीरै ऊपर ? दिन-रात छुटकारै रै फिकर मे घुळ-घुळर ईनक रै माथै मोस्या सूं पागूंण रजत-जयंती मनायली । जिका केस हाल काळा भवर रैवणा चाईजता हा, वै किड़कावरा हुयर चादी ज्यूं चमकण लागग्या । पण हाल छूटको

पाछो घरे

मिनख रै भाग नै कँण देख्यो है ? ग्रेक दूजो जाज 'वडभागण' ग्राधी-तोफान रै कारण सामी गेलै सूं रळग्यो, ग्रर पीवण खातर-पाणी खूटग्यो। सजोग सूं इणी टापू रै पसवाड़ै ग्रायर ऊभग्यो, पण जाज-चालका नै ग्रा ठा नईं कै वै किण जगा है। तड़कै री वेळा जाज रो ग्रेक नोकर टापू रै कनारै घूमतो हो, ग्रर वीं निरमळ जळ नै खळ-खळ करते सागर में रळतो देख्यो। तिस डाढी ही। धारा रै नैड़ो गयो। मिट दो मिट ऊभो-ऊभो देखतो रैयो। दो-तीन टोपा पाणी जीभ मार्थ न्हाख्या। इमरत ! धोवा-धोवां धापर पाणी पियो।

इण जाज-करमी झट ग्रायर जाज रै कपतान नै पाणी री इतला करी। कपतान ग्रादमी भेज्या ग्रर कैयो—"वेगा जावो ग्रर पाणी रा ठाव भर लावो।"

ज्यूं ई वै साथा-साथा जावता हा वांरा काळजा ऊंचा चढ़ग्या। ग्रेक जणो तो सागर रूंख मार्थ टंगग्यो। ग्रेक रूंख री ग्रोट में ऊभग्यो। सगळा निहत्था नीसर्या हा, ग्रबै प्राण किया बंचावै—वारै सामी ग्रचाणचक ग्रेक इसी सूरत ग्रायगी जिण रा लावा-लावा उळझ्योड़ा केस सिणियो हुवै ज्यूं लागता हा। डाढी वध्योड़ी पण संवार्योड़ी नईं, जंगळी घास हुवै ज्यूं। चामड़ी तावड़ै में तप-तपर भूरी हुयोड़ी। इसी ठा पड़ी कै ग्रो सकस मिनखाजूण में तो कोनी। वै सोच में पड़ग्या कै ग्रो डाकी हैक रावस हैक, हाऊ हैक, जमदूत हैक, कुण है ? सगळा ग्राप-ग्रापरी कळपना सारू वीरो ग्रनुमान करै हा-ज्यूं ई, रैयग्या। ग्रां लोकां मिनख हुवण री कळपना नईं करी, कारण उणरो भेस इसो उदवुदो हो कै कदेई मिनख जात नै इसा गाभा पैर्यां देखी कोनी। घास री जेवड़्या बट-बटर खाल रा बडा ग्रर छोटा, रंग-रंगीला टुकड़ा ग्रागलै ग्रर हेठलै तिन मार्थ बांध्योड़ा हा।

पछै जाणै कै ग्रो उदवुद-भेसी ग्रापांरो ईनक ग्रारडन ई हो। इत्ता बरसां सूं ग्रास्यां फाड़ता-फाड़ता नीठ मिनख रा चैरा दीस्या, ग्रर मिनख वींनै देखर संतरा-वंतरा हुग्या। पेड़ माथलै ईनक मिनख नै देख लियो हो। वो पेड़ रै नैड़ो गयो। ग्रादमी घबरायो ग्रर जोर सूं ग्ररड़ायो। वीरा हाथ-पग फूलग्या, ग्रर भळै ऊंचो चढण री कोसीस में वो जरन दंणो हेठै ग्राय पड़्यो। ईनक वींनै देखर हस्यो, पण ग्रादमी नै

या हुगी आपरो मौत जिमी डगमगणी लागी। बो भागणो चावो पण पग ढाग्या। डील थर थर धूजै। ईनक वींरा भाव लखग्यो अर थाई अड़वड़ावो। आदमी रै पनै पूठो आगार ई पड़्यो कोनी। ईनक दो पावड़ा सारै सिरकग्यो, अर हाथ सूं असैंधान दियो डर ना। नारै सिरक्यां सू आदमी रो डर हळको पड़न लागग्यो। बाकी आदम्यां कानी भी ईनक सैन करी। बांनै नैड़ा बुलाया। बै आयग्या। बांनै टूटी-फूटी जबान में कैयो—"हूं आदमी हूं, डरो ना।" बो भरणै रो उदगम पूछ्यो। ईनक समझ्यो कोनी, पण च्यार-पांच बार सैन सूं पूछ्यो, तो बो समझग्यो, अर बांनै ठोड़-ठिकाणो लेयग्यो।

ईनक जाज-करम्यां नै जद आपस में बोलता-चालता सुण्या, तो वींरी इत्ता बरसां री सोयोड़ी वाक-सगती पाछी जागगी अर वो आपरा भाव बोलर थोड़ा-थोड़ा समझावण लागग्यो।

पाणी रा टांक भर लिया, अर बै जाज मे आयग्या। ईनक नै देखर जाज रा सगळा जातरी वींरै चारकर घेरो घालर ऊभग्या। आपरी लावड़ती वाणी में ई— वानै आपरै दुरभाग री कथा सुणाई। सरू-सरू में लोकां वींरो भरोसो नईं कर्‌य लोक 'खी-खी' हंसण लागग्या, पण साच रो सस्तर अमोघ है। सरू में गत-बर वणिया लोक भी थोड़ीसीक ताळ में बात सावळ ध्यान देयर सुणन लागग्या जठै मरम-भेदी थळ आया, वठै सगळां रा हिवड़ा पसीजग्या। वां ईनक नैं पै रण पेंथ मिनखाचारै रा गाभा दिया, अर वींनै बिना भाड़ै जाज में बैठाण लियो।

इत्ता बरसा तईं ईनक मणबोल रैयोड़ो हो, इण कारण आपरी मायड़भा नै भी बिसरग्यो हुवै ज्यूं ठा पड़ी, जीभ भी जाडी पड़गी अर उथळीजती नईं ज्यूं लखावण लागगी। वो जाज-करम्या भेळो बैठग्यो। वानै आपस में बोलता-हंस सुणै जद वींनै भी मूंडो खोलण री रळी आवै, पण इत्ता बरसां रै अबोलै वीं अभरोसो उपजाव दियो हो, जिण सूं बो संकै रै मार्‌यो मूंडो खोलै नईं। दो-च्या दिना तईं साथी लोक वीं नै चलाय-चलायर बतळायो और माडाणी बोलवायो। ज आछी तरै बोलण लागग्यो, फेर तो वो खुद खुलर बोलणो चावतो। छोटो टाबर ज बोलणो सीखै, अर अेक बात नै दस-दस बार कैवै, उणी तरै ईनक तीन-च्यार दिन तईं काम-बेकाम खूब बोलतो।

आपरै गांव बाबत समाचार पूछतो। धैंनी बाबत पूछतो। टाबरा बाबत पूछतो, पण वींरै इलाकै कानलो कोई भी हो नईं इण कारण ईनक नै कोई जाणकारी नईं मिली।

जिण जाज सूं अै लोक जातरा करता हा, वो इत्तो जूनो अर अधबळ्यो हुयग्यो हो कै साधै अरथा में सागर माथै चालण जोगो ई नईं हो। अठीनै ईनक रै

ऊतावळ ही वैगो पूगरण री, इण कारण जाज री धीमी चाल अर जगां-जगां रो रुकाव बींने असैंणजोग लागण लागग्यो। इण जाज बिचै तो ईनक आपरी नाव में भी घणो खायो चाल सकतो हो। हवा माथै भी ईनक नै रीस आई। का तो इसो जोरदार तोफान आयो कै 'बडमागरण' रा माग फोड़ दिया, अर अबै हवा चालण रो नांव ई लेवै कोनी। जे हवा तेज हुवै, तो जाज री चाल वधै अर वो आपरै गांव वैगो पूग सकै।

जाज रै मांय रुक्योड़ो तो ईनक हो, बींरी कळपना तो जाज रै घेरै में जकड़ीज्योड़ी को ही नी। वा इंग्लैंड पूगगी, अर ईनक रै बदरगाह रै तीर माथै, गांव री गळ्यां मे अर वजार में बिचरण लागगी।

अडीकतां-अडीकता छेवट इंगलैंड रो सागर-तट नैड़ो आयो। तड़कै री वगत, चंदरमा मेघां रै ओलै हो। जिण तरै एक प्रेमी आपरी प्रेमण री धरती माथै पूगै अर बींनै उण धरती रै कण-कण में, हवा में, पाणी मे, छैया में, तावड़ै मे आपरी प्रेमण रो प्रेम छळकतो, सामो आवतो दीसै, अर बो हरेक चीज रो प्रेम सूं उपभोग करै, इणी तरै इंग्लैंड रो तीर नैड़ो आवतां ई ईनक रै मन रो संसार पाछो मरजित हुयग्यो हुवै ज्यूं लखायो, अर बीं चाख रै पाड़ा सूं आयोड़ी हवा रा कस-कसर गैरा सांस लिया।

जद अफसरां अर दूजै लोवां रै उतरण री वगत आई, तो फर बानै ईनक रो ध्यान आयो। वां आपस में चन्दो करनै इत्ता पीसा भेळा कर लिया कै ईनक नै बो जाज बींरै गांव रै बदरगाह लेजायनै उतार दै।

ईनक रो बंदर आयग्यो, अर वो चुपचाप आपरै घर कानी टुरग्यो। फेर मन मे बिचार आयो-घर कानी टुरतो ग्यो, पण घर हैक कोनी ? फेर भी पग थम्यां कोनी, अर बो बरावर घर कानी चालतो रैयो। तीजै पोर रो वगत हो। सूरज आभै मे पळपळाट करतो हो, पण मोसम ठंडो हो, हवा सीळी ही, अर सरदी मोकळी ही। छेवट समदर सूं बोहरो उठ्यो अर चट्टाणां री तेड़ो माय कर ठेठ गांव तई पूग्यो, अर सगळै गांव में धुंध छायगी। इत्तो अंधकार छायो कै हाथ नै हाथ नई सूझै। ईनक रै सामनै लांबी चवड़ी सड़क ही जिकी आगै जमी मे बड़ती कमाथै मे उडगी-टा ई नई पई, कठै गई। आंरयां तरणायां सूं इत्ती ई टा पड़ै कै घटीनै डांडा रो गोर है, आ रोयी है, अठै खेत बायोड़ो है।

ईनक चालतो रैयो। गेरै में अेक ठौड़ आयो जिण रा डाळा सूक्या हा, अर पत्ता गिरग्या हा। इण माथै रॉबिन पंछी बेरनो बैठ्यो बड़ै काळजै गावतो अथवा रोवतो हुवै ज्यूं लगायो। ईनक मन में बींनै पूछ्यो—अरे थारी जोड़ीवाल कठै गई ? ईनक रै नैणां मे अेनी री तसवीर धुंधळी दीसण लागगी। ज्यूं-ज्यूं

कोहरो घणो हुवतो गयो, अंधारो बधतो गयो । इण अंधारै में भी ईनक ढबगो कोनी अर बराबर पग मेलतो गयो । डांफर बाजै । दांत कड़कड़ करै । काळजो धूजै, पण गेलो नई सूझै । पण अंनी सूं मिलण रो चाव किणी तरै कम नई पड़्यो, अर पग गेलो काटता रैया । आगर अेक फळकंदार रोगणी दीगी । रोगणी रै जीभ तो नई ही पण तो ई जाणै वा ईनक नै कैयो--"अरे ! थूं थारा भोगना भूल्या है ? टकरां भावतो थूं फिरै ?" ईनक जाणै आ भाषा समझग्यो, अर वो उणी वगत चुपचाप लांबी गळी रै मारग टुरग्यो । इण तरै री अड़चणां ईनक नै मोटै मुगतां रा सवराण मागण लागगी । पण पग, अरे, वै तो अथक गत सूं चालता रैया, जाणै थकणो अर सुस्तावणो जाणै ई कोनी । अर छेवट वा ईनक नै उण घर आगै लायर ऊभाण दियो जठै अंनी रैया करती ही, ईनक नै प्यार कर्‌या करती ही, ईनक रै टाबरां नै हुलराया अर लडाया करती ही, जिका कै वां रै आपसी हेज रै सात बरसां में जलम्या हा ।

ईनक घर रै आगै ऊभग्यो । उणी घर आगै अणजाण्यो हुवै ज्यूं ऊभग्यो जिणनैं ईनक आपरै लोई री कमाई सूं, घणैं हरख-कोड सूं, अंनी अर अंनी रै टाबरां री सुख-सोमती खातर, चिणायो हो । बारणैं-बारणां कानी सावळ निजर न्हांगी पण उजास रो काम नई । कान ढेर्‌या, पण मांय सूं सपगपाट रो नांव नई । किवाड़ रै नैड़ो जायर जद खड़कावण खातर हाथ बधायो, तो ईनक रा नैण फाट्योड़ा रैग्या । किवाड़ माथै अेक कागद चेप्योड़ो, जिण में लिख्यो हो—बिकरी खातर ।

अबै ईनक सूं वठै ऊभीज्यो कोनी । इत्ती ताळ अणथक चाल सूं अविराम चालणिया पग अबै उत्तर देवण लागग्या, पण ईनक वठै फेर ठैर्‌यो कोनी अर गळी री ढाळ कानी अोर आगीनैं गयो परो । मन में विचार करतो रैयो—तो कांई अंनी मरगी ? नई तो घर विकण रो कांई कारण ! पण म्हारा टाबर तो हुवैला । अंनी अर टाबर दोनूं ई कोनी ?

वठै सूं टुरनैं ईनक जाजां में माल लादण रै डॉक कानी टुर्‌यो । वठै अेक जूनी सराय ही जिकी नैं ईनक जुगां सूं जाणतो हो । मन मे सोच्यो—वा सराय तो आज सूं मोकळा बरसां पैली भी पड़ूं-पड़ूं ही, अबै तो धूड़ में रळगी हुवैली । पण तो ई देखूं तो सरी । आसरो तो लेवणो पड़सी । आगै हेठ कियां रात कढसी ? सराय कानी टुरग्यो—कित्ती जूनी सराय ही बा । म्हारै दादै री टेम सूं भी पैली री हुवैली । काठ रै सिलीपटां रै सायरै भींतां चिण्योड़ी ही । बोदी, सुळ्‌योड़ी छात जिकी नैं उदेई खाय-खायर थोथी कर न्हांखी ही अर जिण मे ऊपर सूं धूड़ बरसण लागगी ही । चिड़्‌या भी आपरा माळना बणाय राख्या हा । भींतां रा लेवड़ा उतरग्या हा अर जगा-जगां खागळा अर खाडा पड़्‌गा हा । मरामत कदेई हुई कोनी ।

सराय रो मालक तो म्हारे अठै रैवतां थकां ई खलींदर हुयग्यो हो। जद सराय मे आयो तो मालम पड़ी कै इण रो मालक तो मरग्यो पण उणरी बऊ मरियम लेन, दिनोदिन घटतै नफै रै बावजूद भी इण नै हाल चालू राखी है। ईनक नै याद आयो कै किणी जमानै मे आ सराय मांड्या सूं खचाखच भर्योड़ी रैवती, पण अबै वा चैलपैल, वा रोनक कठै ? सूनी-सूनी पड़ी है। कोई घर-वायरो हुवै जिको अठै आसरो लकै। ईनक अठै ठैरग्यो। जद मरियम नाव पूछ्यो, तो ईनक अेकरसी मरियम रै सामो झाक्यो, फेर बोल्यो—म्हारो नाव, म्हारो नाव है 'नेटिव'।

मरियम-"नेटिव के, आ बेटा, आ सराय थांरी है, तनै आछो लागै जिकै कमरै में ठैरजा। अेकली रा तो दिन ई खूटै कोनी। ई सराय में कोई कमाई थोड़ी ई है, पण ईं रै मिस मिनखा रा मूंडा तो दीसै है। अच्छ्या, अबार तूं थक्योड़ो हुसी, भूखो।"

मरियम रोटी बणाई। ईनक जीमर सोयग्यो।

••

उठर ग्रेनी मेरी रै बिछावणै कनै गयी। बा सूती ही। ग्रेक बार तो सांपो भालर उठावण लागी, फेर पाछी ग्रापरै बिछावणै मायं ग्रायगी। पोबाड़ो ताळ कमरै मे ग्रठी-उठी घूमी, पण हाल ग्रंधारो हो। ज्यूं ई दिन रो उजास लखायो, ग्रेनी मेरी नै चंचेड़ी। मेरी चकरायी—ग्राज तईं मा कदेई ग्रंधारै-ग्रंधारै चंचेड़र जगाणो को ही नी।

ग्रेनी कैयो—"मेरी, म्हैं थारी बात मानण रो विचार कर लियो।"

मेरी री नींद हाल पूरी उडी कोनी, इण कारण बा समभी कोनी कै ग्रेनी कांई कैयो। ग्रेनी जद मेरी रा माथा भालर ग्रापरी बात नै दुसराई, तो मेरी उछळर ऊभी हुयगी, ग्रर वाल्टर नै भी उठाणयो। ग्रेनी कैवण लागी जिकै सूं पैलो तो बै फिलिप नै बुलावण खातर घर सूं भाग निकळ्या।

फिलिप घबरायग्यो, सायद ग्रेनी रै मायं में कोई सनक ग्रायगी हुसी—ग्रा सोचर बो बिना मूंडो धोयां, ग्रर बिना पट्टा बायां, हो ज्यूं ई ग्रायग्यो।

जद फिलिप ग्रेनी रै घर में पग मेलयो, तो ग्रेनी बारणै कनै सामी ग्रायी, फिलिप सूं हाथ मिलायो, बींनै ग्रापरी बांथां में भर लियो, ग्रर दोनां ग्रापस में ग्रेक बीजै रा होठ चूम लिया।

फेर ग्रेनी बोली—"मडीकण रो ग्रंधारो खतम हुयग्यो, ग्रर ग्रबै कोई इसो कारण कोनी कै ग्रापां ब्याव नईं करां।"

दोनूं टाबरां नै मा रै ग्राचरण मायं इचरज ग्रर हरख हुयो। इचरज नै बां दाब लियो, ग्रर हरख नै खबड़ दरसायो।

फिलिप कैयो—"ग्रब्बुया, ग्रेनी, थारै जचगी तो भगवान रै खातर, ग्रर ग्रापां दोनां खातर ग्रबै ढील-ढाम ना कर। सुभ काम में ढील चाछी कोनी।"

••

आपरा भी आपरा कोनी

अडीकतां–अडीकतां जुगां रा जुग बदीत हुयग्या, इण कारण फिलिप नै ग्रैनी सागै ब्याव असंभव लागण लागग्यो; पण छेवट बो दिन, बा घड़ी आयी। बै दोनूं धूमधाम सूं गिरजै मे गया। और भी दूजा मोकळा लोग गया। टण–टणाटण, टण-टणाटण गिरजै रा सगळा घण्टा एकै साथै आणंद रो उदघोस करण लागग्या। घण्टा री टणमणाट आखै गाव नै सनेसो सुणायो कै ग्रैनी अर फिलिप आज परणी-जग्या है, जिका कै इत्ता दिनां सूं, इत्ता बरसा सूं आपस मे एक-दूसरै नै परखता आया हा।

आज ग्रैनी इसी सज्योडी अर बणीठणी ही, कै आपरी ऊमर सूं पन्दै बरस घाट लागण लागगी। लोक चकराया कै ईनकै सूं ब्याव आळी बगत इणरो जिको मनमोवणो रूप अर कंवळो डील हो, उण मे, इत्ता बरसा रै उपरायत भी तिल मातर रो फरक नई आयो। ग्रैनी पक्कायत कई जड़ी-बूंटी रो सेवण करती हुवैली, नातर जोबन-धन तो थिर रैवण आळी चीज कोनी।

पण ग्रैनी जद परणीजर फिलिप रै सागै गयी तो उणरै चैरै माथै हरख नई, उदासी ही। बापड़ी ग्रैनी, बचना मे बधगी ही।

बा फिलिप रै घर मे रैवै पण अणमणी। बात करती-करती विचाळै ई चुप हुजावै, अर दो-तीन बार बतळायां भी पाछो उथळो नई देवै। अर जे उथळो देवण री कोसीस करै, तो आधो उथळो देवै, अर फेर बिचारां री सांकळ टूट जावै, अर बा आपरी बात पूरी नई कर सकै। रसोई करण नै बैठै, तो ध्यान और कठीनै ई जावै परो, दूध भूकणै तो उफणबो करो, रोटी बळै तो बळबो करो। घड़ी-घड़ी बार, बा बिना बतळायां ई कैय देवै–"हैं ?", "कांई" ? बीनै इयां लखावै जाणै कोई हर बगत बीरै सागै चालै है, अर कान मे कोई बात कैवै है।

इसी हालत रै कारण ग्रैनी डरू-फरू रैवण लागगी। ऐकली रो घर में मन नई लागतो, इण कारण न तो बा घर में ऐकली बड़ती अर ना ऐकली रैवती। अर घर रो ताळो खोलर माय बड़ती तो, हाथ खूंटै रै माथै ई रुक जावतो। सायद बीनै लखावतो कै कोई पूछै है–'कठै जावै है ग्रैनी ? कीरै घर मे जावै है ? तू

तो ईनक री बऊ ही, पर्ण फिलिप री किणी लागगी। पर ऐं विचार उठतो ईं बीरा पग बठै ई रुक जावता, पर वा मेहनी घर में नईं बड़ती।

सऊ-सऊ में फिलिप मंनी नै समझावण री चेष्टा करी—"मंनी, थनै काईं लगावै ? कोई दीनै है, डरावै-धमकावै है ? बात काईं है, मनै जे तू बतावै तो हूं सावळ परबंध करूं।"

थोड़ा दिन पछै हुयां पछै फिलिप रो क्रोध मिटग्यो। बीनै टा पड़गी कै मंनी रो पग भारी है, पर इसी हालत में लुगायां आम तौर सूं इयां करण लाग जाया करै।

मंनी री उथळ-पुथळ रो कारण तो उणरै गरभ नईं, ईनक हो, पण फेर भी फिलिप आपरी बात साची समझण लागग्यो, कारण जद मंनी रै जापो हुयग्यो, अर जद बा जापै सूं उठी, तो उणरै माथै माथ सूं सगळा वैम निकळग्या। आपरै छोटै टाबर सागै जाणै मंनी रो आपरो नवो जनम हुयग्यो अर बा अेक दम नवी-नवेली हुवै ज्यूं दीसण लागगी।

मंनी छोटै टाबर नै रमावण में बिलम्योड़ी रैवती। ईनक नै अबै बा बिसरगी। अर जे बिसरी नईं तो भी उणरै मारग सूं ईनक रै ध्यान आळो रोड़ो टळगो सिरकग्यो। अबै मंनी फिलिप री सर्वसर्वा है, अर फिलिप मंनी रो सर्वसर्वा! ईनक बापड़ो गयो गत्तां सूं।"

इण काणी सूं ईनक रै चैरै माथै कै लिलाड़ माथैक केईतरै रा भाव भी नईं भळक्या। काणी सुणन आळै बिच्चै काणी कैवण आळी अलबत परभावित थोड़ी ही। काणी कैवता-कैवता किन्नी ई बार तो बीरी बोली पळपळी हुयगी, छाती भरीजगी, अर दो-तीन बार बीं आपरी आख्यां पूंछी, अर फेर सरू करण री हिंमत बटोरण खातर थोड़ी-थोड़ी थमी। हां, जद माजी कैयो—"ईनक बापड़ो गयो गत्ता सूं" तो ईनक आपरो किडकाबरो माथो दुख सूं हिलावता कैयो—"गयो बापड़ो गत्ता सूं।" फेर मन-मन में सपसपाट कर्‌यो—"गयो बापड़ो गत्तां सूं!"

ईनक रै मन में जची—"जद हूं अठै आयग्यो, इण गाव अर गळी में जीवतो-जागतो पूगग्यो, अर म्हैं समाचार सुण लिया कै मंनी कठै है अर किण हाल में है, तो फेर जे अेक बार मंनी नै सोरी-सुखी देख लूं, तो म्हारै मन नै सायंती मिल जावै। अै बिचार ईनक रै मन में उठता, बो बारै आवण खातर संभतो, अर फेर पग पाछा पड जावता—कठै ई आ नईं हुवै कै म्हारै देखणनै गयां सूं मंनी री फूलां भरी बगेची में पतझड आय जावै। पण जिण मंनी रो चैरो देखण खातर दस बरसां सूं इंदाळू हुय रैयो हूं, ईनक सोच्यो, बीनै देख्यां बिना म्हारो मन मानै

भी तो कोनी ! भैंनी रै अधरां री अेक हळकी-सी मुस्कराट मे सगळी दुनियां री संपदां सूं सौ गुणो सुख भर्‌यो है । देखसूं, देखसूं पक्कायत देखसूं ।''

नवबर रो अेक दिन, भाए बादळां री ओट, दिन मे भी उजास री टोटो, फेर सइयां पडता ई तो रात जिसो अंधारो छायग्यो । बो चुपचाप सराय सूं निकळर पाड़ कानी जायर बैठग्यो । बठै बैठ्यो-बैठ्यो आपरी जीवण री पोथी रा पाना पळटतो रैयो जिण मे सुख-दुख री हजारूं बाता मड्योड़ी हो । पण अबै बा माय सूं अेक भी कैईज नईं सकती, कारण ईनक रो हिरदो दुख सूं काठो छलीजग्यो ।

बठै सूं फिलिप रो घर भी दीसतो हो, कारण उण मे तेज रोसणी जगती ही, जिकी सूं बीरो पिछोकड़ो अर पसवाडलो पाडोस, सगळा संचभण हा । ज्यूं समदर मे तेज रोसणी बळती देखर पखेरू उण सूं ललचायर नेंडा जावै, अर आपरो माथो टकरावै अर प्राण छोड़ देवै, इणी तरै फिलिप रै घर री रोसणी ईनक नै माडाणी आपरै कानी खाचर लेयगी ।

फिलिप रै रैवास रो कमरो तो सडक माथै हो पण पिछोकड़ै मे, जिणरै आगै मगड़ ई मगड़ पड्‌यो हो, अेक छोटोसोक बगेचो भी लगायोडो हो । बाग समचौरस हो, अर च्यारूंमेर टाटी खाच्योडी ही । तरै-तरै रा, रग-रगीला पुसब आप-आपरी अनोखी मैंक बायरियै सागै खिडावता हा । अठै सदाबहार रा पेड लाग्योड़ा हा, अर इण बगेचै रै च्यारूंमेर गड्डा रो मारग बणायोड़ो हो । अेक मारग बीचोबीच भी गयोडो हो । ईनक बीचलो मारग छोड़ दियो, अर टाटी रै सायेरै-सायेरै पेड रै लारै लुकग्यो अर बठै सू ईनक बो निजारो देख्यो जिको, बो जे नईं देखतो तो ई ठीक हो । पण ईनक रा दुख इत्ता अथाग हा कै अबै ठीक-बेठीक रो फरक ई मिटग्यो । इण दसा सूं माडी दसा और काई आसी ?

सामली भीत माथै बेल-बूंटा कढ्‌योड़ा है । आज री नवी रग्योडी ज्यूं दीसै । वारनिस कर्‌योड़ी लकडी रै चौखट माथै प्याला अर चादी रा चिमचा, काटा तथा दूजा बासण जचायोड़ा है जिका तेज च्यानणै मे चमचमाट करै । इणी तरै चूलो साफ-सुथरो'—सगळा-रा-सगळा बासण सोनै-चांदी ज्यूं चमकै । चूलै रै जीवणै कानी फिलिप, जिको केई जमानै मे अणपूंछ्‌यो अेभी हो, आज डील मे लूंठो हो अर बीरै डील रो बरण गुलाबी हो, अर बीरो टाबर बीरै गोडा माथै लियोड़ो हो । अर मेरी जिकी भैंनी सी सूं पर्दै जलम्योडी ही, पण भैंनी सी सूं लाबी ही, आपरै दूजै बाप कानी सुळ्योड़ी ही । कंवळा, सोवणा केस, पदमणी-सो पातळो अर कद रो पूरी, ईनक री लाडली बेटी, पोथै सूं लटकायोड़ो हाथीदात रो छल्लो (जिको दात मोरा ऊगण खातर टाबरो नै चाबण सारू देईजतो) लिया फिलिप री छोरी रै ऊपर हाथ पसार्‌यां ऊभी ही । छोरी बी छल्लै नै भालण री कोसीस करती ।

ढ़म्बो गुदगुदै हाथ में झल आवतो, पण फेर पाछो छूट जावतो, झल आवतो फेर पाछो छूट जावतो, इण तरै रो क्रम चालतो, पर बै सगळा घड़ी-घड़ी बार जोर-जोर सूं हसता जिण सूं घमचाड़लो मैदान भी गूंजण लाग जावतो।

ईनक नै विचार आयो—"म्हारी बेटी थारै दूजै बाप रै टाबर रा भी इत्ता लाड करै है, जे म्हारी ईं नै टा पड़ जावै कै हूं आयग्यो, तो आ किन्ना कोड करै! आ सोचर बीं आगै बधावण सारू पग मांड्यो, पण उणी बगत फेर दूजो विचार-रगण उठी—ईनक, थारी बेटी नै तूं एक जुग पैली प्रबोध ओस्था में छोड़र गयो, तनै बा काई जाणै, पर किया पिछाणै? जे ईं नै टा पड़ जावै कै तूं आयग्यो, तो ईं बीं नै फिलिप बाप्यो लागै जिसो तू थोड़ो ई लाग सकै। नै इण छोरी खातर कर्यो काई है? करतो चावै तो पछतावण हो, पण भगवान नै थारो कर्यो कबूल तो हो नी।"

धूलै रै हावै वाली घ्ंनी रसोई रै काम में लाग्योड़ी ही। बा थोड़ी-थोड़ी ताळ सूं आपरै टाबरियै कानी जावती अर जद सगळा जणा हसता तो बा आप मुळकती। घड़ी-घड़ी बार फिलिप सूं बात करती, फिलिप प्यारी आवाज में बोलतो।

घ्ंनी रै कनै ई उण रो बेटो वाल्टर ऊभो हो जिको ओस्या में घणो नईं हुवतां थकां भी कद में पूरो बध कर्यो हो अर डौल में सैठो हो। बीं कैयो—"बापू, बेबी म्हा सगळा में घणो फूटरी है।" आ सुणर फिलिप मुळक्यो। वाल्टर फेर कैयो—"बेबी, तूं तो बौत हुंसियार है भई। बोल, तूं पढ़ण खातर लन्दन जासीक ऑक्सफोर्ड?" फिलिप फेर मुळक्यो। वाल्टर बेबी रै गाला नै आपरै दोनां हाथां में गेलाभाक दबाया। बेबी हसी अर सगळा हंसण लागग्या।

जिण घ्ंनी खातर, जिण मेरी अर वाल्टर खातर ईनक घर-बार छोड़र, घोड़ो अर नाव वेचर परदेसां गयो, बठै इत्ता रोभा देख्या, अर मिनख-बायरै टापू में रैवतां-रैवतां मिनख सूं हाडो हूजावणै पर भी पाछो घर आवण री लालसा बणायां राखी, बा बींरी घण आज बींरी घण को रैई नी। बीं घ्ंनी रै छोटै टाबरियै नै देख्यो पण बो टाबर जिको आपरै बाप रै गोडा माथै किलकार्‌या भरतो हो, ईनक रो नईं हो। कुटम रा सगळा जणा अेक नईं हुवतां थकां भी वै इत्ता घुल मिळग्या हा कै सगळा अेक ई परवार रा हुवै, फिलिप सूं दूजो बाप हुवण री अथवा टाबरां रै दूजै रा टाबर हुवण री गंध रो लवलेस तक नईं ही।

"किसैक सुख सूं, आणंद सूं, हेत सूं ऐ सगळा रैवै, पण इण में म्हारो ठौर अेक रत्ती भर ई कोनी। म्हारा आपरा टाबर, जिका अबै जोध जवान दीसण लागग्या, स्याणा-समझणा हुयग्या, बै खुद म्हारा को रैया नी! घ्ंनी अर टाबरां

मूं जिको प्यार अर आदर मनैं मिलणो चाईजतो हो, उण रो अधिकारी, म्हारी जगा आज दूजो आदमी बण बैठ्यो है।"

मरियम ॲनी री सगळी बातां ईनक नैं सावळ आंडर सुणाय दी ही, पण काना-सुणी अर आंख्यां-देखी में इत्तो फरक हुवै कै जिकी बातां ईनक मरियम कनैं चुपचाप, चैरैं मार्थं बिना कोई भाव लाया, सुणतो रैयो, बी ईनक रो मन पीपळ रैं पान ज्यूं डोलण लागग्यो।

सोच्यो—"ॲनी फिलिप रैं सागै सोरै सास बधी कोनी। म्हारै आवण री आस छूट्या सूं ई बीं फिलिप रो आसरो लियो है। जे हाल ई ॲनी नैं ठा पड़ जावै कै हूं आयग्यो, तो बा म्हारै प्यार नैं ठुकरासी थोड़ी ई। जद ॲनी म्हारै सार्थ आसी, तो म्हारा आपरा टाबर दूजै बाप सागै थोड़ा ई रैसी।"

ईनक हीमत भेळी करी। हेलो कर्‌यो–"ॲनी!"

और सगळा तो आपरी बातां अर हंसा में लाग्योड़ा हा, पण ॲनी रैं काना में बो घणा बरसा पैली रो मैंओ हेलो पूगतां ई कान खड़ा हुयग्या। हाथ मायलो बासण छूटग्यो अर बा सूनवाड कानी जोवण लागगी। मन में कर्‌यो—"ईनक जिसो, ठीक ईनक जिसो आवाज इत्ता बरसा सूं कियां कान में आई? हूं आप अधगैली हू, सिनकण हूं, बैठी-बैठी रैं इयां ई सईड़ उड़ग्यो। कठै ईनक है, अर कठै ईनक री अवाज है।" बीं री आख्या आली हुयगी, अर बी ईनक सिवाय और केई नैं ठा घाल्या बिना, बानैं पूंछली।

ईनक रैं हिरदै में उथळ-पुथळ माचगी। "ॲनी म्हारी है, टाबर म्हारा है। फिलिप! तूं कुण है? हूं आयो जित्तै तैं आंरी परवरिस करी, थारो ओसाण है पण अबै म्हारा नै लायर मनैं सूंप।" ईनक सोच्यो कै इण तरैं जोर सूं कैऊं, पण फेर विचार आयो कै जे हू चवड़ै आयग्या, तो इण घर री सायनो अर सुख रैं लाय लाग जासी। सुख री जगा दुख आपरो आसण बिछासी। म्हारो अठै अेक पळ-छिन खातर ई रुकणो ठीक कोनी। जे जीभ कवजै में नईं रैई, तो गजब हूजासी। म्हारै मन री रळी ठेठ सूं ई आ रैई है कै ॲनी सोरी-सुखी रैवणी चाईजै, टाबरां नैं सावळ पढाय-लिखायर हुंसियार करणा चाईजै। अै दोनूं काम फिलिप आछी तरैं कर दिया तो अबै हू ई री मेनत रा फळ ईं नै क्यूं नी चाखण दूं?

मूंडो खुलणो चावै। जीभ नैं रुळी आवै कै बा ॲनी नैं हेलो करै। ईनक नै ड हो कै जे अठै और ठैरग्यो, तो बो जोर सूं चीख पड़सी—"ॲनी, मेरी, वाल्टर!"

पगां में ऊभो रैवण री सगती नईं रैई। बो बैठग्यो। सास फूलग्यो। ब सूं गोडाळिया-गोडाळिया टुरण लाग्यो, जे ऊभो-ऊभो जावै, अर दीस जावै, त किसोक हुवै! पण गोडाळियां चालण में भी उतावळ नईं कर सकै, हेठै ग

बिग्योड़ा है जै ब्याग उतावळ रै कारण मरणशाट हुयावै अर बग्याळा नै बैम पड़ जावै, तो किमीक हुवै। इण कारण भीत रै साखेरै-बारेरै, हौळै हौळै ईनक वरोपी रै फाटक बनै घायो। भगर-भीर फाटक खोल्यो, अर ऊणी सर्द पाछो जड़ दियो आंगे बेमार रै कमरै रो बारी खोल दी। पछै बो सूनै बगड मे धामग्यो।

पछै आयर ईनक भगवान री प्रार्थना करण सारू मुळको नाखतो, पण पोरा रो मन निकळग्यो हो, अर बो ऊंधे मूंडे जमीं मार्थ पड़ग्यो। पड़्यो पड़्यो घणी वगी धांसळ्यां सूं फुसरतो रैयो, अर भगवान सूं प्रार्थना करी—'हे सरवसगतीवान, म्हारा दुख मनै हद सूं ऊपर कर नीमरग्या। मनै म्हारै में सगती कोनी कै हूं घनै संभल कर सकूं। भगवान! म्हारा मालक! तैं मनै उण सूनै टापू सूं काढ्यो, मनै मिनखां-भेळो कर्‌यो अर अठै पुगायो, पां पांख्यां केवा देखाळण खातर ई इत्ती किरपा करी ही कांई? भगवान! हूं जाणूं, तैं म्हारो बडै घणी-घणी मायना करी। म्हारा तारणहार! थारै घर में दया रो पार कोनी। मवार तईं दया करतो आयो है, तो थोड़ी दया और कर, और कर म्हारा धणी! मवार तनै टाळर म्हारो और कोई कोनी, इण बेरमपायत रै कारण म्हारो दम घुटै, अर इसी कुबगाद सूं कै हूं हाथ भालर धनी पर म्हारै टाबरां नै म्हारै घर में निपाऊं। पण नईं तूं मनै सगती दे, जिण सूं म्हारो इण इंछा नै हूं काबू में राख सकूं,— म्हारै जीवनां जी धनी नै ठा नईं पड़ै कै हूं जीवूं हूं। जे धनी नै ठा पड़गी, तो बा घर री रैसी न घाट री।"

ईनक फेर कैयो—"भगवान! तूं मनै इत्ती सगती और दे कै हूं म्हारै टाबरां आगै भी म्हारो परचो नईं देऊं। भगवान! म्हारै टाबर है, पण हूं बांसूं बोल ई सकूं कोनी? बांनै बतळाय ई सकूं कोनी? म्हारा टाबर तो मनै ओळखै कोनी, पण जे कदास हूं बांसूं बात करण नै गयो परो, तो म्हारै सूं इयां कैयां बिना कियां रैईजसी कै हूं थांरो बाप हूं। पण नईं हूं बांसूं बात करूं कोनी। म्हारै भाग में टाबरां नैं चूमणो भी लिख्योडो कोनी अर ना म्हारी बेटी, जिकी आपरी मा जिसी ई फूटरी है, अर म्हारो बेटो, म्हारै उणियारै, पण म्हारै सूं ई अिपको कदेई आपरो बाप समझर मनै चूम सकै।"

इत्ती प्रार्थना कर्‌यां पछै ईनक री जीभ रुकगी, माथो सूनो हुयग्यो अर सगळै डील में सण्णाटो बैयग्यो। ईनक नैं मुरछा आयगी, अर बो थोडी ताळ तईं इणी हालत में पड्यो रैयो। जद पाछो चेतो आंपर्‌यो, तो आंख्यां मसळर उठ्यो, गाभा भड़काया, अर सराय कानी टुरग्यो। आखै मारग बो आं ई सब्दां नै उथळतो रैयो— "धनी नै नईं कैवणो, बीनै ठा नईं घालणी"—जाणै केई गीत री टेर हुवै।

पण सागर रै खारै जळ में भी, उण रै तळै मू फूटर निकळणियै मीठै पाणी रै सोतै रो पाणी तो मीठो ई निकळतो रैवै, इणी तरै इण घोर दुख, निरासा अर वेदना री घड़ी में भगवान माथै अटळ बिस्वास ई ईनक री अेकलो सायेरो हो। इण भरोसे रै कारण ई वो सोच्या करतो – 'भगवान करै जिकी ठीक करै।'

इण तरै सोच-बिचार करतो-करतो वो जद सराय पूग्यो तो रात खासा पड़गी ही। सराय में मरियम टाळ सगळा सोयग्या हा। वा ईनक नै देखते ई बोली—"अरे बेटा ! तूं जुलम करै। इसी ठारी में बारै गयो, इसो निमळो थारो डील, तूं कोई थारी लुगाई-टाबरां सूं मिलण नै गयो ? तनै म्हारी सोगन है, तूं संझ्या पड़्यां पछै बारै पग ना मेल्या कर।"

ईनक माचै माथै बैठर कामळ ओढली। माजी कनै आयर बैठगी। फेर पूछ्यो —"हूं तो घडीकती-घडीकती आसती हुयगी, गयो कठै हो आज ?"

"निकळ्यो तो घूमण खातर ई हो," ईनक कैयो, "फेर कोई सीधा लोक मिलग्या, बानै देखण लागग्या।"

"देखण लागग्यो ?" मरियम कैयो, "तनै हाल सावळ बोलणो ई आवै कोनी। देखण लागग्योक बाता करण लागग्यो ?"

"हूं पढ्योड़ो कोनी, माजी," ईनक कैयो, "भाभो आदमी हूं।"

ईनक सोयग्यो अर मरियम आपरै माचै गई।

फेर मजूरी

दूजै दिन ईनक सदेई आळी टेम उठ्यो कोनी । मरियम हेलो कर्यो । ईनक कैयो—"नींद में कोनी, जागूं हूं, पण रात आळी सरदी सूं डील करड़ो हुयोड़ो है ।"

मरियम झट अेक चिमचै में तेल तपायर लाई अर बोली—"लै, थोड़ो मालस कर लै जिको अकड़ाव उतर जासी ।"

ईनक बैठग्यो । मरियम कैयो—"लै, हूं मसळ दूं । तूं तो म्हारै बेटै जिसो है ।"

जद ईनक आपरा पग भेळा कर लिया तो मरियम पसवाड़ली कुरसी माथै बैठगी । बोली—"बेटा, तूं मठै री ठारी जाणै कोनी । मांरै-तातै नै तो माथै सूं हेटै ई पग नईं टेकणो ।"

"अबार तो दो-तीन दिन हुयग्या, कोई नवी बात सुणाई कोनी ।" कैयर ईनक आपरी पींडी रै तेल मसळण लागग्यो ।

मरियम कैयो—"बेटा, म्हारै कनै तो बातां रो अखूट भण्डार है, जे बारै मईना लगोलग कैऊं, तो ई खूटै कोनी । पण थारी विणपिण देखूं जद म्हारो जीव उचट जावै अर हू अेकली बैठी-बैठी मन में ऊंधा गोट उठावती रैऊं ।"

ईनक कैयो—"माजी, अेक दिन था कळचक्री आळै री बऊ री बात भी कैई ही नी ?"

"हां, हां, अंनी अर फिलिप री पूछै है नी ?" कैयर माजी आपरी कुरसी माथै रै नैड़ी सिरकाई ।

"तो था कोई वाणी सुणाई हीक, ईं नांव रा मिनख-लुगाई सांचेई कोई घरै हा ?" कैवतो-कैवतो ईनक आपरी मांथ्यां हेटो कर्यां मालस करतो रैयो ।

मरियम कैयो—"तूं जाबक सीधो आदमी है । हू कैऊं जिकी बात नूं साबळ समझै कोनी, ज्यूं समझावै । अरे बेटा, म्हैं तनै इणिहाली अथवा जोड़्योड़ी वाणी को सुणाई नी, फिलिप अर अंनी दोनूं हाल भी जीवता-जागता, मोरा सुखी बैठ्या है ।"

"तो माजी, अंनी रो आगलो धणी परदेस कमावण नै गयो, अर बीरै पाछो आवता पैलां अंनी दूजो ब्याव कर लियो, पंचड़ै धणी रो कांईं डर ई को लाग्योनी बीनै ?" ईनक पूछ्यो ।

"डर ?" माजी कँयो "डर री तूं पूछ ई ना। डर रै कारण ई तो
ररताबंब फिलिप नै टाळती-टरकावती रैई; जे डर नईं हुवतो तो बा दस-ब
बरस गमायर क्यांव क्यूं करती, पैंनी ई कर लेवती। डर रै सागै बा पैंलड़ै धणी
प्यार भी करती। बो मालदार तौ को हो नी, पण ग्रापस में दोना रा जीव रळ्यो
हा। ग्रैनी री जगां जे कोई दूजी लुगाई हुवती, तो बा फिलिप जिसै ग्रादमी
ब्याव करण मे इत्ता धोवा को घालती नी।"

"ग्रा बात है ?" ईनक पूछ्यो।

"हां," माजी कँयो—"हाल ई जे कोई ग्रैनी नै कँय देवै कै थारो पैंलड़ो ध
मरायो, म्हैं बीनै मरयोडै नै देख्यो, तो बा न्याल हुजावै, कारण पैंलडै धणी ग्र
सूळो बीरै काळजै मे रात-दिन खुबै।"

मरियम री बात सुणर ईनक री ग्राख्यां फाटगी, ग्रर बो फाट्योडी ग्रां
सूं मरियम सामो भांकतो रैयो।

मरियम पूछ्यो, "क्यूं, उदास क्यूं हुयग्यो नेटिव ? इसी ठा पड़ै कै दूजी
बिच्चै तनै ग्रा बात घणी सुवाई है।"

"सुवाई तो कोनी, पण बरबादी माथै बिचार करूं हूं। मिनख कांई तै
ग्रर भगवान कांई री कांई करदै।" कँयर ईनक चुप बैठग्यो। मरियम नै ब
कनै केई दूजै मुसाफर री भणक पड़ी, ग्रर बा उठर गई परी। ईनक मन-मन में क
"जे ग्रैनी म्हारै मरण रा समाचार पाया सोरी हुसी, तो, जद भगवान मनै ग्राप
बुलाय लेसी, तो बै भी ग्रैनी नै मिल जासी। हूं चाऊं कै ग्रैनी सुखी रैवै, बीरै क
रो कांटो ग्रबार ई निकळ जावै, पण कुमौत कियां मरीजै। हूं भगवान रै हे
ग्राधीकूं हूं।"

ईनक री हालत सुधार माथै ग्रावती सरू हुयगी ग्रर बो ग्राछी तरै फि
फिरण लागग्यो। ग्रबै पेट-भराई रो सवाल सामो ग्रायर ऊभग्यो। "जे संझ्या
मांगण नै निकळ जाऊं, तो म्हारै पेट-पूरती रोट्यां तो लियाऊं।" ईनक क
"पण मंगतो बणर दुनिया ग्रागै हाथ पसारूं, दर-दर रोटी मांगतो फिरूं,
ठोकरां खाऊं, जद सिरजणहार मनै कमावण लियरथ बणायो है ? हाथ-पग
मजूरी खातर है, दीन बणर मांगण खातर, पारकी माथै भार बधावण खातर
ठीक है, ग्रागै ग्राळी पूंच रैई कोनी, पण म्हारो ग्रेक पेट तो हाल ई भर स
म्हारै पेट खातर कित्तोक धन चाईजै, कित्तोक धान चाईजै। हूं मजूरी क
पेट भरसूं।"

गाव में जिका बंदा हा, बां में कोई इसो नईं हो जिण री ग्रापक

बणावण रै काम में लाग जावतो, कदेई सुथार री काम करण लाग जावतो, कदेई माछ्यां खातर माछल्यां पकड़ण री जाळ्यां गूंथण रै काम में लागतो, तो कदेई जात री समान लदावण-उतरावण रै धंधै में लागतो, अर इण तरै आपरी जरूरत माफक पीसा कमायर पाछो बावड़तो। सराय में आयां सूं मरियम सदेई तळपूछा लेवती — "आज कित्ता पीसा कमाया ? कांई-कांई काम कर्‌यो ? थाकेलो तो को आयो नी ?"

ईनक पाछा इसा उथळ देय देवतो जिण सूं मरियम राजी रैवती।

पण ईनक रै मन में उमंग कठै ही, उछाह कठै हो ? काम करै पीसा, कमावै तो कीरै खातर ? भेळा करै तो कीरै खातर ? अै सवाल बीरै सामा आवता, पण या में कोई तंत नईं लागतो। आखर, मनम मांय सूं आवाज आवतो —"म्हारै कुण है, कोई कोनी। पछै खोरसो हूं कीरै खातर करूं, कीरै खातर जोड़ूं, कीरै खातर छोडर जावणो है ?"

इणी कारण ईनक रो मन केई अेक काम में नईं लागतो। दस दिन अेक जगा काम कर्‌यां, तो पन्द्रै दिन दूजी जगां। इण तरै दिन तोड़तां-तोड़तां बो सागी दिन आयग्यो, जिण दिन ईनक जातरा सूं इण गांव में पाछो आयो हो—साल भर बीतग्यो। जीवण रो आकरसण जद मिटग्यो, तो इसो जीवण मौत सूं माड़ो है।

ईनक रा खांचा ढीला पड़ग्या। काळजै माथै भारी सदमो पूग्यो—"साल बीतग्यो, अर हूं निरुद्देस्य गोता खाऊं हूं, म्हारै घर थकां, घर आळी थकां, बेटै थकां, बेटी थकां ! हूं बानै देख ई सकूं कोनी, बा सूं सामणा ई कर सकूं कोनी। भगवान ! थारी गत न्यारी है।"

चालतां-चालतां बीरो डील गरम हुय जावतो, हाड भारी लखावण लाग जावता, दो-दो दिनां तईं भूख ई नईं लागती। मरियम नोरा करती तो दो गास खायर उठ जावतो। दो दिन नौकरी गयो, दस दिन नागा करदी, फेर काम माथै जावण री चेस्टा करतो, पण ऊभो हुवण री भी आसंग नईं। मरियम पालती— "बेटा, तूं कठै जावै, आराम कर। मनै तूं म्हारै जायोड़ै जिसो लागण लागग्यो। इसी निमळाई में तनै खोरसो करण नै कियां जावण दूं।"

पण जित्तै तईं हलण हालता रैया, ईनक माचै में पड़्‌यो रैयर मरियम माथै भार बणनो कबूल नईं कर्‌यो। बो काम माथै जावतो। पाछो आवतो जित्तै थकर चूर हूजावतो, अर घंटा-आध-घंटा माचै लाधै सुस्तावतो, फेर जीमतो।

आखर, बारै निकळण जिसी हालत रैई कोनी, अर बो सराय रै मांय-मांय ई रैवण लागग्यो। मरियम कैयो–"बेटा, तू फिकर ना कर, जे म्हारो पेट भरीजसी, तो थारो ई भरीज जासी। मिनख तो फालतू आपरो सोच करै, सोच करण आळो मोटो धणी है।"

पण ईनक री हालत बिगाड़ माथै ई रैई, अर अबै सराय में घूमण लायक सरधा भी रैई कोनी, अर बो कुरसी माथै बैठ्यो रैवतो अर मरियम लेन बीनै राजी करण खातर, बीरो जीव लगावण खातर हरख री बाता सुणावती, हसावण री *बातां सुणावती, पण ईनक रै हंसण रा, हरखावण रा दिन तो लारै, तिरा लारै* रैयग्या हा। अबै कोई भी बात सुणर बीरो जीव सोरो हूवतो कोनी, हरखावणो तो आघो रैयो। जे साची पूछी जावै, तो अबै सुख-दुख दोना सू बो उपराम हुयग्यो हो। धरती सूं अळघो गयां ज्यूं गुरुत्वाकरसण खतम हूजावै, इणी तरै बो सुख-दुख दोना री परिधि सूं घणो अळघो पूंचग्यो हो।

जद सागर मे तोफान आय जावै, जाज री हालत खतरै मे पड़ जावै। बेतार अथवा दूजै जरियै सूं सायता री माग करै। सायता पूग्या पैली ई जाज केई चट्टाण सूं टकराय जावै अर टूट जावण कारण उण मे पाणी भरीजणो सरू हूजावै अर बा डूबण लाग जावै। उण बगत सगळा री आख्या सायता सारू आवण आळै जाज कानी लाग्योड़ी रैवै--कोई पाल, मस्तूल, जे कदास दीख जावै तो प्राण बच जावै। जित्तै तई दूजो जाज हाथ नई आवै, डूबण आळै जाज रा जातरी हायतोबा करै। पण ईनक री रगत न्यारी ई ही। बीरै जीवण रो जाज डूबण आळो ही, पण ईनक रै माथै घबराहट को ही नी। जाज डूबणो बीरै खातर आस-किरण हो। जाज डूबणो यानी सरीर खतम हूवणो, अथवा मौत आयां बीनै आपरै अथाग दुख सू तो छूटको मिलसी ई, पण अेक बात रै कारण घणो सतोस हो कै अेनी रै मन री दोघड़चिन्त्या खतम हूजासी। अबार तई जिण डर री भट्टी मे अेनी जळती ही, बा भट्टी बुझ जासी। अबार तई अेनी नै जिको डर हो कै जे ईनक आयग्यो, तो काई करसूं ?--बो डर मिट जासी, अर अेनी नै फिलिप रै सागै जिको सुख मिलै है, उण रो बा निरभै हुयनै उपभोग कर सकसी।

खुद आपरा प्राण देयर भी ईनक अेनी नै सुखी बणावणो चावतो हो, अर ई अबै बीरै जीवण री रुळी ही।

आखरी सनेसो

रात री वेळा ही। चूं'मकी जगती खोहर मरियम मायरै बिछावणां में पड़ी-पड़ी मन सूं बातां करती ही। नींद तो घणी आवती कोनी, पण तो ई आराम करण खातर माथै मार्थ हाथ ढरळा तो करणा पड़ता। जद बा आधी नींद में अर आधी जागती ही, तो ईनक हेलो कर्‌यो। हेलो सुणीजग्यो, पण आधी नींद ही, इण कारण बोली कोनी। "माजी!" दूजो हेलो फेर जोर सूं कर्‌यो। बा चमकर उठी, अर दीवै री बाट सावळ करी, फेर ईनक रै पगवाड़ली कुरसी बीरै माथै रै नैड़ो सिरकायर बैठती बोली—"क्यूं नेटिव, अबार हेलो किया कर्‌यो, तबियत तो सावळ है?"

ईनक कैयो—"माजी, माजी, थानै अेक बात कैवणी है। मुसताऊ बात कैवणी है।"

माजी कान ऊभा कर दिया, आख्यां पूरी खोल दी अर नम आगीनै करली।

"क्यू, सुणीजग्यो माजी, हू थानै अेक भेद री बात कैवणी चाऊं, पण माजी, थानै सौगन खावणी पड़सी।" कैवतो-कैवतो ईनक माजी कानी फुरग्यो।

"इसी काई बात है बेटा? थारी गुपनाऊ बात दूजा नै कियां बता सकूं? तनै म्हारो इत्तो ई भरोसो कोनी? हू तनै म्हारो बेटो समभूं हू, तूं मनै थारी मा को समभै नी? अर जे समभै है, तो फेर म्हारो अभरोसो क्यूं करै?" कैयर मरियम ईनक रै मूंडै माथै हाथ फेर्‌यो।

ईनक कैयो—"माजी, थारी किरपा तो हूं कदेई बीसरू कोनी, पण थारो समाव काई मोळो है, अर थारै पेट में बात खटै काई कमती है, इण कारण, जे थे सौगन खावो तो फेर हू अेक बात कैऊं।"

मरियम बोली—"वा रे नेटिव! तैं मनै समभी कोनी। मनै अस्सी सूं ऊपर बरस आया है, जे हूं मोळी हूवती तो आज तई म्हारो घर लोक कदेई खाय जावता, अर मनै घर-घर भीख मागणी पड़ती। तूं मनै जाबक गैली ई समभै है काई? भोळी कैवो चावै गैली कैवो, बात तो अेक री अेक है।"

"माजी, हूं थानै स्याणा-समभणा समभूं, पण म्हारी बात इसी है कै सौगन दिरावणी जरूरी है। हूं माफी मागूं, थे रीस मत करज्यो।"

"सौगन खावणी ई पड़सी ?" माजी पूछ्यो ।

"खाली सौगन ई नईं, आपां रै ग्रन्थ बाइबल री सौगन खावणी पड़सी ।" कैयर ईनक सारो हुवण खातर पाछो सागी तरै सोयग्यो ।

मरियम नैं रीस आयगी । वा आपरी कुरसी मार्थ कांपती बोली—"तनैं सरम को आवै नी इसी बात करतै नैं ? आज तईं बयांसी बरसा री ऊमर तईं तो मनैं कैण ई बाइबल री सौगन दिराई कोनी, अर तूं मनैं इसी सौगन दिरावै ! वा रे नेटिव, तूं आछो आदमी है । जबरो बेटो बण्यो तूं म्हारो ।"

ईनक कैयो—"मा, तै म्हारै ऊपर इत्ती किरपा करी है, तो हूं कैऊं जिकी किरपा और कर दे । कर दे मा ! थारो टाबर हूं । तूं नईं करसी, तो फेर कुण करसी ? और म्हारो है कुण ?"

डोकरी री छाती पसीजगी । वा दीवट हाथ मे लेयर, मांय सूं बाइबल री पोथी काढर लाई ।

ईनक कैयो, "मा, म्हारै मर्‌यां पैली म्हारी बात तीजै कान ई नईं पूगणी चाईजै ।"

"हे भगवान !" कैयर मरियम आपरी दोनूं आंख्यां मींचती बोली, "इयां कोईं काली बातां करण लागग्यो । हारी-बेमारी तो सरीर रो धरम है । मिनख हुवै जिका इयां कदेई घबराया करै ? काल हूं डाक्टर नैं बुलाऊं । तूं देख लिये भलेईं, थेक दिन में आराम लखावण लाग जासी ।"

छेवट ईनक रै कैयां सूं मरियम लेत सौगन खायली । पण वा डर सूं कांपण लागगी कै अबै कुण जाणै ईनक इसी काईं गुपत बात कैसी जिण खातर बीं इत्ती करड़ी सौगन खवाई ही ।

आपरी सिलेटी आंख्यां ईनक डोकरी रै सगळै डील मार्थ घुमाई, फेर पूछ्यो—"मा, तूं इण गांव रै ईनक आरडन नैं जाणती ही काईं ?"

डोकरी कुरसी सूं ऊभी हुयगी—"अरे बेटा नेटिव, अबै हूं काईं कऊं, थारो तो माथो खराब हुयग्यो । इसी बैक्योड़ी बातां तो बारै मईना में नैं ग्रेक दिन ई करी कोनी । आज थारै हुयग्यो काईं ? ला, थारो हाथ म्हना, तनैं ताव चढ्यो लेज तो को चढ्यो नी ।"

कठाई धूजर बोली—"नईं बेटा, डील तो तातो लागै कोनी, फेर आ काईं बात ?"

ईनक बीच रो नजरान नारायर बोल्यो—"म्हारो नांवों ठीक है, बात-बा रो कोई चलो जोर कोनी । हूं तुं किसी बात रो डरतो रै मनै ।"

"पण मैं था कांई बात पूछी ? 'ईनक आरडन ?' आं तो म्हारै सामनै आवणो, म्हारी आंख्यां आगै आवो हुतो । हाथ ई बींरो फेरू म्हारी आत्मा माथै, आं हो जिको रो जिको, बीनै ! बींरो लारो फर, ऊंचो विचार, उदारीता सीधो, गांठ फोलारी सुरक्षा—पैदाइश काम देवता हुवै ज्यूं लखावै । कोई धणा काम को पाता नीं बावडै नं । थारै आगण पावणो, थारै बारण आवणो । केई सूं मलतोक निरतो निर्णीक हुवै, बोलाणतो ई कोनी । थारै काम सूं काम राखतो । तनै कांई बताऊ ईसो चोखो छोरो हो कै बींनै नवा सूं गांव री लिछमी उजली हुवै ज्यूं लखावै । बस थारी धुन में मगन रैवतो, और केई री परवा ई करतो कोनी । पण मगन बींरो कायदो राखता । थानै थारोई—काम रो करता, साचो घर ईमानदार ।"

"पण पछै बींरो माथो भींचो हुवग्यो, घर कोई बींरी परवा को करै नीं । धीरै-धीरै घर दुखभरा बाणी में ईनक बोल्यो । "आज सूं तीजै दिन म्हारी मौ है । इण सूं बेमी हूं ओढ कोनी । माजी, घबरावो मा, बो ईनक हूं ई हूं, ईन आरडन ।"

डोकरी रै मूं डै सूं पेंकापेक बोल निकळी जाणै कोई मिरगी अथवा लो सूं पैंसी निकळी हुवै । बा अचरोमें सूं बोली—"तूं आरडन ? मनै तैं साव भक्कूल बावरी गिण राखी है ? कठै रैयो ईनक आरडन, अर कठै रैयो नेटिव, तूं । थारं आपस में मुकाबलो ई कोनी । कांई तो बींरी बात कैवणी ही, थोडी तो बचनं बात कैवणी ही भलामाणस । तूं तो बूढो हुवै ज्यूं लागै है, ईनक हाल टाबर ई बापड़ो । बो तो थारै सूं, जे घणो नईं तो ई, कम-सूं-कम अेक फुट ऊंचो है, अेक फुट, समझ्यो ?"

"मा, भगवान री मरजी आगै मिनख री अेक ई चालै कोनीं । भगवान ई म्हारी आ दसा करी है । बींनै आ ई मंजूर ही । उणी मनै इण तरै झुकायर डोकरो हुवै ज्यूं बणाय दियो । अेकलपो रैवण रै कारण म्हारो डील टूटग्यो, जोबन गळग्यो, अर हूं अकाळ में ई इण दसा मे आयर पडग्यो । पण मा, तूं म्हारी बात मान, बो, तूं कैवै जिको ईनक आरडन, हूं ई हूं । दूजै मांड्यां सागै हूं कदेई-कदेई थारी सराय में आया करतो । तूं म्हारी बोली ओळखै कोनी ? म्है बीं लुगाई सूं ब्याव करो, जिकी दो बार आपरो नांव पळट्यो है । तूं म्हारी बात समझणी हुवैली—कळचक्री आळै फिलिप रै सूं ब्याव कर्यो है नी, बीं अैनी-सूं पैलपोत ब्याव म्हैं ई कर्यो हो ।

डोकरी आपरी आंख्यां मार्थ ताण दियो अर ईनक नै ओळखण री कोसीस करी।

ईनक कैयो—"कुरसी म्हारै ग्रोर नेडी खांचलै। माचै सूं अड़ायलै। सुणो म्हारी बात।"

ईनक आपरी जातरा री, जाज डूबण री, टापू मार्थ ग्रेकलपै जीवण री, बठै सूं निकळण री, पाछो गांव पूगण री, फेर ग्रैनी ग्रर आपरै टाबरां नै देखण री, सगळी बात मरियम लेन नै सुणाई। बा बीच-बीच में आल्यां मीच-मींचर लाबा सास लेवती रैई ग्रर बीरी ग्राख्यां सूं बराबर टळै-ळै ग्रासुवा री झडी लाग्योडी रैई। पण बीरै मन मे इसी ग्राई कै बा भटदेणी उठै ग्रर सगळै गांव मे इण बात रो ढोळो फेर देवै कै ग्ररे जिको ईनक ग्रारडन ग्राज सूं कित्ता ई बरसां पैली धन कमावण नै बिदेस गयो हो, ग्रर जिण नै लोक मरयोडो समभण लागग्या, ग्रर जिकै री बऊ ग्रैनी फिलिप रे सागै दूजो ब्याव कर लियो, बो ईनक ग्रारडन मर्‌यो कोनी। जीवतो बैठ्यो है, जीवतो बैठ्यो है, म्हारी सराय मे ग्रायर देखलो।

पण डोकरी री हीमत पड़ी कोनी। पैलडी बात तो आ, कै जे आ खबर गाव मे फैल जावै, तो काईं ठा ईं'रा नकीटा काईं-काईं निकळै—सायद ग्रैनी नै पाछी ईनक रै घर मे फिलिप ग्रावण देवैक नईं ग्रावण देवै। फेर ईनक ग्रर फिलिप में सायद झगडो हुवै, टाबर कठीनै रैवै? इण तरै रै झगड़ां री ग्रासकाया सूं डोकरी कापगी। इण रै उपरायत बा धरम-परायण लुगाई ही। बाइबल री सौगन खाया सूं बधाण मे ग्रायोड़ी ही। बाइबल री सौगन किया तोड़ै? आ सोचर बा बारै भाजी कोनी।

डोकरी सौगन तो खायली, पण इण गुपताऊ बात नै हजम करणो बीरै बस री बात नईं ही। बा सोचण लागी—"ग्रबै काईं करूं, कांई नईं करूं! इत्तो बात जाणर भी चुप बैठ्यो रैवणो तो ठीक कोनी।"

बा बोली—"नेटिव, ग्ररे, नईं, ईनक, देख, म्है थारी बात मानली, तो तूं भी म्हारी ग्रेक बात मान। बोल मानसी?"

ईनक बोल्यो कोनी, पण बीरै चैरै मार्थ कठोरता रा भाव नईं हा, इण सूं मरियम नै आपरी बात कैवण खातर हीमत बंधी। बा बोली—"ग्रेकर-सी तूं थारै टाबरां रा मूंडा तो देखलै। थारै हकारो भरण री ढील है, फेर तो हूं ग्रबार लेयर आय जाऊं, जाणै दोनूं बैन-भाई ग्रठै ई ऊभा हा। बोल, ईनक बोल! फुरती कर।

टाबरां रै नांव सूं ईनक रो हिवडो ललचायग्यो। सोच्यो—"जे ग्रेक बार म्हारै टाबरां सूं मिल लूं, बासूं बात करलूं, तो काळजै में ठडी लीक पड़ जावै।

काईं ठा टाबर भी म्हारी अडीक में हुवैला । आपरै असली बाप नैं देख्यां वै भी घणा-घणा राजी हुवैला । —आ वातां में दिमाग थोड़ो अळूभग्यो, इण कारण ईनक पाछो भटदैणो काईं उथळो नईं दियो ।"

चुप्पी नैं हकारो समभर मरियम कुरसी माथै सूं उछळर ऊभी हुई, अर बईर हुवगी । पाच-सात पावड़ा गई परी । इत्तै में ईनक रो ध्यान पाछो बावड़्यो । वी हेलो कर्यो —"मा, अठै आ । करै काईं है तूं । बुलावण रो कैण कीयो तनैं ? हूं करणो चाऊं ज्यूं तूं मनैं करण दे, बीच में पंचायती ना कर । म्हैं थारो भरोसो करनैं म्हारै हिरदै री बात थारै आगै काढी है । तनैं भरोसैं जोगी समभर म्हैं तनैं म्हारो भेद दियो है ।फेर तैं धरम-ग्रन्थ री सौगन भी खाई है, तो फेर तूं इयां मन-मरजी सूं टाबरां नैं लावण खातर कियां टुरगी ?"

मरियम पाछी आयर कुरसी माथै बैठगी । बोली—"बेटा, ईं में कोई हरज तो कोनी । टाबर आवता, तो कित्ता राजी हुवता । इत्ता बरसां पछै आपरै बा पसूं मिलणो कोई कम हरख री बात है ? पण खैर, थारै जे जची कोनी, तो नईं सई, हूं बुलाऊं कोनी । अच्छ्या, अबै बोल तूं और काईं कैवणो चावै है ?"

ईनक कैयो—"थारी कुरसी म्हारै नैडी सिरका, अर सावळ सोरी बैठजा । हूं कैऊं जिकै कानी ध्यान दे, अर बीनैं समभण री कोसीस कर ।"

"म्हारी सरधा दिन-दिन खीण हुवै है, अर अबै-ईं सरीर रो कोई भरोसो कोनी । जित्तै तईं म्हारै सूं बोलीजै है, वित्तै हूं चाऊं कै म्हारी बात तनैं सुणाऊं, अर थोड़ी भोळावण तनैं देवणी चाऊं ।" कैयर ईनक अेक लांबो सांस लियो ।

मरियम कैयो—"थारी इंछा माफक काम हुसी । बोल बेटा, तूं मनैं दूजी ना समभ ।"

ईनक कैयो—"जद तूं अंनी नैं देखै, तो बीनैं कैईजे—ईनक आखरी सांस तईं थारै सूं प्यार करतो । तनैं हिरदै सूं चावतो, आसीस देवतो अर थारै सुख री कामना करतो । फरक इत्तो है कै थे दोनूं आपस में मिल को सक्या नो । पण ईनक तनैं 'आपरै अतस सूं उत्ती सगै चावतो, जिण तरै बो तनैं तद चावतो हो जद कै वीरै माथै रै पगवाड़ै थारो माथो पोढ्या-करतो हो ।"

"थारो सनेसो अंनी नैं जरूर पूंचासूं । मरियम बोली ।"

"पण म्हारै मर्या पछै, पैली नईं, इण रो ध्यान राखे !" ईनक समभायर कैयो ।

"तू बेफिकर रह बेटा ।" मरियम भरोसो दिरायो ।

"अर म्हारी बेटी थैंनी नैं, जिकी नैं हूं छोटी ही जद सूं ई 'मेरी' कैयर बतळावतो, आ बात कैईजे कै म्हैं वींनैं फिलिप रै घर मे सोरी-सुखी देखी । बींरो रूप-रंग, डील-डोळ देखर म्हारो घणो जीव सोरो हुयो, अर हूं बींनैं आसीस देवतो-देवतो मर्‌यो हूं । भगवान नैं म्हारी बेटी रै सुख खातर हूं अत समै तई प्रार्थना करतो रैयो हूं ।" कैयर ईनक थमग्यो ।

"ठीक है ।" मरियम बोली ।

"अर म्हारै बेटै वाल्टर नैं भी कैईजे कै आखरी दम तई म्हारी आतमा बींरै सुख, बींरी बढोतरी, बींरी चढोतरी री कामना करती रैई है अर भगवान नैं इणी बात री प्रार्थना करती रैई है । क्यूं ठीक है ?" ईनक पूछ्यो ।

"हां ठीक है बेटा ।" मरियम बोली ।

ईनक फेर कैयो—"म्हारो जीवता थकां रो थैंरो तो बानैं याद कोनी, कारण, जद हूं विदेसां गयो, तो वै टाबक अणसमझ हा, अर इत्ता बरस बीत्यां पछै मनैं कियां याद राख सकता, पण फेर भी हूं बांरो बाप हूं, बै म्हारा टाबर है । जे अबार नई, तो आगै जायर बांरै मन मे इण बात रो थोबो सदैई खातर रैय सकै कै—अरे, म्हा तो म्हारै बाप री सूरत ई देखी कोनी ।—मा भी हूं जाणूं कै म्हारी सूरत अबै दरसणां लायक कोनी, पण आपरो बाप सदैई पूजण-जोग हुवै । मनैं देखर म्हारा टाबर घणाय‌त राजी हुसी ।"

"हां, ईनक । जद वै तनैं देखण नैं आसी, तो थैंनी बानैं थारी जवानी री सगळी बातां बतासी, हूं भी बतासूं कै इण गाव में थारी जोड़ रा पगा जवान मोठ-निरावळा लाधता ।" कैयर मरियम ईनक मार्थं बात रो असर देवण सारू बींरै कानी भाळी ।

ईनक विचाळै ई बात काटतो बोल्यो—"मा, टाबरां सागै थैंनी नैं ना बुलावे । हूं आ चाऊं कोनी कै थैंनी म्हारै सब नैं देखै, म्हारै इण खीण सरीर री लास अर दुःखो देखै । जे बा देखसी, तो म्हारो मुड़दो थैंरो सदैई बींरै नैणां आगो घूमतो रैसी, अर बो बींरै सुखी जीवण में दुख घोळण रो काम करसी । तूं जाणै, हूं तो थैंनी नैं सोरी-सुखी चाऊं । जे थैंनी घर म्हारा टाबर दोरा-दुखी हुवैं, तो कबर में भी म्हारी आत्मा नैं सायती मिलै कोनी अर बा ठेठ तई तड़फती-कळपती रैवै ।"

मरियम री आंख्यां में आंसू आयग्या । "ठीक है बेटा, थारी बात ठीक है । तू कैवै ज्यूं ई हूं करसूं । हूं सोचूं कै अबै थारो सनेसो पूरो हुयग्यो हुवैलो । थारो रैन निमळो है । बोलण में डील नैं ताण पड़ै ।"

ईनक सांस लेवण खातर थोड़ो थमग्यो । मरियम बींरी छाती रै हाथ फेर्यो, माथो पंपोळ्यो, पर पाणी पावण सिरी सिगी गाळ मूं पाणी ई ही, बींनै गावळ पूंछी ।

बो बोल्यो—"मा, तूं रो ना । म्हारी छाती फाटी ना, पान । मिनख रो काळजो करड़ो हुवै, बज्जर हुवै, पण मुगायां नै रोवती, बमका फाटती, पर करळावती देखर बज्जर ई मैंण बण जावै । मा, तूं रो ना, मनै मायंती सूं मरण दे । पण हां, ऐक बात तनै और कैवणी है ।"

मरियम आपरी कुरसी नैड़ी सरकाई अर बा इचरजी आंख्यां सूं, नवी बात सुणन सारू, ईनक रै सामी भाळण लागगी ।

बो बोल्यो—"म्हारै परवार में सबै ऐक जणो बाकी है, फकत ऐक ।"

मरियम धमकी । बा झट ईनक री छाती रै हाथ लगायो, नाड़ देखी, चैरो देख्यो । बोली—'ईनक, ईनक, इया थारै कांई हुयग्यो ? अबार तई' तो तूं सावळ-सावळ बातां करतो हो । हे भगवान !"

ईनक कैयो—"मा, तूं घबरा ना । हाल तई' म्हारो कांई' बिगड़्यो कोनी । म्हारा होस-हवास भी ठिकाणै सर है । तूं बिचाळै बोल ना, पैली म्हारी बात सुणलै ।"

मरियम चुप हुयगी, पण बींनै ठा पड़गी कै ईनक रो माथो फेंल हुयग्यो । बा बरावर डळकीज्योड़ै नैणां सूं ईनक सामो जोवती रैई ।

ईनक कैयो—"म्हैं ब्याव कर्‌यो, लुगाई आई, टाबर हुया, हूं हरखायो । बै सगळा कायम है, पण बां मांय सूं कोई म्हारै काम को आयो नी । हां, म्हारो ऐक टाबर और है, बीरै माथै म्हारी दीठी टिक्योड़ी है, बींसूं मिलण खातर हिरदो उतावळो करै, बींनै चूमण खातर म्हारा होठ घड़ी-घड़ी बार फड़कै ।"

डोकरी मन में तो जाणती ही कै ईनक बैक्योड़ी बातां करै, पण ऊपर सूं आ बात बिना दरसायां बोली—

"पण बेटा, हूं तो बींनै जाणूं कोनी ।"

'तूं जाणै मा, ईनक कैयो । आछी तरै जाणै । तैं मनै बींरी सरग-आतरा रा समाचार भी सुणाया । बोल, जाणै है नी ?" कैयर ईनक मणदीठ मुळक मुळक्यो ।

"अरे बेटा, तूं आ काईं बात करै ?" कैंयर मरियम दो-तीन उतावळा अर ऊंडा सास लिया ।

ईनक कैंयो—"पण अमार दुनिया नै छोडर जद हूं सरग में पूगसूं, तो म्हारो लाडलो पूत म्हारै सूं गळबाखड़ी घालर भेटण सारू अडीकतो त्यार लाधसी ।" फेर ईनक कागद री अेक पुड़िया आपरै खुंजै माय सूं काढर कैंयो—"आ अेक इसी चीज है जिण नै म्हैं इत्ता बरसा तईं म्हारै मिनखपणं बिच्चै ई बेमी साभर राखी है । सूनै टापू मे हूं मिनख सूं ढांढो बणग्यो, पण फेर भी इण पुडिया नै परमात्मा गमण दी कोनी ।" ईनक पुड़िया नै खोलण खातर बेंठ्यो हुवण लाग्यो ।

मरियम कैंयो—"ला, हूं खोल दूं, तू खेचळ ना कर ।"

ईनक कैंयो—'मरियम, आ हूं तनै देऊं कोनी । आ म्हैं इत्ता बरसा मे मिनख-जायै न दी कोनी । पण नईं अबै म्हारो आखरो वगत है, आखर तो मनै इण सूं बिछड़नो पड़सी, अर तनै ईं री भोळावण देवणी पड़सी ।"

मरियम बोली—"ईनक, अेक बात हूं तनै पैली पूछलूं, पछै सायद हूं भूल जाऊं । आजकल म्हारो सुभाव भूलणो हुयग्यो । बात चेतै को रैवै नी । बुढापो खोटो घणो, मिनख री सुरती काढलै ।"

"पूछ लै ।" ईनक धीरंसीक कैंयो ।

मरियम सकती-संकती बोली—"थारा समाचार हूं अंनी, फिलिप अर टाबरा नै पूगता तो कर देसूं, पण वै कियां मानसी कै तूं ईनक है । बै किया मानसी कै ईनक इत्ता बरसा तईं जीवतो रैंयो, अर आपरी लुगाई-टाबरां नै सनेसो भी भेज्यो नईं । बै आ भी किया मानसी कै तूं अठै आयग्यो, अेक बरस ताणी म्हारी सराय में रैंयो, जद कै थारो आपरो घर अठै है । अंनी कियां मानसी कै ईनक आयो, अर बींसूं मिल्यो कोनी । बेटा, मनै डर इण बात रो है कै मनै कूड़ी नईं घाल दै ।"

ईनक कैंयो—"थारी बात रो उथळो सुण । इण पुड़िया मे म्हारै नानड़ियै रै केसां री एक लट है, जिकी अठै सूं परदेस खातर बहीर हुवती बेळा अंनी मनै बींरै लिलाड़ माथै सूं काटर दी ही । जद तूं इण लट नै अंनी रै हाथ मे म्हारी संनाणी सारू देसी, तो बा आपेई समझ जासी कै हूं ईनक हूं ।" बो फेर बोल्यो—"पैली तो म्हारो बिचार हो कै हूं इण केसलट नै म्हारी कबर मे सागै ले जासूं, अठै बींरै भरोसै छोड़ूं ? पण अबै म्हारो मतो पलटग्यो, अर तूं लै, सांभ । सावळ जतन सूं राखे, अर म्हारै थाम्या मींच्या पछै, म्हारै मर्‌या पछै, तूं अंनी रै हाथ मे झलाय दये । इण सूं पैनी रो जीव सोरो हुसी ।"